

04-396

शं.क

ॐ नमः श्रीवज्रवाचाय ॥ ॥ रुद्रवनिदिग्ध
नामधितारुणिखिलरुद्रनिहन्ता सिद्धिर्मा
॥ ॥ अथारुद्रवनीताया नाहीनां सदा वानां म
नी ॥ कलाकमहकस्तुष्टाया मृदयूनः ॥
कलागिनीविद्याप्रयत्नमस्तु ॥ यथाविद्या
धाम्नयदा ॥ यमानुमानविद्याधनविष्णवा



सुमूक कश्चिपाद दिनक न क न रास मूलि
धिदाजी प्रथमि न जि न मा ना व रु वा ना हि क ल्य
हृष्य नी धर्मा महा म रु महा गु रु महा मा या सु न व
गु रु का मि मि र्य मा ना महा मा थ कि वि प्र ना ॥ क ला
क मा जा र्या वि श्र या सा ध क ष्ट वी स द व ग ल्य र्च र
वा क सा न ग कि न ना न ॥ व स मा न य कि ह ना न

लज्जलजानिवमहाधर्याकवीविद्याहुन्दजालीकनीधामाहर्नसुहृन्विवविद्वयाआरुनादिकंभव्याकर्वनउहृन्विव
वअनकविविधानिव॥अनकधनवधंअव्यालिकालीविशुद्धिगुणवकुनगीकिधर्मसात्यकासाम्काकमिकापधरुहृन्विव
मयंवकुवालाधिवसिधाविधवावकुर्मनविनाधपर्थकालाननासूहीषधंनकावर्धनविनउधरिदलंयविशुद्धिर्न॥शिकाधयनि
मध्वसुंसर्वरुहृन्विवनीनगी॥॥उवंमयाधरुमकस्मिन्मयधरुगवान्सर्वगधगनकायवाकिरुवकुवानाहिरुगधूविजहा
न॥आर्यानन्दप्रहृमियागिनीध्वनीवीरुनागआर्यावलाकिरुध्वनादावगीमिकाटियागिनीध्वनीमध्ववकुवानाहीमवहाक
स्मिन्मकापीरुगकुववीवध्वनाउवाच॥हुन्दजालंमयादृष्टंमहासूखपूतर्वजीवानाहीकल्यथागिनी॥पु

वा०क

कासयगुरुगवास्वामीवावाहीकनसंरुवं॥उत्पलिकनजनिर्गकावास्वालावमिष्यन॥किंकावधमहदुर्गकिंवावाणपथाजन
हुन्दियविषयसर्वप्रविष्टनारिमधुले॥वरुष्यमूर्खवायुमूर्खिवजाधपंजल॥नागमारुधुमन्धुलीनारुवसहिक्कना
न॥कुरुजानंदुवावाहीरुगलिंगमनाहुवा॥महासूखमथाभाहुंरुलिश्चजनिर्गपुनान॥स्वरावनेवास्यकंदुखसमंथाग
नेपक॥काकावधंजानमूर्खिश्चकवृधनूयमथारुवं॥पथाजनंदयमिष्यादृष्टपूजायांगेप्रसाधकं॥त्वमाधिपणकीदवीसं
सानंदवदवावकी॥मनुमालामनावर्णआकावायाधरुविरु॥अथवामूलकंवाकाकवचमके॥समन्विर्ग॥उकेकाकन
मनुस्यगवावावाहियागन॥उत्पलिवनयागिन्यानाठिकायास्वनंयुवं॥दासफनिसहस्रधूमधकावावधूमिकी॥सर्वरु
वावधूमिश्चयापकत्वंवावस्तिर्ग॥रस्मादवाहिविरुयानायकीचपनंपद॥वजादिपथमंतामज्रवजाश्चकवर्जिका॥

2

[illegible]

नारुननाहससिकहवधिवहुववहवावना।यवर्गयदिअवीअंदवधुअनगुधीजाहुंदसकअसनहसधसअनपदअ
कहुकिलसहीअदियनानदवउरुहु॥सववधावाअनाहानहुसनठिआवउसवगिहाकहाहनदसहुउ॥कवलदव
दलिहिमाहसउमथअनागहकासहाव॥हानसकवारिनिगुधअं सहावकवाजमाअधउध०००उनाहागहनसंकाव
हु॥धनविहिमायूहुहुउसकसनहुलीउ॥रुसहसंरुहु॥पू॥विगिअरुंधीकिहु॥जालरूपनहु॥नंददवाडाडा
हवचधुवहु॥पू॥विहकिरुयधवाहिविरुहु॥ ॥नवमूकथयमकाहिनवमाहुअकना॥यागिनीनामसंयूकाक
मकालचवाधयन॥॥केकस्यहुमाहास्यमकनस्यापिरुनय॥विस्लुर्लकिमहानंकलावाधुसहहुका॥ ॥आहु
ठि०००वेवाचनासह॥उधर्मधुकाऊहनुवहु॥रुमसन०००उयनवउस्वनू॥पनवसववापिनरुहविस्मउहुनवः

३

नूअ॥परुदंरुवीउउसहुदमाअनासहु॥इवविंदरुलरुद॥रुसयनवर्गहरीचधुवगुधुकिरुयधवापहु॥इविनिवि
स्म॥यहहु॥सकिरुसु॥गरुनचदकानगुगयधवदुवाहि॥वीवजयहंका॥पनचहयदिअंरुकथहवीहु॥०००सनमथ
रुनयहु॥जानरुअकखनू॥सं०००उ॥स०॥हकानगुगाड॥चवग्नहु॥मजठिअगहनहु॥अ॥वयहनउसनऊरुउं॥जाहन
दककर्मवि॥स॥ववउवीउ॥अ॥आनकनहु॥लय॥हु॥किरुवनजानसदाउयमहु॥अ॥गिअवीउरिनिमनहु॥उं॥सं
सनरुवामहु॥सहाव॥सववाहु॥सवगलगसस॥स॥धिरुहमसहाहु॥दिम॥रिनिमनगदिअहु॥अरुं॥०॥वधिनूअसकउद
व॥ध॥किम॥जा०००॥डावहु॥क॥अ॥सनपू॥अ॥गु॥हु॥ध॥रुहकिनि॥ह॥का॥रु॥न॥द०००॥वर्गसपदिअ॥इविनिनका॥सयल
सनूअ॥न०००॥अ॥अ॥न॥हु॥मनह॥द०॥स॥रु॥कान॥ध॥हु॥हु॥अ॥ना॥ग॥हि॥ग॥हि॥अ॥हु॥०००॥सनमायाहु॥काहु॥स॥हु॥द॥रु॥द॥वी

वा०क

[illegible]

九

ऊवी ॥ १ ॥ अत्र नृप नल द्युदव सून हसदा च ॥ १ ॥ अर्वनां मंदय प ह द ॥ २ ॥ अवन विंद अ स रु क र्म स नू अ व का ॥ ॥ ३ ॥ निधी व ड व
 ना हि क ल्प म हा क रु ना ऊ व ड वा ना ही ना म सं यू का ल्प लि ॥ ४ ॥ प थ मं ४ प ट ल ॥ ॥ ५ ॥ हा ह र ग वा न व ड वा ना ही या ग क ल्प ॥ क नू ध
 का म ना रु क ल्प स्य व च वि स्त ना ॥ यं रु च कं प व आ मि ल्प त्म रुं ल द्यु वि स्त नं ॥ लि ख रु था द हा ल ख णु स म स्ता ल्प द वि स्त न ॥ द्वा द सी प
 ट रु व द्वा वी ष णि धा ने १ स ॥ ॥ ६ ॥ लि र्कं आ न स्ये का रु नं य सु द या क म ना य नि स्तू टं ॥ च रु विं ध क रं न रुं व क र्ति का यां रु स र्व न ॥ ७ ॥
 रु ल्प य य न ना ठी स रु आ नि द्वि स्य कं ॥ ८ ॥ के क स्य य नि वा नं व स व थ स व रु कं ॥ स र्व यां अ धि कं नू नं व स व दं रु स नि र्कं ॥ ९ ॥ ग रु स
 स मू च न रुं क र्म कं रु य थ नू चि ॥ वि स्त न वा ह नं स र्व ना दि का द य का ल रु ॥ १० ॥ लि र्कं वि ष यं रु मा न य ल्प क र्म का ल रु ॥ ११ ॥
 वा ट य न ना ना म व थं क र्पा रु चि रु कं ॥ १२ ॥ रु वा य रु मा न्य व थ कि यु धि थ का न य नू ॥ वा क्स्व थ स र्व रु थ पा न मा क र्प नं रु व य नं

कायवाचकथं विरुक्तं कुर्यात्कुलं कर्तुं॥ अन्यकर्मयथान्यायं॥ मय्याहं नापि च॥ अथवा यादृशीवीजस्तु कपमानं दुकर्म कं॥
 कालस्तस्य महात्मानो उत्पत्त्या रुगमकनादिनी ययत्तुं प्रवक्ष्यामि वावाही कल्याणं कुर्यात्॥ अथुमिच्छामि हं गेव नृत्तयि यत्तुल
 कर्तुं॥ उत्पन्नैव कथं दव सर्वकाये कथा गिनी॥ कथं याद्याग्निमापय पृथिव्या काष्ठमवच॥ पंचकार्त्त कथं दव पृथिव्या कुर्यात्॥
 पुला॥ कथं शिकार्यमधिष्ठानं वाक्चकार्यं कुर्यात्॥ कथं नृदवनी नृपं कथय स्वदवनापला॥ चतुस्तय कथं दव कथं पञ्चस्त
 रावकं॥ कथं नृसनी च स्वराव रुनाजी नृपं कथं कुर्यात्॥ कर्त्तनादिप्रमानस्य धनी वपि धुन कथं॥ समयसं कर्त्तुं मस्य कथय स्वम
 मपुला॥ कर्त्तपी भदि सं कर्त्तुं वाक्चक्ष्मात्मकमवच॥ कथं रुसादिना रुस्य कथं निमिरु दर्शनं॥ कथं नृद्वादग कर्म मज्जापं कथं रुव
 क॥ अक्षमाला कथं पकि कर्त्तुं जापस्य लक्ष्मी॥ कर्त्तमधुलमावरु दव नाका नयान गुरा॥ सिद्धि मर्त्तुं कथं दव कोमारी नृत्तयं कथं॥

ॐ

कर्त्तदिवसन कर्त्तुं अलिवलिकथं पुला॥ पञ्चअमृतादि कथं दव पंचां कर्त्तुं वरु वं॥ कथय स्वमधुलाल रत्नं रुपा नं कथं रुव न
 कथं नृमि सं॥ ध्वं नृकावक कथं रुव नृ॥ कर्त्तवा नाहिन रुस्य या गिनी नृत्तु कथं रुव नृ॥ आचार्य कर्त्तुं कर्त्तुं कथं गिनी च संगुहं
 अलीय कपमान च चतुर्थं कथं रुव नृ॥ यगयूग कथं सिद्धि वर्त्तुं वाचिक कथं रुव नृ॥ कर्त्तवा नाहिन रुस्य या गिनी नृत्तु कथं रुव नृ॥
 कथं मृत्तु प्रमान च कर्त्तुं पात्रमिका कथं॥ पकि छाहाममागम्य सिद्धि मर्त्तुं कथं रुव नृ॥ नसायन कथं दव मय्यान कथं रुव नृ॥ मर्त्तु
 दयं कथं दव मन्त्रा धान कथं रुव नृ॥ निगुहं च कथं दव अनृगुहं च कथं रुव नृ॥ कल्याण च कथं रुग वन धुन ना कनूध कथं॥ कथं धुन
 स्वरावर्त्तुं कनूध कथं स्वरावर्त्तुं देवि नृपं कथं नाम वावाही लक्ष्मी वलि॥ सर्वधर्म पत्रिज्ञानं रुवा नां कथं रुपला॥ ॥ रुग वा
 नाह॥ साधु वीच वीच रुवा नाही यत्तु कथं॥ दिनी ययत्तुं प्रवक्ष्यामि लाकानां हि न काम्यमा॥ ॥ यवज हं नाहु वाहु स रु

बा०क

[illegible]

यहुं मङ्गनाहुं निनूअ कगहहुं अऊअ कर्मदहहुं साउ वअआलअहुं असिअयिमऊ महुनाउरुङ्गनाहुं निनूअ पाथिअ
 वीआहुं आनऊ चहुं निकनहमऊ नदंनहुं निनेउडहुं असिअआ नवअसंजावहुं वीआधममहुं कानआनिरुनयउअं नि
 रुगहिअहुं धूहुं निमहुं सऊ नहुं रुअहुं जीनददाआ यदंनहुं अउसहुं अऊमाहुं निनहुं यदहुं अऊअ कनसदाहुं ॥ ८
 दंकावीआहुं रुहुं अनिनिहि रिन्नसरुगदहुं नाह ॥ १ ॥ वअदिसयउमरु ॥ २ ॥ वउरुवरुयमाहुं ससु ॥ ॥ ३ ॥ दमाहएगवान
 थागीयूगनूयलिखरावक॥ ४ ॥ नरुसात्यहिं वकासिउत्यलिकमरावतां ॥ ५ ॥ वकवरुहुं सुसर्वश्वानाहीकर्मशागक॥ ६ ॥ वकचक
 ऊयंनवानाहीयी ० मलकं ॥ ७ ॥ वकआथानथाह कानानाकर्मस्वरावक॥ ८ ॥ अहुं आथेजलायूथसंखदापपाइका॥ ९ ॥ सऊं चम
 मूर्नचसूकसानादिअहुं आ ॥ १० ॥ रुसाथगवमही चंशखनमानूषऊवायूआ॥ ११ ॥ किमिकीगापठं ग ॥ १२ ॥ मसकादिथेखदजा॥ १३ ॥ दवन

का० क

वकसत्तानां अकवारवमवच॥ अगदीयपादकासत्तापथमंकलिकादयः॥ पूर्ववेदहायवगमदानीउरुवकून्मवच॥ महाशरगत
संवर्षधन्वायउविवकिन॥ उयदीयमनूयानां निर्विकल्पाविवर्जिता॥ अमूदीयवजानस्य कर्मरुमिपधस्यन॥ सकुनदुस्तु
कर्ममधमाधममूरुमा॥ पूर्वजन्मविपाकाउदृष्टरुमर्वजंउय॥ मदमात्सर्गदृष्टानां॥ ० कर्माणिमानिन॥ नागइखादिमा
हानां अवाधिरुपीठिता॥ अमूदीयववअर्थमधदसापययन॥ मृदुमधनीकुडियाऊन्मपूर्वकूलार्थमपदितां॥ मनूयजा
नापथमस्यसत्तुलंगृहानिष्कान्दिकीयस्यलार्ग॥ कूलार्थवसासाधनंरुकीयं॥ उकारमानसंलातावउर्थउदाहर्ग॥ सायापम
समाधिरनपुजानेनिमानूया॥ अनादिकालिककृष्णवासनाचपवलीकृता॥ रुतपूवाकर्मकर्मयुत्यलिअर्गवक॥ साम
गीनरुगगावकसफाहमकवारुस्तिरुक्षअकवारवसत्तस्यदधकनगमिच॥ कथंविक्कर्मसे॥ नवप्रतिवपुजायन॥ मोतापि

१

कादिसंयागादेकथरुवजन्मिन॥ अकिनिर्णमाननदसुखमार्गपवधर्ग॥ भीष्टुनवधमागयमूदुरुकनमोर्क॥ दासफ
मिसुरुचंनतीसंवाअरुन॥ पवमाननदसंयाफमालिकालिद्वीकर्म॥ शुक्रअभनिरुथामो॥ अविन्दुनूयननिष्ठनिपु
थमंकललाकालमवर्दंवादिनीयकं॥ रुकीयंयसिगाजार्गवउर्थयनमवच॥ वायूनापुर्णमानस्यमत्स्याकोनवकुरुवगु॥ पी
चमासगर्गवीजंपरुसु॥ कपुजायन॥ कसेनामनवाविर्गसफमासनजायन॥ उडियानिचनूयानिवाऊनान्यसुमासक॥
संपूर्णनवमासनवगनादसमासक॥ कललादकायनूयनमूर्वदंनत्तसंरुव॥ पधीअमिनारुनाथस्यघनमायसिद्धय॥
अभावावेनाचनस्यापिपंचाकारुदधयन॥ अकायमूवकस्यामिनारुगुक्कनूयिन॥ पिणुमार्गुनत्तस्यसमिर्गवेना
वनस्तिर्ग॥ इनासोयानिम॥ अगुवामददिर्गयासुथ॥ वामशुकविजानीयाददि॥ एवकामवच॥ रुथामीलनमेकत्वंधर्मध

वा०क

सुखरावक॥ कर्मवीज वधमरुपाय वायवायनिवर्त्यवधमोदयानिधानानिमित्तमूर्ध्वरुवागिनिश्चितं उरुयाम्मधगर्भवीजं
नयैसकंसदाहवर्तन॥ अथाहु॥ ऐतिकाहूयाकजाधुश्रमाहिकाहूयमांसश्चकश्चमाहजाहू॥ निकथनवंपटकोमिकोपि
धुंवरुमलववायथे॥ नृपवदनासंस्तुसंस्तुनविस्तनमवव॥ यंववृद्धस्यरावकुस्काध्याहिविनिश्चिता॥ जन्मात्योहिकमंस्तु
वासम्यक्तं वृद्धमापूयाहू॥ नृत्तं धयविस्तनं कथिकं कलवादिना॥ अनू संस्तु श्रुतस्येवउत्पत्तिकिलवादिना॥ साधस्यनाममे
दाययश्चामरुं नमदधशाययवहुं हन॥ हुं आसन् अयहकिअधमू॥ रुगवउयहिकुअजअनकहुं॥ रुवत्ताहुवनसंक॥ रुम
कु॥ अजअजअजअथ॥ नहुं सहुं अहुं निमदिविस्तदा॥ ययहुं सहुं अहुं अलआनहुं सहुं अहुं नवकवहुं चमकुगहुं
युअजहुं अहुं अहुं यवअसंदता॥ समहुं अहुं अहुं नू सहा॥ यवनदकाहुं हुं निनिवानसिनसिअ॥ विस्तहमेकहुं जान

८

सन् अ॥ अविजउकुलअनकु॥ यवनपहुं जाव॥ सकृजीनहुं दिहुं गुचवघहुं किहुं जवीअजहदहुं ननू अवाअ॥ यहुं कावउ
हहिकुअहन्॥ गुनवासहुं जहुं ल॥ रुमकाकिनिवानजअ॥ निमहसिवाहननू अ॥ असदामसगी॥ अहन्हुं॥ रुमहवहुं स
जवलअ॥ रुगहुं अहुं अहुं वहुं उहादमअ॥ निमकाहुवनसंकिहुं अहुं अहुं॥ पहं॥ अहुं अहुं सहुं दहुं लघु॥ माकनू अहुं अहुं
नहुं विस्तहुं सववावकुसं रुमहाअ॥ वमिआनूधमाअधमू॥ निमअ॥ यवनहका॥ हुं निजूरुदनुहुं जलहासनमहुं उहुं
सुक्तीवहाहुं पुनायवनदहुं॥ अहुं अहुं नहुं अहुं अहुं॥ ययहुं अहुं अहुं अहुं अहुं॥ सववाकिनिवानसिनसिअहुं
अहुं वनिमयलहुं॥ नावहुं नू अ॥ मालाहुं महुं रुहुं नू अ॥ सववाअहुं अहुं अहुं॥ कचनिनू अ॥ मउदअ॥ नू अ॥ यकहुं दअ॥ महुं
रुमसिअ॥ असहुं नू अ॥ उहुं सहावहुं॥ रुमहुं अहुं अहुं॥ अयानिनिवाधसिनसहुं अहुं अहुं॥ गिअ॥ ननू अ॥ निकनामिस्तहावहुं जान॥ रिनि

वा०क

वमपहं ॐ श्रीं ॐ श्रीं नमः ॐ श्रीं का ॐ मज्झिमास्यवनहं ॐ श्रीं कुआसयल ॐ महं ॐ सहं ॐ श्रीं धीवदकाश्रयवनहं ॐ श्रीं हं
नृमर्कवाश्रुअश्रुनिनायावट् ॐ उ ॐ वी ॐ यिरथ ॐ श्रीं दमिऊसुसाहकनूअअकहिविदअकासुवतविंव ॐ अउरसूमास
वीअअनककुहोमच्चल ॐ कच्च ॐ अथकागमसहा ॥ ननपहअरुअविद ॐ अकानअसहन ॐ किहाक ॥ ॥ ॐ निधीव
ऊवावाहिकल्पमहाकलुनाऊयकुचकात्यलिद्धिनीय ४ पटल ४ ॥ २ ॥ ॐ ह्यारुहगवानयागीमकुसिद्धिपयच्छकशासकुसवानया
गात्मावानोहीसमयलि ४ ४ ॥ हकीयवकुसामर्थकर्मकृथायथमिर्कमाहिकमाययासर्वकर्मकालयथागिनी ॥ अथगस्यप
वअमिउत्यन्नकमहावनांयनविस्तरमावनआसमकुमवाप्रयारु ॥ यूननूलायमवजीअन्यवकुसयागवान ॥ गभमालिग
वावाअपनमाकनकविदु ४ ॥ ॥ कसका ॐ रिनिहाऊहय ॐ अग्निपवनवीजमहं ॐ सहं नाअ ॥ कस्माकिनिर्वीअ ॐ श्रीं नमः

2

[illegible]

वर्त्ताय नयागी मरुत सर्वसिद्धिं समासकभाकायमाप्रियमधुलंधर्मसंहागविग्रहदहमधुलमित्थकं संवाधिकमसाधनं। उत्पत्तिः
मृदु मध्यामी मधुली वस्त्रावना। अविमर्शमकिताकारं मधुली विलुमागुता। अकिताको वयागनउत्पन्नकुमरावनी। शेषधुक्तः
मयंकुटं पाणिनामाधुलयेता॥ कनमधुलिदलाकालं वावाही मधुलाधियभाजं आ॥ ४६ ॥ किमरुनकायवाकिरुमधुली। स्वः
र्जमर्षपागालमकमूर्तिरुवत्कधम॥ लिदलाकावयागनलिदलं मरुमृदुवक॥ सर्ववीचसमायागलकालमूर्खी मरुसस्त्रवै
चत्वावाधिरुवस्त्रध्वषद्विषयात्मकमेथा॥ दवीवावाही हनरु कस्यरुदरु कल्येयक॥ कथनामृदि कचकं खमिवधुन्यकारुथ
॥ नेवात्मा कथनाविधुमूयायक नूधवल॥ युगनद्धमहाकागमधुलयागमरुसंविक्तेविकल्पयागपिकदाविन्त्यमकल्यकं
सर्वाकावतलं सर्वनिनाकावसुखदियं। हावरावात्मकं चैवरावकुत्तानिषादिक॥ अनावापमनाहागनिषादिकमहत्सुखं। म

कुं पायसमत्यन्नमनूयन्नस्त्रावक॥ अरुजत्वा सर्ववयमजानकमपहकं निनूयत्वादकूटस्यं निर्यं कदविकाचक॥ नचाहावा
यनूयं दासास्त्रापादसंरुवाक॥ मरुजं सर्वधर्मानां निजाकंदस्त्रयक॥ स्वाधिष्ठानं स्वयं रुत्वादनाहकमनासकभा अनूयादन
सावध। हावनापिकथविधा। पेह्वेवहि रुवश्चानं शुन्यतापकिवधिका। सर्वधर्मपनिज्ञानं हावनानेवरावनी। महासुखादिः
संवाधिमहामृदापनाकथ। धर्मकत्वावकावायकत्वाददं पदधिर्कं। मरुनावपद। हानस्त्रुटा रुवगितान्यथा। यागिनीं सर्ववृद्धा
नां जवंकावपकिष्ठिकं। कायवाकिरुसंकर्म सर्वाकावेकयागिनी। वावाही सुखवर्नवाधियवायमनिदधीर्न। नरुस्यं सर्ववृद्धा
मीलनं सखनं वनं। स्वाधिष्ठानकमाक्षेप॥ मरुनूको हलारु॥ ७७ ॥ हाह रुगवाचडी रुमीदादहारि॥ ४७ ॥ अरुनयूचपीथदिही
कनपनरुत्वग॥ सत्वमूयअरुसर्वमसत्वस्यादिदं रुव॥ नरुनहं नदाहत्वामायास्त्रप्रकथगक॥ ७८ ॥ दयगमहाहागं कर्मानाकय

दा०क

[illegible]

११

[illegible]

दा०क

जानू॥ ॥ॐ किं धीवकुवावाहिकल्यमहाकुरुनाऊवावाहीसमय४चकरहीय४पटल४॥ ३ ॥ॐ ह्यारुगवां वंजीसर्वरुकर
 यंकन४॥ मरुसकावनूपात्माधृष्टिसंहनकावक४॥ वकुसंस्कावनूपात्मावावाहीकल्यरुषध४॥ शुन्यताकनूधत्मानंमानंनचमा
 नर्ध॥ ॥कमकुव४॥ नयसन॥ अगतनजावनिधम्मकिअआस्मविनिमन्द४॥ ॥कस्यवि। नपवल॥ॐ सनकुउअइथिनउइउअउन्न॥
 कआनूवाअनाकवहहस्म। चउलिअअपू॥ॐ अउ। धाअनूवा॥ॐ अनंगु। नविर्भुकिनिवाधउसिअअ॥ सकल॥ॐ इ॥ॐ निहददअ
 उ। धमका॥ॐ उ॥ॐ उम॥ॐ अउ। इवसग्न। संहनिमरुपअउरिनिरुनिअहं। इययउवाहनरकु। क। थ। संहमरुइवनिधूमननूअ
 ॥हमकारिनिरुधअ॥ॐ खदहउजायविनस्म। वनअअ॥ॐ खनू॥ॐ नद॥ॐ उ॥ॐ उमस्मसहाव॥ॐ अन्न। नअअ॥ॐ यधु॥ॐ धीवीअ॥ॐ गुध
 ह॥ॐ मका। सआनूसअ॥ॐ ना॥ॐ निसंद॥ॐ चनस॥ॐ अउ। पमगुमंगुपयअ॥ॐ अग॥ॐ नस्म। सआनूसव॥ॐ अउ। सवनूअ॥ॐ यद॥ॐ

१२

अयनअअउवादपद्यामिअजान॥ नआनूमंत॥ॐ आअअ॥ॐ वा॥ॐ नकय॥ॐ काविकिलउरुदि। पहीर॥ॐ वी। असहमधून॥ॐ
 सअवना॥ अयन॥ॐ अउ॥॥ इवधाविंदपआन॥ॐ॥ पद॥ॐ अ॥ॐ सनउमूअणमधुअउ। सरुहा। धंमूम॥ॐ सनू। सअनूसधम्मअउ
 न॥ॐ निगउ। इमंगुवासरु। ग॥ॐ अउ। अ॥ॐ कि। कमकु॥ॐ अउ। वी। अदनरा॥ॐ नरु। न॥ॐ सजा॥ॐ निम्मसलाअमनंगु। कासकीक
 मंससा नय॥ॐ अ॥ॐ वअधलनूसरुह॥ॐ सरुद॥ॐ निमयाव॥ॐ सवी। अ॥ॐ उलाअसरुह॥ॐ कंमू। अ॥ॐ सधवउय॥ॐ मंगु। वच्चनारु॥ॐ
 अउअरि॥ॐ इ॥ॐ उ॥ॐ उ॥ॐ इ॥ॐ अउ। क॥ॐ म॥ॐ क॥ॐ म॥ॐ ॥ॐ॥ दमाह॥ॐ गवानयागसिद्धिपराकन४॥ चरुधर्मपरावकुषयच
 कउयाग॥ॐ व॥ॐ व॥ॐ वावाहीथान्यथाकायवाकिलरुह॥ॐ नवान॥ॐ अनूलासविलासंनरु॥ॐ कयंकचवाधिरि४॥ॐ दमूयायरागंगुपह
 रागअकथ॥ॐ अ॥ॐ ह॥॥ अथखलूम॥ॐ प्रवअमिचरु॥ॐ र॥ॐ खरावेर४॥ॐ यरु॥ॐ इ॥ॐ सुसर्वातिगरु॥ॐ र॥ॐ खरावर४॥ॐ पु॥ॐ धीवीगरुवस्तुनि॥

अग्निना सर्वपापं नष्टं आधनद्वीकृत्वा यन्नास ह्यत्रिंशत् आकाशं धुन्यदहं नन सर्वं जायते यत्तु कस्तुतवत्वा विनसर्वं मयि
 कुरु ॥ हृद्यं गुल्ललगा कृत्वा जायते विस्मृतमात्रकं ॥ प्रभ्रिकाश्च यस्मात् विस्मृतं स हवर्तुं न ॥ नन सर्वं पिधुम्या कृत्वा नीया हवधीधना ॥ म
 नसा दिष्टं सत्वात् वायुसर्वं चाल्यं न ॥ न ॥ अग्निना कृत्वा जगि आर्पं भुक्त्वा सदा हवर्तुं ॥ सर्वं संधि संधुं गतानि ॥ अथूरा हवर्तुं ॥ प
 धिवीमात्रकाधिन्यस्ति तादहादिमात्रकं ॥ जायते च मृगयते च वत्वा विह्वलं सर्वं सदा दवा मृगयते च मृगयते च ना विना ह्वलं जायते ॥ दवा ला कर्ष
 लादि सर्वं निष्ठुं कुरु मिर्जं च कुरु कपर्वं ॥ अथ सर्वं अस्तु यस्मै मता ॥ पादवायुसमा दह्य अग्निं जीवि कस्तुतं ॥ अमृतं स्वराव आपस्य पृ
 धिवी कुरु मात्रका नूपवदना संस्तु सस्त्वा विस्मृतं मवच ॥ समता दर्शय वक्ष्यं कुरु नान्य न मवच ॥ न कुरु निष्ठुं सदा दवा विस्मृतं पत्र म
 ध्वनं कस्माच्च वलं न ह्वलं न आकाश पत्र दवा शवे नाचन नत्वं संस्तु वामिना ला माया काय नवच ॥ पत्र काने कर्षं वाधि विषया थ प्रहिम्

काशं नृपश दत्त भगवत् सस्यर्धधर्म मवच ॥ उता विभुधि माख्या काधु नस्तु दह्यं ता ॥ उक्तं वांस्तु नृपत्वा क्रावयत्यनमा कः
 न ॥ वृद्धत्वा रुल हं तुत्वा च कुरु नादि कुरु तावय ॥ वक्षु निद्रिय विस्मृतं विरु वक्षु विकृ विर्गं ॥ नृय स्वराव विस्मृतं अर्थ परा स्व न पदं हव
 कुरु विस्मृतं ॥ अथ हृद्यं अतुलं रुस्वराव ॥ अत्र विस्मृतं न गन्धु विभुधि सुथ ता स्मृता ॥ न सक्ति का वि ॥ अधिवा विस्मृतं पत्र मा
 र्थक ॥ कायस्यर्ध विस्मृतं माया त्पन्न स्वराव ॥ मना धर्म मना विस्मृतं ददयति विभुधि ता ॥ अथ कुरु निविस्मृतं आलयं तु कथं ग
 ता ॥ वक्षु वाना कास मा धिस्मृतं पत्रा स्व न पद मा प्रया ॥ विषया विषया गन निर्विकल्प पद स्मृतं ॥ विषय विभुधि वाध्या सर्व का
 नव नस्ति निश्वा वृद्ध धर्म सुथा सीध उका पि कल्प ना कुर्यं ॥ निमनर्ध नि कर्त्तुं काय निवि मा कुरु ॥ निमृख ॥ कुरु व ॥ निदव ता कुरु
 धा कुरु कुरु नृप क ॥ निमरु ॥ निमार्गं तु निमि मार्गं तु दगिता ॥ निमयः ॥ कुरु यः कल्पानं काय वा विरु मवच ॥ पत्रा या अ उपा या अ

आर्गनस्यरुणीयकं विगुर्कचयथादृष्टं धर्मादयास्वरावकशा विगुयान्पनंरुथा रानरुयाधर्मसुत्रपिध ४१ रुयनाडीस्वपूपात्रवाः
 कार्यनववस्तु ४॥ वाक्कालोकिकाधर्मास्यनचदवताधिकं वाक्कार्यनसंदिखायागीवद्वत्त्वमामह ॥ धर्मधारास्वरावकुद
 वगालीवर्नप्रति ॥ सर्वकावस्वपूपात्रादवतीपत्रिकलियतं ॥ आदिदवतानूपैशुवकुसत्वववस्तिरु ४॥ पी० कंशुसंकनयागि
 नीयागमलकं ॥ कथद्वयसमायागंस्त्रात्रयिस्त्रागुदवता ४॥ अर्धसंख्यादवतास्त्रात्रयिस्त्रागुदवता ४॥ अर्धसंख्यामधुलकल्यथ ॥ अविस्त्रीदवतायागमविन्
 वद्वनाठकं ॥ श्रीवानाहीचसमायागंश्रिगिनीगननूपक ४॥ कथानरिन्ननूपत्वंरावनाकथिनामया ॥ सर्वमद्वयनीपायग्राहकवर्जितं
 स्त्रुलहादमितिशाकंशुभं विरामयंरुवत ॥ विरुयात्रीरुनंरुत्वंरुत्यदंपत्रिकीर्तिर्न ॥ ७७ दंडपायरागंशुपुष्पागागीशुकथारु ॥ अ
 थवाक्कनचकंकाअरुनाकत्रिंमक ४॥ ॥ गिमला ७७ सु ७७ जअनूअ ॥ उपकर्मविससह ॥ सरुचका ॥ दयकनो ७७ नीमंशुनजानूकं

मसुहाउ ॥ मसुदासकुम ७७ मंरु ॥ कनूसरागसीरुउकअदिअस ॥ अगम ७७ सिमरुपउयानूसय ॥ सअससिच ७७ मरु ॥ सवन ७७ न
 अ ॥ सनसरा ७७ व ७७ मंरुअकनसनीउन ॥ स ७७ मरु ७७ ७७ कृद्वक् ॥ वा ७७ नमंशुमनउ ७७ अंनिसहाउ ॥ ॥ ७७ कित्रीवकुवावा
 हीकल्यमहाकननाऊ ॥ श्रुष्टिकात्रकयागिनीचकचरुथपटल ४॥ ७७ एहारगवानुगुनू ४७ पक्षासोप्यकदायके ४॥ अद्वयाकावधर्मास्मा
 दयासस्वपूसंगहं ॥ अस्त्रानपदाव ४॥ सर्वभावकायाश्रुनीर्थिका ४॥ कर्षोविह्वनलातायदहायित्वा ७७ मंनयं ॥ ॥ हमतन ७७ मंरु
 विसह ७७ अस्मलमूर्ते ॥ जाल ७७ ॥ कजाम ७७ मंरुपठामन ७७ विउजालहमृदियडुक ७७ हविस्मउ ॥ पिग्घअलाक्तामार्मंशुवक्त्रविजानू ॥
 वक्त्रसचनउ ७७ मंरुपउक ७७ हविजान ॥ वजाअआहनमनाप्यानविस्मउलअर्धमिल ७७ रुपउयानुनविजान ॥ विलिजमंशुसचजान
 विस्मउ ॥ हमकहिनिरुधिअर्ध ॥ सद्विसअउसदह ॥ सचजानहिनि ७७ विजान ॥ अंमरुपअसकुकाअध ७७ मिस्मउ ॥ सरुहमचद

वा० क

वृक्षकंदु॥ ॥००॥ ह्यारुहगवानस्वामिवावाहीसखनंदन। बालककालयागात्माविषयद्वियादिमानक॥ यथासुसत्त्वानामृत्युहिवि
षयीवृक्षाशसवभाषमनआरुताखरुन्दविंदमूअउमधु००॥ अतिनिमनिमहं। वकुसलुगु००॥ ००॥ अ००॥ खरिनिनिनरिनिमनूरिनिनिकः
मरुताज। पुआ०॥ ००॥ समेअ०॥ अधरुसहअरु०॥ नियदिअसिद्ध००॥ मरुपउसअकाअनूस०॥ उद्धरिनिपउगंरिनिपउहरिनिपउ। का
दहनउअरुन००॥ रुमधिववादकी। पववस्मनउलुवीआ०॥ सिनहलगजउ। मसमरुसअरुहसदिसहावदा००॥ अ०॥ दस्मउ। मरुपउ
००॥ सउरुमअनिअ०॥ ॥ अ०॥ अ०॥ र०॥ स०॥ प०॥ व०॥ अ०॥ मि०॥ च०॥ द०॥ स०॥ र्थ०॥ प०॥ रु०॥ द०॥ न०॥ ॥ वा०॥ म०॥ द०॥ कि०॥ न०॥ यो०॥ ग०॥ न०॥ व०॥ रु०॥ न०॥ च०॥ य०॥ थ०॥ क०॥ म०॥ क०॥ अ०॥ दा०॥ न०॥ य०॥ वा०॥ म०॥ न०॥ प०॥ वृ०॥
रु०॥ ना०॥ रि०॥ म०॥ धु०॥ ल०॥ ना०॥ रि०॥ का०॥ ध०॥ म०॥ र्खी०॥ व०॥ लु०॥ आ०॥ लि०॥ व०॥ लु०॥ स०॥ मा०॥ वृ०॥ ना०॥ ना०॥ रु०॥ ना०॥ न०॥ य०॥ स०॥ थ०॥ न०॥ प०॥ वृ०॥ रु०॥ कं०॥ द०॥ हा०॥ रु०॥ ना०॥ दि०॥ का०॥ र्द्ध०॥ म०॥ र्खी०॥ स०॥ र्थ०॥ का०॥ लि०॥ अ०॥ र्क
सदावहा। वा०॥ म०॥ ना०॥ ती०॥ प०॥ व०॥ म०॥ ध्वा०॥ स०॥ या०॥ नि०॥ का०॥ ध०॥ प०॥ ध०॥ कि०॥ ना०॥ सा०॥ र्धं०॥ ध०॥ यं०॥ द्वा०॥ नं०॥ ध०॥ यं०॥ ना०॥ ती०॥ प०॥ मा०॥ न०॥ रु०॥ न०॥ व०॥ न०॥ द०॥ य०॥ मा०॥ न०॥ य०॥ वा०॥ व०॥ द०॥ धु०॥ म०॥ या०॥ दि०॥ न०॥ रि०॥

१७

मसमयमानव्यावरुह्यादयारुवन्॥ अहर्निर्हमहावापुं प्रहवायामउच्यन्वचुर्यामदिनं विद्याचुर्यामरुथानिभमसंकाकयाग
वायास्यनहावाकं धाउम॥ अ०॥ र्द्ध०॥ याम०॥ र्म०॥ वा०॥ ना०॥ चो०॥ सि०॥ का०॥ र्ध०॥ ध०॥ य०॥ स०॥ दा०॥ प०॥ रि०॥ प०॥ द०॥ स०॥ मा०॥ न०॥ य०॥ सी०॥ ता०॥ वा०॥ य०॥ दि०॥ न०॥ र्थ०॥ ॥ पा०॥ वृ०॥ द०॥ ह०॥ रि०॥ म
र्य०॥ थ०॥ या०॥ व०॥ लु०॥ च०॥ द०॥ शी०॥ रि०॥ थि०॥ श०॥ ना०॥ ती०॥ द्वा०॥ रि०॥ म०॥ र्म०॥ वि०॥ द्या०॥ द०॥ हा०॥ वा०॥ रु०॥ न०॥ ना०॥ ठि०॥ का०॥ ॥ प०॥ ह०॥ न०॥ स०॥ च०॥ रु०॥ र्थ०॥ ॥ म०॥ ना०॥ ती०॥ घ०॥ टी०॥ कि०॥ वा०॥ च०॥ न०॥ ॥ च०॥ रु०॥ र्थ०॥ म०॥ दि
नं०॥ वि०॥ द्या०॥ च०॥ रु०॥ ॥ प०॥ छि०॥ प०॥ मा०॥ ध०॥ रु०॥ द०॥ म०॥ र्द्ध०॥ ना०॥ ठि०॥ रु०॥ प०॥ र्द्ध०॥ सा०॥ मा०॥ न्यं०॥ रु०॥ ॥ रि०॥ म्म०॥ रु०॥ ॥ वा०॥ थ०॥ र्ज०॥ नां०॥ ग०॥ रु०॥ थ०॥ ॥ म०॥ ना०॥ स०॥ या०॥ प०॥ वि०॥ की०॥ रि०॥ ना०॥ ॥ प०॥ रि०॥ ॥
स्वा०॥ र्धे०॥ र्धि०॥ दू०॥ पा०॥ र्धे०॥ वा०॥ य०॥ या०॥ ग०॥ वि०॥ च०॥ क०॥ न०॥ ॥ पा०॥ ॥ धो०॥ य०॥ च०॥ हा०॥ रु०॥ प०॥ रि०॥ ॥ स्वा०॥ र्धे०॥ रि०॥ रि०॥ म्म०॥ रु०॥ द०॥ सं०॥ रु०॥ रु०॥ ॥ उ०॥ रु०॥ ना०॥ य०॥ न०॥ काल०॥ स्य०॥ द०॥ ॥ पु०॥ थ०॥ म०॥ वा०॥ स०॥ न०॥ द०॥
रि०॥ म्म०॥ य०॥ न०॥ काल०॥ स्य०॥ नि०॥ सा०॥ या०॥ र्थ०॥ क०॥ थ०॥ रु०॥ व०॥ न०॥ ॥ द०॥ ॥ छे०॥ द०॥ धि०॥ रु०॥ थ०॥ र्ध०॥ द्वि०॥ या०॥ नि०॥ या०॥ रु०॥ क०॥ ल०॥ रु०॥ द०॥ रु०॥ ॥ स्वा०॥ र्धे०॥ स०॥ पा०॥ द०॥ न०॥ र्द्धे०॥ प०॥ रि०॥ सं०॥ क०॥ म०॥ न०॥ स्य०॥ वृ०॥ द्वि
नि०॥ का०॥ सो०॥ ॥ म०॥ स०॥ गा०॥ स०॥ न०॥ च०॥ को०॥ पा०॥ द०॥ प०॥ उ०॥ ग०॥ च०॥ रु०॥ र्ध०॥ म०॥ न०॥ वा०॥ न०॥ दि०॥ न०॥ ॥ अ०॥ र्द्ध०॥ याम०॥ र्म०॥ वा०॥ न०॥ प०॥ वि०॥ पा०॥ नि०॥ वि०॥ प०॥ र्थ०॥ या०॥ रु०॥ ॥ क०॥ ल०॥ हा०॥ दि०॥ रु०॥ व०॥ न०॥ न०॥ म०॥

दा०क

[illegible]

रुनंजावदव। पाष्मासमसमस्तानि यन। गिनः पश्चिद्युग्मं दवाभमासास्तु हानि। एषास्तिथिदिशिषुगुणद्विन्दवाजीविरुग्म। शिष्टं चक्रम
लिख्यसकृदि। अहः। अयुषः ४ पादावायाश्च विना लिख्यं कुमालिखन्। पक्षमहपक्षविंशत्यावकनालपूर्वाहना॥ नाका ४ पाद
हसं संख्याया ४ रक्षासाधनमयुक्तं। षट्सफाष्टनवाहनियदिवाह्यनिलकागुणपाफचतुर्विंशत्यनेव हन्यवत्सने ४। नूडाककामर्मः
ध्यायंदिनानि पवित्रानि ४। गुणपाफचतुर्विंशत्यनेव हन्यवत्सने ४। पाठसारं गन्धसकृदहं वानिमोनू ४। अष्टादशहमकान
विंशतिवर्दिनं कुमालं। गुणिकार्कदिनं न्यूनादवनिषाद्यमालय ४। अकुरुषुगिको नायं गमसमिन्नसं ४। य ४। कदित्रिचतुर्विंशत्यपहा
निकुम। एषादि। गुणपाफेदिने ४। पश्चिन्नारुषमास ४। मृनि ४। द्विष्टं चक्रमालिख्य। विंशत्यहं सयुग्मं। गन्धसं ४। पादावायाश्च संख्या
कसं समा लिखन्। हस्तानि समा लादि मृत्पालिं गव सर्वथा। विधिवचनं मृत्पाचयदिष्टं। कश्चनं पदं। नाडीसं ४। धनं गावन् कुर्या

वा०क

वायुविह्वलधरुप्रह्वकंक्रमसायागीनच०त्वापूनःपूनः॥विधायिकाजिकाद्यानस्वाप्तमाकृष्यनचय०ने॥अधिकाविदने०षहि०
 सरुमाथकविह्वलि०अ०हाना०ह०सत्त्वानांस्वाप्तसंख्यानयक्रमाकृ०माहृदनरुवडाईवा०त्वा०नाथसंरुव०दू०हृ०ष्यामनू०पी०जसर्व
 कायाविनामकृ०त्वा०अ०ग्नयविचनंवायु०सर्वसिद्धिकनामक०॥कस्यथागवर्न०अ०व०द०सत्त्ववचायथा०वायुस्व०नू०पा०रुगवानवाना
 रुवकिविधाय०वायुप०हृ०स्व०रावनदक्रि०सक०नू०ध०त्मना०द्वया०नरि०न०था०गन०व०न०पूर०य०रु०पूनः०अ०रु०धु०रा०धु०रा०दीनीया०गु०म०स०
 कल०वि०रु०॥विषादि०ह०न०॥ह०ध०मा०ज०त्य०व०धु०रा०दय०प०हृ०त्स०क०प०ध०स०त्वा०स०दा०पी०क०नू०ध०व०र्ल०॥कृ०पा०त्म०कं०गु०सं०ग्रा०म०न०दि०द०व०न०गु०
 कि०षू०॥रु०द०न०रु०द०न०क०र्म०दा०ह०जा०ग०प०स०म्य०रु०॥द्वया०त्म०क०पून०व०र्जी०संद०हं०जन०को०रु०व०रु०धु०रं०संद०ह०म०धु०लं०ल०कृ०य०च्चा०वा०यु०वि०रु०ग०
 दृ०त्वा०लो०य०दा०ना०थ०कालि०स्वा०यहि०पृ०च्छ०कि०॥कालो०पा०ह्या०त्म०रा०ग०सु०सु०स्य०ष०थ०कृ०नि०रु०व०रु०गी०य०रु०कि०सु०नि०रु०ना०थी०रु०रु०सु०य०सु०पृ०च्छ०कि०॥

स्वसर्वार्थसंसिद्धिद्वयसुसंक्षया रुचक ॥ कायद्वयं च नाथस्य जानीयात्पवनात्मना ॥ पवित्राश्चर्मकायस्संनिर्घृष्टं संक्षयविग्रह ॥ निर्व्यानि
 म्मानकायाख्य ॥ किकाययामर्क ॥ धर्मकायगुरुं सर्वं सर्वं ॥ अथाधर्मविग्रह ॥ निर्व्यानि विग्रह ॥ अथाप्युक्तकस्यात्मनापि वा ॥ पादभया
 मस्तिनाथागीपंचवृक्षस्वरावक ॥ वामदक्षिणया ॥ स्तुतविचरं नित्यं ॥ अकर्म ॥ दक्षिणनिर्गता नस्मिन्ना नियममुलं वरु ॥ ऊवा
 कसुमसंकासं अमिता रं गजदवता ॥ वामाविनिर्गता नस्मिन्नायुर्ममुलससदा ॥ हनिकवर्षु दृष्टं अमाघपनमदवता ॥ द्वाह्यां विनिर्गता
 नस्मिन्कांचनपुरुसनिर्गता ॥ माहृदममुलं वरु वायुनत्नसंरुवं सदा ॥ कदा ममुलयवा नस्तुमिरु कून्दसंनिरु ॥ वानून ममुलं वरु
 यजुवा नाहिमहायुर्नि ॥ सर्वदहान् गवायु ॥ सर्वथ स्यात्पदार्थक ॥ वेनाचन स्वरावा सोमहा वायु ॥ प्रकीर्तिरु ॥ मानू रंगनयथागी प्र
 विर्गीकिसमाहिरु ॥ लक्षादि संख्याया वा वद ॥ दायं ऊपत्तदा ॥ लक्ष्मण ॥ द्यायन पनियु नसाधक ॥ नसायु नपि पचमदी सजी

वहनाहसंभय॥ पाकनूलायपवनसरुचंगनयमृदाअमासानूकयागनमिष्टनिर्णसमाहिरु॥ यदाकुककयागनमृत्पुजयति
सर्वदाआयूर्यवायुनासर्वमापादकलमात्मविरु॥ कूरकंवल्लिलीकृतउद्याकस्त्रिविधमन॥ परिंहात्मारुकायावमध्वस्योदित
गुल्लुथा॥ यदुंरुगिगुल्लुय॥ कुककस्तनजायेकविधयकूरकं पूर्वआत्मनाजानमधुलं॥ गिपनामृत्थरुस्तनपदद्याओनिकै
रु॥ परिंहात्मागिकायावलावण॥ कूरककिया॥ गिगुल्लुय॥ उद्याका॥ शरुनभरुमागिका॥ सजवयापयत्नन॥ धरुं पद
मिष्टगा॥ गिरुकूरकयागस्यमृत्पुर्द्वपवरुं॥ सुत्वाकूरकं॥ कूरकं॥ मिनीकृतनिनाधेतावकिष्टन॥ रुस्यकल्यसरुजानिमृत्पुनायागिर्मे
निर्वि॥ हृदयाकुगर्गवायुभीनहंका॥ नमं॥ निरुं॥ ध्यायानसमाहिरुकायासोवाधेनूविषयादिहि॥ सैमानुर्द्ध॥ गेवायुर्निर्वोदस्याद॥ ध
गुरु॥ अपमिष्टिरुनिर्वोद॥ हृदयो॥ नूहस्त्रि॥ उर्द्धो॥ धगर्गवायुसंपटीकृतमानसं॥ रुस्यास्यो॥ गनसनिर्णपदमाप्रयातु॥ वा

यथागंनजानागियासुत्वापिकनागिन॥ ससंसावस्यकिंरुस्मान्नादु॥ वेनूयद्रु॥ गगागर्गवथावायुंलकयत्ससुद्धिमान॥ वायूना
धिष्ठिरुं॥ सर्ववायु॥ सर्वगगावक॥ ॐ ह्रा हृगवा॥ धासमहासमयनायकी॥ द्वादसांगप्रकिहृत्थाकर्म॥ सहरुजासक॥ उत्पेहि॥ धु
सूर्यादीवकाका॥ नयनूयक॥ ॐ चक्रेनववर्षा॥ ॐ वेधूरुयानसूनुयका॥ नाकावां॥ दुष्टिनीयानामसं॥ यो॥ पृथ॥ कृथक॥ वं॥ वकादिगा
वनकूर्या॥ ॐ वधूरुलकनं॥ ५ ॥ सहहवीन॥ मरुयउ॥ रुथअवअगुदाअरु॥ ॐ नरुवषवन॥ हा॥ एरववीव॥ हा॥ अऊ॥ दूहिनिअरु
सकुअकन॥ ॐ सलुधा॥ ॐ रुचर्मदि॥ उिलाअनासनि॥ ॐ समं॥ दूयकवाविअ॥ ॐ सकेसहसजकवाठ॥ ॐ रुथकागरु॥ यन॥ उवाअव
ॐ रु॥ ॐ सवनअ॥ ॐ उसन॥ ॐ सअ॥ ॐ उ॥ ॐ खं॥ उं॥ इविंद॥ उसेअ॥ ॐ उ॥ उ॥ सह॥ न॥ उ॥ ॐ मरु॥ सअल॥ हदउ॥ ॐ मरु॥ सहाव॥ ॐ ॐ मरु॥ प
उ॥ उ॥ न॥ ॐ ॥ इवमि॥ उ॥ अ॥ रु॥ अ॥ उ॥ सि॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ कि॥ श्री॥ वज॥ वा॥ ना॥ हि॥ क॥ ल्य॥ म॥ हा॥ म॥ रु॥ ना॥ ऊ॥ व॥ रु॥ सूर्यादि॥ स॥ न॥ व॥ क॥ प॥ या॥ ग॥ पंच॥ म॥ ४॥ प॥

दा०क

[illegible]

12

[illegible]

नमो महावायुस्तु कथायाद्विनिश्चयम् ॥ वायुस्तु न जाति कर्मा कर्म न सिद्धि ॥ कार्त्तिकानपजायकवायुः सर्वगतावतम् ॥ वायुस्तु
 त्वानुपूर्वधर्मं कुरु त्वं सुसाधयम् ॥ पादरुगाश्च सत्वानीवाग्वाः सर्वकर्मकुरु ॥ विह्वानवाहनं चैव वृद्धत्वं पदमाप्नुयात् ॥ न हस्ये
 र्वर्गं कुरु उपायं वाधिका न क्षमम् ॥ पुन नूवाच रुगाश्च नमः कुरु पयवस्ति रुग्णपद्मे वद लभके कसक नेर्मनु नूठकथा द्वादेहम् ॥ मः
 हाय रुं कथितं मम वल्लरुः सर्वैक कर्म कं यत्तु द्वादेहं सहकानयम् ॥ एकं कुरु महावक्त्रं कुर्याच्च पृथक् कर्म रुग्णलक्षणं द्वादेहं स क
 दवी साधयत्साधनामकं ॥ ॥ पहन्नामवनाञ्जुं गां ॐ यहेगां ॐ सह रु उ उ अ न रु का न अ प रु का ॥ सिद्ध पदविशय पठ स्वविमं
 यपा स उ ट वी अ इ ख धि नू वि नू अ स न्ना पृ ॥ ध वि रु नि अ रुं ॥ पपा स ह ॐ उ रु अ न हं रु द्वा ही सा वा ॐ स अ उ ॥ अ मं तु ना रि अ ॐ
 उ अ वि हि ना अ स रु क अ उ ॥ ॥ अथ रु स प व अ मि ना ती च कं य थ क मं ॥ द्वा स प नी स रु सा धि ना ती द ह न ग रु व नू ॥ ना ठि का उ

पनातीनां कथांस्तु न समाधिना ॥ विंशतिरु न दारं नाम नाती पाधानमूय रुग्णातीस्तु नैव पीथं च वरुर्षिष्ठा पमा द रुग्ण कथां म ॥ अथ नातीः
 आश्रय कि व सर्वगा ॥ पूली लमलय गि न सि न ख द रु व रु स्ति गा ॥ जा नं ध न सि र्वा स्तु न क स न म स रु व रु ॥ उ ठि या न द कि ॥ ध क ॥ रु न
 ती ल म ल वा हि नी ॥ अ र्ध द यु ष व स मि ना ती न क प वा हि नी ॥ ग द व नी वा म क ॥ रु ना ती वा यू च वा हि नी ॥ ना म ध नी प वा म ॥ अ रु स्ति व
 रु मि स र्व द ॥ क वि च्छा र्द स्ति ना व रु ना ती व रु अ वा हि नी ॥ का म नू प रु या स्तु न व रु र्व रु मि स र्व द ॥ अ उ रु न यू ग ल ना ती पि रु व रु स द
 ॥ ना रि वि ष कू नि रु न ना ती रु रु सा व रु ॥ का ड ल ना सि का ॥ गु रु मं तु मा ला व रु स्ति गा ॥ मू र्व रु न क लिं ग गु रु न व रु मि स द स्ति गा ॥ ली
 पा क कं थ द ॥ रु ना ती उ द न वा हि नी ॥ का थि रु रु द य रु न वू ना ती वि म ल प वा हि नी ॥ रु मा ल य म रु रु न ना ती सी मा रु वा हि नी ॥ प ना
 धि वा सि नी लिं ग ना ती ॥ अ प वा हि नी ॥ गु रु द व रु गु ठ रु न मा मा न्य यू य वा हि नी ॥ सो ना धु उ नू यू ग न ॥ अ नि रु च रु स द व रु ॥ स व रु

दीयजंघस्तननाडीप्रसदवाहिनी। नगत्रपादौगुलीरूयानाडीमदसदावहा। सिंधोपादपृष्ठस्तनग्रुध्वहकिन्नपिनी। मनुअंगुः
 रयाशस्तनखटंवहकिसर्षदा॥ कलजातुर्ध्वास्थित्वावालसिंहानूवाहिनी। रुधौमध्वस्थित्वानाडीललनामूत्रवाहिनी॥ मनुअंगुः
 याशस्तनखटंवहकिसर्षदा॥ कलजातानूवयास्थित्वावालसिंहानूवाहिनी। रुधौमध्वस्थित्वानाडिललनामूत्रवाहिनी॥ दक्षिणनसनी
 रयातानाडीचक्रवाहिनी। सर्वरुधौमध्वरागुहस्तनानूहमध्वगम॥ कदलीपूयसंकासालंबमानात्वध्वमूखी। केलीवक्रिचिवादी
 फावाधिविरुसमावहा। सावधूनीविह्वयासरुजानन्ददायिका॥ प्राधान्यस्तुसर्ववीजानीललनायास्तुनाडिका॥ अतुवाअयमन्या
 गंगमसिंधुपत्रापगम॥ ताजवयाकिनायस्यनकीरुताखगमनन। सैलागकायनूपास्तुजानीयादहमाप्रिका॥ त्रिमुष्टियांप्रधानायालल
 नापुस्तुस्तनवननसनापायनसंस्थिता॥ अवधूनीमध्वदध्वगुग्राकाग्रहकवर्जिता॥ ललनासैलागकायाथाशनसनानेमोनकीरुन

॥ अवधूनीधर्मकायणादिकिकायजयमनं॥ उतानाडिकांसर्वाभनीनगुरुवाविधी। तस्यासरुसंजातापिधुनदवतात्मकं॥ नूपातीनं
 रुवरुपिंठंपिधुनीकंवदवका॥ तस्मादचिंतयागतकथनामयसर्वगम। यनयनप्रकाशपिंठातीनंपदस्थिता॥ तनरुमय
 तांप्रायेयागीवृद्धत्वमात्रयाकु॥ अथप्रावावरुगवानकर्तुकाद्यादहोयूरु॥ वीजाकनचगुर्विहात्युल्लादिशुविधिग॥ श्रीहनुकवज
 वावाहीनरुतानरुविद्यति। अस्यामरुसामर्थ्योकांकाटिसरुमुक॥ यनरुअनरुवीनयुक्तथसावसमूहयनू। अन्यतंजाकमरुअनू
 दंमरुससाधनं॥ अऊफासंरुचक्रंवात्रयाध्वस्तनानथा। स्मवदादवस्तननसर्वसिद्धिरुमानिकं॥ प्रवगकात्रस्वासेउमानयः
 सर्वमकरं। निष्कासकालभाह्वयाकृष्टिहिसर्वयागजं॥ स्थितिकालगुयागद्यशनकिर्नवृद्धकृणकं॥ स्वासचात्रवज्रवावाहीमग
 म्यवालयागिना। अरिधकंयहोयथवगुने॥ सरुक्तवरि॥ पत्रिपात्रिकामहायानपञ्चमरुप्रकाशयनू॥ मधुलंबवहयसर्ववाना

वा० क

हीमथहन्की॥ प्रह्लादवहायलुगवककम्यामथनयान॥ अन्तरंगालिषिकस्मनदहायदिननयं॥ अवधनीमधुलंकृश्यामस्तनरु
यस्यहावकं॥ स्तनाकानाश्रवानाहीरूयालिंग्वाहीरूकोश्रितनानोदन्पिष्ठावतुर्मखापुष्पात्कटशागुजेदीदहाहिर्येका॥ गो
श्याकाकंसरुनवे॥ पञ्चमूपास्तुदिगभेस्तुपलयाग्निनिवपलादिक्रि॥ एवङ्ककलिचपनसदमनूककथा॥ जिभूलानंगवर्मधर
मपा॥ अर्क॥ एवच॥ वामर्ध॥ कपालचवाभखर्वांगमूधुर्क॥ मूकक॥ नग्नमथमूधुमालागुधाविका॥ गृग्नानरुन॥ द्वायका॥ शि
कपालमालिका॥ मूयक॥ नागवर्ज॥ अथवाहन्कनगु॥ दिवगंधानूलिकीग्नोपूवकयूनालिका॥ दिवाप्रगदामरूषिपटचन्द्रअव
र्जक॥ ललाटचमदाक्षर्यंप्रह्वालीटपतान्विता॥ झालामाबारुवकालायागिनीयथमग्न॥ हन्ककृष्णजनार्जुनामकूट
म्याग्न॥ व्याघ्रवर्मनिवसनंमंचमूपाविरूषनं॥ कपालमालिनावीचविश्ववज्ञार्धचन्द्रकं॥ जिन्नर्गदक्षालनलंचवतुनामरुः

यान के ॥ शुक्रादसना विद्या सनाई मूखु रूषर्षी यक्ष पवित्र रूम च काला मालालिक लालिहि ॥ यानि मूडा द्वि हसं गु वक्र वा ना हिवि (१) प
 ॥ यदि ह नूक माय कस्तु दा वा ना का द्वि हसं पृ च यानि मूडा द्वि हसं पू ना ग च र्म प ना व ना ॥ ह नूक स्य द्वि हसं पू दौ न च र्म सु धा वि क अ उ
 पाय प्रह्लास कं थार्ग म हा स ख दि य म क र्म ॥ द या क र्म क दो च रु व नि र्वा न नू प क ॥ (१) प च क स्य थार्गि न्य दा कि न्या दि य थ क र्म ॥ दा न र्वा सर्व वी
 ना च ख रु क पा ल र्म ग वि नू ॥ के क स्या पि न रु र्म य थ व द नू प र्म स ॥ ल ल ना न स ना ना डी प ह्ना पा या थ म ल क ॥ अ ध वा व धू नी स्या त्स म र्म स
 य रु क रु ग ॥ वि च र्क वि गु नि ना द वा ता कि न्या दि य थ क र्म ॥ ह नू कं व क्र वा ना का शु जाल क स ह स कं ॥ द्वि शु जा द्वि मूखी ना दि अ न्या थ यानि
 ना नि च ॥ द य वि स क्त न दि स्त द उ न रु अ न ॥ सी स ह स्त न रु ॥ स रु प य च ॥ हा अ ग क ॥ अ ज क उ ॥ मा ह मा ह प स नु प वि स्म ॥ म टि ना
 का न थार्ग त्स म टि ना न थार्ग कृ ॥ वी रु स्य ह दि वि न्या स्य सु न धा र्म रु न धा दि क ॥ म धु र्म व स मा नी य पू जा पा प द ग ना दि क ॥ व क्र स र्ग च रु

वा०क

रागं षड् कस्य तुल्यवर्णं ॥ सर्वनामविधं कुर्याद्यथ हि समयलक्ष्मी ॥ उपायिका अन्तर्गतं सर्ववर्त्तुन हि सौंदर्यं ॥ वचदापय रुचयुज्यस्य
 चमादिकं ॥ मंगलाय अक्षयि नमः कनकजालमकुर्वे ॥ चधुली रावयत्मानं कलिकादिमर्द्धमकुर्वे ॥ वहत्यर्द्धमूखानादी कथागतास्तदा क
 र्त्तुं ॥ अकिन्त्यादि समस्तं तु दह किं हान नमि का ॥ विह्वलं लीलनीयं किं दग्धं अवहं हंसी ॥ ॐ ह्यारुहं गवान्धामी वज्रवावा हीनायकी ॥
 सर्वयोगिसमायागमद्वयसत्त्वपर्वसर्व ॥ ॥ ॐ मिथी वज्रवावा ही कल्यणक वज्रवज्रवावा ही उत्पलिय रुचकु मधुलनाम षष्ठ्य पठल ॥
 ॥ अथ कश्चिद्व्यामिनीनां यथादयं ॥ आगिनीयागमागिरुगवाककुकीर्त्तनं ॥ वावाकानन्दनूप अस्त्रनिगाजालसर्वं ॥ काय
 राव अरुद अगिनीयानन्दनूपकं ॥ कायिकासखमागिरुजिविधं जाय नन्द्या ॥ गयानन्द निनाली च वरुथं सहजय न ॥ नमया सूर्यख
 वाद्यादहमध्वक कथा ॥ पूर्व्वीदसं स्मितादथे ॥ नदसिंहं वृद्धकायमहानसं ॥ मधुलश्च कस्य वावावा ही पदमाग्रया ॥ वाक्काष्मिक

23

दवी उवावाही वज्रपिनी ॥ हिरुजा न कवर्धु उजिन गजक वक्रिका ॥ उं ह्रा मोड कलाली त्रयं च मूद्रा सिद्धा विधी ॥ सवा नूरा मूक कंठ पत्या लीट
पदान्विता ॥ कपालमाली धात्रा च दक्षिण कर्हि धात्रिणा ॥ वाम कपाल रवद्वज्र सूत्र संज्ञा न विग्रही ॥ मध्य मधुल स्थाया तु सफर्हि ॥ धात्र्या नः
कंठे धात्रिं ॥ कुर्वन् हृदयं वा नाही सहस्रं पृष्ठ ॥ ओं श्रीं वज्रज हं जा ह कि नूधी नूथ हं जा हं की रुधी जा हूं स्वा हा न हूं हूं रुद्र स्वा हा ॥ मधुल या अ
दवी नाम कृन्वर्कि कं मर्कं ॥ वा नाका य क मथनी कलना जी प हं स्मरं ॥ वा नाही स्तन मा सा अथा गिनी न कुनि सु नि ॥ स्वा हा ग म य मूखा दिहा धा
फर्हिं धा नि दव ना ॥ कार्यं स्रु विधा स्तार्यं रूया सिद्धा नथा गरु ॥ सफर्हिं धा नि न नु अ उ त्र य क म हा स्रु वा न ॥ अधिका नै जा कि नी य स्मार्क
कुरु जा किनी कली ॥ पृष्ठ म्म हं लया स्वा मि कथ मूत्य अरु म म ॥ ना वयित्वा तु र ग व चा ना ही स्रु व जा य का ॥ गृध्र कृ हि त्र या य लि न न स्तु र्म र्ति
स्वयं ॥ व कार्गं गुक्क नै धा स्मा को द धुन का न द धु कं ॥ मनी न नू प कं स म्य क विषय स्थि य नू प कं ॥ वा धि विरु म हा वि नू गु धा वी का न स रू कं ॥

धुलै॥ आकाशविनादवीसंवाद्यनिमप्रसुं॥ वमनमपनममहासहस्रहवक्रप्रह्लायाय००सिउउककुलाश्रुदकनूमाहावक्रुमुसः
 नअलसूनासूवचूजजिम्मा॥ आनाहिअमहसूहिवाधाहिवक्रुहना००कसनसहाहिअआहसिगुंमनायवक्रुममअरु००निवाह००
 डिमहसूदसमाहिअअउ००मुम॥ जानहिगुमिपउउकउवीयाअ॥ उवकिवआलिनिवधू००सुक्रुअ॥ किदुअनउह००नेदिस००का
 रुजलकिजलकिनिवाकासनूअ॥ जा००निसहज००नू००आनच००ऊनममनधपठिहासनहिस००॥ ००वाहिकावक्रुविरुजिनमाह००दी
 मरुधउउतावक्रुमा००अ००॥ ॥ अथाक०संपवआमिसमयानायथविधिं॥ यतविस्रनमाकदादीर्घसिद्धिंउजायन॥ स्वगृहपुगुफ
 सुनविजनेवमनामम॥ गिनिगकनकूजयमहादधिठरुषुव॥ ममनमाहृहवानदीसंगममधम॥ वरुंयमधुलैसम्यगनरुवक्रु
 लमिदुता॥ वानाहीयागिनावाय्यक्रुमक्रुजपीथिका॥ निमक्रुयदवना०सर्वा०अद्यानपतिर्महान्॥ नामास्वधोमुखीकेलीरिक्कनावाय्य

मववाकविहिक्रुनावाय्यलोकिकीसाधनस्ति००कविदुधिनाकार्यारिहवपायमवव॥ ननध्ववन०॥ अथअद्यानपति००कविक्॥ अ
 वाय्यपूर्वगमंकृत्वावरुंयमधुलैगुरुं॥ आवाय्यारिपिकागुणिनालाकानाचअइपिका०॥ दमकसुलपनिरुका००करुंयागदनायक०॥
 नि००कृपका००संकुनेककुलुपिसंयन०॥ स्वात्कर्षनानकरुंयादाकाववक्रिमासदा॥ यागृहंनेष्टिकाकाकासवकालांगलीवधिक॥ स
 र्मविकमीमुखीनचक्रगननायक०॥ नर्वसर्वगु॥ धायन०॥ सर्वरुधुजपानकः॥ वीर्यवीर्यदासम्यज्ञानिनाहानिनेहंकृती॥ संत्वसाधकिकानि
 र्थी॥ अयसीकृकरुषदी॥ वक्रुधधुसमापन००कपालारुन॥ मस्रक०॥ वामाचवामपा॥ र्थपुस्रपयस्रविवक्रुदा०॥ नर्वगुदमयावाय्य०॥ सर्व
 कर्मविवक्रु॥ धानिमलिकागुतावाय्यदवनावाय्यमनूकमी॥ ग॥ धादकंयथाप्रायपादपकावर्षीगुजी॥ पनिकलिरुहसुनपवधवा
 नस्ति००अथकनिष्ठरुदनआवाय्यपुनस्मन॥ इइनअहंकावीगुनूतत्यकमवव॥ अदिकतास्वपूजादीदामीदामीक॥ येवच॥ नपवः

वा०क

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ कर्मफलप्रदानं ॥
कर्मफलप्रदानं नाम धर्माधिकारविशेषः ॥ अथ
धर्मपरिचयः ॥ धर्मश्चेति शब्दो धर्मो धर्मः ॥
अथ धर्मपरिचयः ॥ धर्मश्चेति शब्दो धर्मो धर्मः ॥

[illegible]

दा० क

[illegible]

ममीति कै॥ ॐ हा हं र ग वा न्वा मी व ऊ वा ना हि मा त्म का ॥ सर्व वी न समा या ग द्व क स त्व १ प नं स त्व ॥ ॥ ॐ मि थ्री व ऊ वा ना हि क ल्प म हा म लु ना ज वा
ना ही उ त्प लि ल कृ षा स ख संचा न क र्म क ल्प वि धि १ प र ल १ स फ म ॥ १ ॥ अ ॥ अ न १ संप व क्क मि हां यौ यौ तु य थ स्ति ति १ पूर्व वृ ष्ठे र्थ थ दि र्थ प
का षा या मि शु मा न कं ॥ व ऊ स म्ब न र ग वा न्वा ना ही या ग संच न १ हां यौ यौ तु स मू दि र्थ प द्म संच न क र्म कं ॥ व ऊ वा ना ही या गि न्वा क थ स म य
संच नं ॥ को मा ह नी तु ऊ को च न त्म संच न कं वि र्थ ॥ पृ ष्ठ न तु स र्थ हां यौ क थं व ऊा दि संच नं ॥ को ह ह नं स म स्वा मी व ऊ स म य क थ ग र्म ॥ प द्म च ऊ
क थ न त्म व ऊ वा ना ही क थं र व र ॥ पू ज्ञा कृ त्वा क थ व ऊा तु ष्ठा हं संप का षा य न् ॥ व ऊा नं धुं चू नं रू नं ग त्वा रि रि च व ऊ कं ॥ संच नं रि पू व ऊ षू उ त्पा
दं व ऊ स म्ब नं ॥ स म र्थं स र्व ना डी नो रू यं मा र्ग न जा यि नां ॥ संच नं स ऊा व कं व था ग स म्ब न कं स म ॥ प द्मा व धू रि की ना डी ष ड्म ऊं च नि वा सि नी ॥ संच
नं न षू च ऊ षू प द्म संच न मू य न् ॥ व ऊं सो ग र मा र्ग षू ॐ ति या द षू मा र्ग कं ॥ स म्ब नं न षू मा र्ग षू व ऊ स म्ब नं व र्थ न् ॥ न त्म स रू क व ऊ षू म धि ति

वा० क

लसकागतासम्बन्धविन्दुकरनत्तसंवनकंसं॥यपदभकरिर्जकीसकमास्तनसम्बन्धकाकाकादिषुअष्टयनायकाइदयलकृष्ण॥
उर्वसर्वसमायागीजकासंवनजकय॥उधुलीकालरुनिरीपतिनाखवधुकिर्कि॥हूनदकंरुकात्यलिंविअकात्रुविक्रधरु॥उर्वसर्वस
मायागीजकिनीजालसम्बन्ध॥वाधिविरुक्तमध्याउयदसृगुक्रनूयकं॥वज्रवानासुथाख्यानाआगमगमनारुन॥अकस्माहूननेनास्य
महामायाऊनूपकं॥यागश्चविराविरुंवागीयागस्यलकृष्ण॥वक्राध्यात्मिकनूपर्वविन्दुसर्वगयाजिर्कि॥लकृष्णदिसेधेचजाकिम
वर्षवृक्षकं॥मीलनेवानाकात्मिकंहूनवस्तुस्वरावरु॥समयसत्त्वविद्येउत्तरिमनधमकना॥रुवाहिसर्वगाहूयावजनायकजाकजा॥
सर्वमनाअनामंरुविधेसागकिमागया॥नागमायासदागपन्नजकस्यैषरु॥नामाहूननथथागंमूडासहजकापिनी॥नम्यमानंसहाय
रिदीपवकप्रजककं॥उर्वसफविधेधेसफविहूनलकृष्ण॥अष्टिपर्वकदीपाअपविहूनलकृष्ण॥पञ्चविंशतिकस्तात्मावृद्धोचकल

२८

हूनना॥वक्रवजादिगुन्यंवापकृतीपून्पंरुथा॥परास्वन्सर्वनामधर्मधरुस्वलकृष्ण॥माहूवृक्षंरुथाहूनवजसत्त्वुमार्गकं॥धर्मा
दयैमहायानैगुक्रमरुनयंविशु॥सहजंवसमजंवेवकत्वंवाहीकल्यकं॥महाकनूधनेनास्यकत्वंहुनीस्वरायकं॥कस्मादर्धुवनाम
अमहासमूहपूकं॥आममंतात्यमयाउसत्तानाअगुधस्ययीनवरेनविकोंकृष्यथापविश्रमंरु॥वर्जनासर्वकल्यानोपापिमाय
स्वलकृष्ण॥महाकृन्नयात्मकंसर्वजनिरुविधकं॥संहाधर्ममलीकअमूहूरुताववर्जना॥उयंनामास्वधमसुवमहासमूहलकृष्ण॥वा
मास्वलकृष्णरुमीयथावदनूपूर्वस॥आनेवीमदनात्यलिधिहूयासर्वयागिनी॥नामादिकंसर्वकस्यनाडीमाग्नानगामिनी॥अथवालाकिमा
यासासाहामायापूनिनी॥नासिकंरुस्यवाअसंजाकिवविसेखया॥वज्रवानाहीदवीअसंवनलासयस्तिर्कि॥स्यामवर्धनिरादवी॥अप
जाकिनिर्निर्कि॥रुस्यविशुपरावधसर्वकस्यापविस्तिता॥वज्रवानाहीनूपअरुथागरकूलानग॥अप्यपद्रुयागिन्वावीनाअसर्वसंरु

वा०क

[illegible][illegible]

वा०क

मदियामिनीस्त्रमिसदा॥ कर्मा न्यत्य वृत्तिश्च कलाहासापि हांथां पना॥ ३०॥ हारुगवास्वामीयामिन्येनैकेकाकन॥ नामरुतुल्यहाहूय
वरुसमिधिरंतुयिचवैकस्वसमाधिरुयामिनीमूयामह॥ कीउक्तिविपुलीवाकंरवनिर्वापधक॥ अथन॥ सीरूपकावधुवामह
सैरुधुसकं॥ यनेवस्त्रयकयागीधीधुमिधिरुजायकं॥ अकंगुलीदर्शयधुमुवायोस्त्रागनारुवहू॥ क्रममूडाविजानीयादामांगुधुनिपीठ
यहू॥ अनामिकांयुयादयारुगस्याकनिष्ठको॥ मध्वमोदर्शयधुमुदयारुपदधिकी॥ अनामिकादर्शयधुमुचकं॥ मस्यधदर्शयहू॥ हकटींद
र्शयधुमुमिधिरुगस्यधुदर्शयहू॥ ललाटंदर्शयधुमुकीउरुननुकननु॥ वामनजागियानाठीजाकिन्यावामरुसदा॥ वामहर्षपरासीचनाम
हृदयराकिनी॥ म्मिधुहृदयपरासीचसमयीसाविहीरुक॥ म्मिधुवार्थिनंकर्याकूलवीजेप्रजायकं॥ कूलकियानत्यजनिविश्यांमलिखरुय
दा॥ हिन॥ क॥ म॥ न॥ कर्याहूस्त्रमिनीवामपादिनां॥ स्वविश्यांस्मनर्षकस्यसाधकविषयहिना॥ ग॥ धुवचिवूकवापिनासिकायांकुनाउ॥ लि॥ मि॥

३०

यगृष्टिसदालाकः॥ सविद्याकनिनीकयहू॥ सहावैयानिथामिन्य॥ समयैखलुइर्लरा॥ कपालपनस्त्रवांगंधजचकंरुवामली॥ सीखै
लिहूलसंयुक्तंलिखस्त्रगृह्वमन॥ मयमोसंप्रियानिहूलज्जुहयनामिनीवया॥ वानाहीकूलसैरुका॥ सहजामिनिकथ्यन॥ द॥ (॥ द॥
हारिजायक॥ यामिनीनांसवयसदापी॥ (॥ पपी॥ क॥ प॥ ध॥ क॥ दा॥ हा॥ प॥ ध॥ दा॥ ह॥ म॥ ला॥ प॥ का॥ प॥ म॥ ला॥ प॥ क॥ ॥ म॥ म॥ न॥ वा॥ प॥ म॥ म॥ न॥ च॥ ज॥ व॥ द॥ ॥
यवस्त्रिता॥ पी॥ ०॥ जानंधनीरुथजडियानंरुथपी॥ पी॥ ०॥ म॥ द॥ द॥ म॥ व॥ च॥ ॥ ग॥ ज॥ व॥ य॥ प॥ पी॥ ०॥ म्मिधुअनामध्वनाअयं॥ द॥ विकाठारिधनय
मालवंधापपी॥ ०॥ क॥ ॥ कामनूपीअयंकुणंकुणमाशुलिधनकं॥ गि॥ क॥ न्य॥ प॥ क॥ र्ण॥ म्मिधुका॥ म॥ ल॥ वा॥ प॥ क॥ र्ण॥ क॥ ॥ क॥ लि॥ ज॥ ल॥ वा॥ क॥ या॥ स्त्रु॥ न॥ द॥ दा॥
हं॥ च॥ र॥ (॥ धे॥ व॥ च॥ ॥ का॥ विका॥ वा॥ प॥ ध॥ दा॥ हं॥ हि॥ माल॥ य॥ वि॥ ला॥ घ॥ र॥ ॥ पा॥ धि॥ वा॥ स॥ म॥ ला॥ या॥ गु॥ ह॥ द॥ व॥ ना॥ वि॥ ध॥ र॥ म॥ ॥ सो॥ जा॥ सु॥ स॥ व॥ र्ण॥ ही॥ प॥ उ॥ प॥ म॥ ला॥
प॥ क॥ द॥ य॥ ॥ म॥ म॥ न॥ पा॥ क॥ ली॥ पू॥ ण॥ म॥ म॥ न॥ सि॥ ध्म॥ म॥ व॥ च॥ ॥ म॥ न॥ कूल॥ ना॥ द॥ या॥ स्त्रु॥ न॥ उ॥ प॥ म॥ म॥ न॥ क॥ थ॥ र॥ ॥ वा॥ क॥ पी॥ ०॥ न॥ थ॥ र॥ वा॥ ना॥ म॥ ध्म॥ त्म॥ द॥ ह॥ क॥

थरुं॥ स्वदहनादिकानूपपी० नामकि कीर्तिना॥ तदुपदवता कारनना ध्यात्मवद्विना॥ ननरतिधुमयं दहं सर्ववृद्धसमाक्रसोपी
 ० प्रमदिताहसीउपपी० विमलानथ॥ कृष्णकाकनीहमिनिर्विस्मयपक्षकं॥ कंदाहं महिमूर्खीरूयापदुदाहसदुर्ज्ञया॥ दुर्गममि
 मलास्यादपलाख्यापमलका॥ ममभनसाधुमनीवेवधर्ममयापममभनकं॥ हसीपी० दिसें मुद्धिं कथयामियथकमं पी० ॥ ० पपी०
 सवायानिर्मलारुवनिमानव॥ सुवनानिमिलसंनक्रनिर्विकल्पनधीमकाशनानानूपविनूपि॥ ध्यानारुहासलकृयनू॥ स्वाधिदवत
 या॥ गानहं कानसर्वनादिनं॥ सिंहवद्विचनयागीसर्वसंकाविवर्जिनं॥ दर्शनस्यर्शनं पायसीसिद्धिं प्रजायक॥ वृष्णाहृगवास्वामीव
 रुदाकसुभगक॥ सर्ववीनसमायागदृकसत्त्वपनं सुखं॥ ॥ ॥ निग्रीवकवावाही कल्पमहाकुरुवाउहोयांयात्पहिलकनमकुन्या
 समप्रकसरावलकृष्णपटल॥ अथम॥ ॥ अथम॥ संपवआमिसलानाहिरकाम्यया॥ कीमाहिनीपदहिलवावावाहीचस्वयंप्रसुं॥ वरु

चक्रअसनाजघनाडीमनंचविंमकि॥ कयन्यायंयथनामवअरुक्तस्वराजनं॥ मध्वदमीकलिं॥ गवउआकधुं॥ टकीसह॥ मनीसोनासु
 मलयीवंगदवडीचकलिं॥ गकी॥ मानवीकुमसलद्धीवनंदीकामनूपिदी॥ गहलीठविदहीचरुगनामात्रमागधी॥ मिलसहिलदद
 वधुनिवालीनसमासिनी॥ नायअनीचवंगडीखोडीचहलिकलकी॥ सुवर्धुदीपिसिंगलीचणमडीचकर्कनकी॥ सिंधुहिमालयीव
 डीकूनीगंधनीपथी॥ ऊऊवनीवनूधवउडियानलंपाकनी॥ जालधनीअर्बुदीचकस्मीनीकोहालांकवी॥ अयनीविमकंरीनूहनी
 यवननाहिका॥ प्रमनिका॥ ऊऊकीचरुझलिकीगुरुदवनी॥ परपूनीवरुनीचपलववापदलवी॥ ममभननीउपममभनीमहादधी
 टनीखली॥ सुद्धीचसर्वदहाकीदवीचगुष्टाष्टीकमारुथ॥ गारिचकपूयागिना॥ विरुयाकुलनाडिका॥ हृदयचकनथअसुद्धिका
 सर्वममिनी॥ पयागदविका॥ टचडऊयिकुलनाडिका॥ कालामूर्खीसिद्धहसीमाहनीकोमावीपोनकी॥ चर्वसर्वहदिसनमायाकानस

६०५

[illegible]

नमः सर्वधातु कं नमः सर्वधातु धिगभी वं जी माह नी सर्व कर्मि कं नाना व की व न या गि न्या स्व सैं कां गा धि की प नी मी न चा द य का ल नु का मा ख लु
ध क प नी ॥ सु व न र ग ज व नी दी प म हा ना ग स्व रा व नी ना रा व का न की द वी अ र्द्ध या प द मा प्रि का ॥ स फ र्णि ॥ अ त्म क म ॥ अ नु उ य य नि स
म रु जी ॥ अं व स र्द्ध जी मा व स र्द्ध ना व रि ऊ का जा य की हूं अ र्द्ध व र्द्ध व र्द्ध स्वामी हा य हूं २ र्द्ध २ स्वा हा गं ॥ नूं दं म रु प या ग न म द्यु लं सर्व क
मि कं ॥ के क स्य द वी नी म ॥ अ व र्द्ध अ क जी ॥ उ पा य प्र ह्म त्म कं सर्व ध मा द य व म ध ग ॥ अ व र्द्ध न स मा य कं ना न ॥ अ न वि ह्म पि कं ॥ अ वा य मा न
म हा स्य व रे न व ना दि कं ॥ अ जी व र्द्ध न र ग मा त्म ज कि नी दं कि मां स कं ॥ वा ना ही सर्व मां स व स म यं सर्व या ग र ॥ म रु सर्व र हा ह्म त्म न म रु क न व
व कं ॥ सर्व स त्व व य द्वा कं नं या या गि नि क ल्य कं ॥ य अ र्द्ध नि कं म रु ली प र ग की व सं नि कं ॥ ना डि का नं ध न ॥ अ व र्द्ध ना का न क सैं र्द्ध कं ॥ म रु
जा न रु चि लं हि आ पा दा क नि ना ध य क् ॥ द ॥ द ॥ अ नु सैं वा नं म ध द ॥ अ व र्द्ध ना ग ना न् ॥ अ पि ३ क र्था स्व य रु व द व क् पा न पा व य क् ॥ अ नु ३

वा० क

स्वाप्तनस्त्रिचतुशमयगुणाद्यवक्रु। चतुस्रमामानु मलिचतुश्रपीदयत॥ नववानेधुष्वीजंरायचवीजादिना॥ अथवाप्तमनातीव
मकुन्यासमिहाकृतेशामकठकमसोमचतुनमामकाठरुनायाकिदनमनाटिवंरवारुसुसिजापदुसिहिवकृजपजावअलंजाअकाका
कंजुजिवंलूपमूकीरगुपवपउसुडमखरु॥ ॐ किनाहिपदकृहमजासिमाका॥ ॐ किहदय। नमसस्वमेचनंअनायुअंस्वविमूषिः
लन॥ ॐ कि कष्टस्यच॥ कृकरीननीकिय॥ ॐ उरुमसूअजाविअऊनाइ॥ ॐ वंरगुबोकांताचंमावास्न॥ ॥ ॐ किमसुकचकस्य॥ ॥
अथवाअरुणादिनामकं॥ कषवायकृनं सर्वदयंमसुकचक॥ ॐ दकुमहाधीमान्वायुविधार्यक॥ चकंक्रमसूयकाष्ठचतुपजद
लाकृमि॥ वरुनाकानसर्वकंपथसूगानिपाकथरु॥ अथपाठमथोषहिडाकिंकाकाष्ठकंमर्ग॥ कर्हिकास्तनमासायुमदीपायसकि
हि॥ यावदवधूनीवायुस्तवयकुमिवाचरु॥ यदिवाचैवकृषीरुमकुथीपकिकालिकीधनिष्टासमाकीर्णनवनातीगुनाधनारु॥ नच

३३

वागंकयलंनचकृत्यासिकंसदा॥ अवमादिमनकथनयाधिंमनधमकंक॥ पत्रमधुलनाचाथवाहयरुसर्वयकुकांधागुनायनान्यादिरु
यदमृगयागवान॥ नकवर्धसंरुडीभामायागुजुनूपकी॥ अथनरुसंपवकुमिहमकिकादिपयागक॥ यनलिखिकमागुधसाध
कसिद्धिमवायक॥ कृमेचनैर्मिर्णलिवकुलकि॥ ॐ यदा॥ पजानचकुमालिषासफाकृनमकुयाजिता॥ वाकावजावलीवसु
मध्वनामविदमिता॥ नरुभूचिकर्पकवाअथवाप्तनागदयं॥ संपूर्णलिखकर्मगुकसुंदावसुयकु॥ पूर्वाहिमूर्खसिक्तवर्धुगिरपुष्य
धर्चयकु॥ पुनरुचतुमधुलापविर्हसाध्वंइहसिक्तकल॥ ॐ अत्रामृनादकंविपुनिकेनरिषिचयकु॥ जपसफाकृनंमकुकिसेधम
हिरीकिं॥ मकिस्वस्त्यनंरुमंदीर्घायुर्वकिक्तक॥ ॐ कलगुविषदं॥ गवामहसुपूलावयकु॥ चन्दनेचलिखिचकंपूष्यधूपेसु
पूजयकु॥ वल्युदकंरुधमिचकंमध्वजायकरुग॥ ॐ पूर्वासेपुनयिक्तुं॥ ॐ दकंवि॥ ॐ पक॥ पूर्वाहिमूर्खसाध्वंवाजयचविः

वा०क

[illegible]

३४

[illegible]

वा० क

[illegible]

गमनमध्यगणकहृन्मादिसेस्तनसाध्विद्विचक्रुर्धमलिनीजीर्णवर्तुदुर्बलंविविचक्रयन्सर्वाङ्गमूर्द्धिदयंवाञ्छमर्तुविविचक्रयन्साध्वि
दवास्तिगादहास्वदंरुपवमयन्गुणगृहमिवदृष्टमानर्धंविविचक्रयन्सुनयन्कोटसंघानानामस्तुयधश्कनाखलुखलुयथ
कृत्वाहृदयन्कपिर्विचक्रमर्तुवजापयन्सकर्मपिवकिन्नुधिनमवचखभेदधुमूर्धलंवकभनचक्रमूर्धलंकाठयच्छुदयसाध्वि
गंधाद्विद्यमानकंकाकालकगुधाश्चगुमननाकसुताकिनीगर्वाकुधमाननचरुद्वयकिपिवकिचमर्तुवजापयत्सकर्महृदकाव
विदर्किर्नमा नयच्छुसंघानांनलकयविकाविर्धमश्रुहाहिमानर्धकर्ममानर्धनचमानर्धविकल्पमात्रसंस्तानंनथनावाधिमानसं
कथेवचक्रद्वयंलिख्यरुट्कानलविदर्धयन्साध्वनामासमादायलिखत्सकर्मदथाकिर्नश्रुधमहीषसमान्दीसाध्वदृष्टासमालिख
त्कयालंसंपूठस्तुयानीलस्तुनवसुयन्मध्याङ्गकुनचिरुननाशकस्यविमेषकभपचक्रुयथभमभनघानमविवि

वा०क

[illegible]

三

[illegible]

वा०क

[illegible]

मयमानं न दृष्टं कर्तुं माया स्वलक्ष्मीः। विविधां नृपकायश्च कायवाक्चिरुलक्ष्मीः॥ तत्कामयात्मनृपश्च निश्चयार्थं दयार्थं (दाम्पत्यं) यथाष्टिभक्तिकस्तुत्याक
ष्टिर्वाचनविम्वर्कः॥ विव विम्वर्कः किंपिम्ब अर्सेख्यं लाकधाहुकं। संवा नदीमाययास्ती च उयाय पूवृष कर्मस्य॥ अद्वयमास्ती यमां संचनधकनकनृपि
नी। नृपं विषवा विरावषू अलक्ष्मीं लक्ष्मीं नृपिनी॥ हिलक्ष्मी लक्ष्मी यन्त्र अमात्मनृपश्च लक्ष्मी कर्मात्। नलक्ष्मीं गभवत्सापिलक्ष्मी कासापि (गभवत्)॥ य
काचित्स्वप्नं पश्यन् नृपं स्वयं पश्यति। पश्यमानं च कुदंति नृपस्थानं नृपकं॥ एवं सर्वं नृपस्तु वक्तुं सत्त्वस्वयं मम। मम सत्त्व नयं वैवमहात्मय सत्त्वकं
॥ महाबाधिनयं सत्त्वं विम्वर्कं वनजं गमः॥ एवं नृपं यथा पूर्वं सर्वं सत्त्ववलक्ष्मीः। तार्किकानपेजानकि अगमं वालयागिनी॥ यागिनी वनलक्ष्मी जाननी हेव
रुमति। बाहिसहावत् सत्त्वकं नृपसि अवालक्ष्मी विजिह्वं नृपकं सत्त्वकं सत्त्वकं हि साननृपकं धनं॥ ॐ दं गह्या सत्त्वकं विम्वर्कं मूर्ध्नि तावनी यागि
नी पकिता अपि आचार्य धर्म (गभवत्)॥ वीथे संवादनं कृत्वा सर्वं वाक्यालादिनायकं॥ सत्त्वस्वदुग्निता अग्निं सत्त्वकं सत्त्वकं सत्त्वकं निमाचनि। सुमिदं

वा०क

[illegible][illegible]

वा०क

[illegible][illegible]

का० क

जायते बुधस्तुतिः १३ उक्तं नन्दनं वाक्सीसर्पनापूर्ववत्सर्पना ॥ व्यानीसर्वजगत्वापि मूढधर्मवायना ॥ मार्जः १४ काधरापत्याहनस्येवंपदस्ययं
कर्ममांसस्वरावधूतदानस्य बुलकृष्णकृष्णीनाग ॥ समानचक्रानाथदवदरुर्कं ॥ धनंजयं महात्मानद्याधवाभूर्धिसंख्याकं ॥ रुषधमरुति
कंरुयं नदनामस्यरुषिकं ॥ रुष्मादेः १५ पृथक्कुर्याति १६ पादाः १७ सर्वात्मजं यमः १८ यथा ददाहसी प्रपथमासेव ददाहसी ॥ ददाहसी १९ सा बुधिरुया
ददाहसी २० धनं यमः २१ कुरुमीस्वरावाति १२ महावक्रधनीमनी ॥ दानादिपात्रमितीयायुसहजं संधिमादया ॥ अर्कजगत्सर्ववक्रधनी
धनीपना १३ उक्तान्कथयति विरुसर्वं धाधिनूपकं ॥ पुनः १४ काका नदवीचक्रका नद्विधी ॥ कावर्धका कुरुस्त्रिनेत्रखिलं सर्वनाडिकां ॥
लीना कुरुस्त्रिनेत्रा नकाकास्या संरुसंस्त्रिनेत्रा ॥ सचवं संयागनिधिं सर्वं गुणमूपा लरु ॥ यासां वंशगुणसासा कुरुस्त्रिनेत्रमी ॥ अलस्य पदमा
स्यसु अवीयादिषु पयसां ॥ गुणो नवकां सर्वं धाधिर्य कलगां ॥ मृगुवक्रमि सर्वं कुरुस्त्रिनेत्रमी ॥ यनसम्यक् धनं नमिदं न नमिदं ॥

४९

सर्वं नजगत्संस्त्रिनेत्रमी ॥ याकथयति यतिचक्रं गुलिधरकामिक ॥ अक्षरु नदगांगुलोयुषिकर्मप्रदास्यरु ॥ नाजहना १५
पसंरुषी संप्रतिस्त्रिनेत्रमी ॥ कुरुमादिगन्धपुत्रालनकाचन्दनवीजकं ॥ पथ्यं कुरुष्या ॥ गायपंवा १६ गुलिका सदा ॥ नृका कुरुविहवीजं नदनी
स्त्रिनेत्रमी ॥ येवव १७ उक्तं खलमही ॥ धास्त्रिनेत्रमी ॥ माननाच्चा ननं यायुविद्वेषा १८ नृगह ॥ यथा कर्म वि ॥ धाधन अरुस्त्रिनेत्रमी ॥ यथा
गर्दरासु कर्मकेलुका कपकृष्णमिथिनां ॥ संरुनाच्चा ननं कर्मकस्यसु १९ धागुंथिनां ॥ हया मही १६ धा नविद्वेषा १७ अरुस्त्रिनेत्रमी ॥ धाधन क ननं कुरुस्त्रिनेत्रमी
मममिथिनां ॥ नस्यसु १८ पृथक्कुरु ननं कर्मकस्यसु १९ धागुंथिनां ॥ कुरुमावी कुरुस्त्रिनेत्रमी ॥ धाधन क ननं कुरुस्त्रिनेत्रमी ॥ धाधन क ननं कुरुस्त्रिनेत्रमी
मसदा ॥ अनामां वधमिथिनां १९ धागुंथिनां ॥ अनामां वधमिथिनां १९ धागुंथिनां ॥ अनामां वधमिथिनां १९ धागुंथिनां ॥ अनामां वधमिथिनां १९ धागुंथिनां ॥
यन १॥ समाहि रं जायरावन अरुस्त्रिनेत्रमी ॥ धागुंथिनां १९ धागुंथिनां ॥ धागुंथिनां १९ धागुंथिनां ॥ धागुंथिनां १९ धागुंथिनां ॥ धागुंथिनां १९ धागुंथिनां ॥

दा०क

वा०क० शुभं॥ अथ कर्मसु मविच्छिन्नं चत्वारि मनुष्यकः॥ यथा हा नमिदं जायमकुरु नादि संग्रहं॥ उपलं रुद नायं सुवर्धं सह न धम
दिकं॥ अगगो गमि संविद्य सां कर्म मनु कलकः॥ अथ काटि विनिर्मूकं कथं नापो वमार्थिकं॥ कर्षां सक्तु जाय स्यल कविधि मेव्यः
क॥००॥ एषा रु रगवान् स्वामी वरुदा कस्तुथ गरु॥ सर्ववीन समाया गभद्वज सत्वः यनं सुखं॥ • ॥००॥ मिथी वरुवा वाही कल्प मरुत
कुवा ऊ मनु जाया क्रमा लाघा एभत्य हिल कृषा ४४ म४ यटल ४॥ १०॥ अथ नाल कर्षी यष्ट मूल का ध्या शुय कर्त्तुं कथं क कावर्धं स
म्य कायं व सर्व सौ धिकं॥ मिथूनं मि किनं धेष्टु मा सया एभ समा हिल क॥ ४॥ उल का स्नान मा साय नाडी विपथ गमिनी॥ उग्र रुजा कलालीः
चलान मा एर्गि दिय कृ धा रु॥ लूली प्रियं महा माया देवा सुनादि ऊं रुवान्॥ का धुव रोन गच्छं गिया दां गुष्टां रुद्रा दधी॥ उल का स्या नाम र्त्तुं च
उद्यान वधु मकुच॥ पूली लमल याखा का स मं स मुनि कृ क॥ काम वं काम नूय स्य सर्वं कृ प्रियं मर्त्तुं॥ सर्व कृ र्त्तुं वत्तुं कृ क॥ धा का व

[illegible]

वा०क

नाश्वनायाकुसुमबाणमृत्तुनिष्ठिकाधूनीसमाधिदाधकीमतां। दक्षिणीपाणिनिर्दधामथनीसर्वरुलान्नजां॥ संसारंमंचमानांशुवि
धमायापमंस्वयं। स्वाधिष्ठानमिदंशुभं। वज्रजापस्त्रलक्ष्मं। विरुनिधिंवसंवाधियंगनवाक्य। धर्कंनिर्वाहं। वन्देनामनिर्वृत्तिसमसा
र्जया॥ पवृत्तिर्ष्वमहायानमनुयानशुक्लवर्णः। क्रियाधर्मंशुभं। नामाकुर्यात्कनूधवत्सवा॥ यादृहं सर्वं। वायुमूलनाकावस्थयंशुना।
नादृहं। विरुमस्थनपठ्यरुक्मयागिरि॥ दधीनालक्ष्मं। सम्यगुवाकनाडिपंकजं। उद्धीषामधियर्थं। संधिग्रथीविधानरु॥ पादो
गुह्यसीमांकोचकुम्भं। कथवाशुयू॥ लिंगमूलाललाटावकुश्यादांगुलीद्वयं॥ नासिकाजानूनाह्याजंघायांकनलोद्वयो॥ पादकला
यदयोचनारिगुपृष्ठवरुसक॥ गुठनाल्येगुविरूयायादसंधीसुजासुक॥ गधुकपालकवापिमशुचकककद्वयो॥ हस्तसंधिसुपा॥ ध्वज
वाहसंधिसुनोद्वयो॥ सिंहोस्त्वंधसंधिश्चपिचलाकामनिद्वयो॥ कटिसंधीगलवापिललाठारुयसंधिक॥ कर्णपृष्ठवमूलशुउल्लद्वयो॥

63

संधिं मरु॥ आसना वरु वृद्ध वज्रिकायां नवनादिका॥ कथं गालूकजिकायां बालककावकद्वय॥ एवमादित्यनकायीनादिकासन्धिमर्म
सुपीठय रुखस्य वानपूवाधिविरुमहात्मनां॥ कत्वयागविधाननरूयागुनाश्रवाक्या॥ मासिमासिनिधिर्याशुं निधिमूलनादिका
गालूकपतिप्रदायो सुयावरु कृष्ण सान्निधिका॥ रूयावाधिमहा नाडिउलूकीमुखवानधी॥ यादृशीं च सूर्यं कस्य नादृशीं गुलिमूडिका
मस्वा मरु नादृशीं कृष्णा द्वाका वापि सिकर्मकं॥ अथ वा सर्वनाश्यां सुपीठय द्विदृशदिकं॥ मरुं च सर्वसंधीनां यथावदनुपूर्वस॥ कथं
कथं कललीयालीचउमायाति सर्वदा॥ कस्मादकानासूर्यं च वचनं कल्पकलितं॥ कथं गगनास्वा सक्तं शुक्लधनीच कल्पनात्॥ अथ क० संप्र
वक्तुमिदं वगाम सुलादयं॥ नहस्यं पवनमन्य सर्वसिद्धिगुणलया॥ सर्वकामगुणकीर्त्युहमी संलक्ष्य लक्ष्मी॥ पचस्कन्धाशुं काव
द्विरुहं नूकयागवान्॥ दिग्वधं गुपाकावं वरु मूर्खमनुमन्त्रनम्॥ अं सुकनि सुकहं हं रुद्र॥ पृष्ठ॥ उंगु २ हं हं रुद्र॥ उरुना॥ उंगु ३

वा. क

पयश्चैव रुद्रः॥ पश्चिमः॥ उं आनयहा रुद्रवत्विद्याना उं रुद्रः॥ दक्षिणः॥ शुभिकोंदापयन्दि कृ० रुद्रमा नोचामनी॥ रुं कावेन्द्रयः
राकसूत्रेण्डमिमालिकां। कस्मादराधेन० पेनगा गुनून्नां चवदयन्॥ पयध्यादिवा पयस्कमापयदन् रुन् वत्तययं यवर्धं गच्छः
दाधिविहं विरावयन्॥ पवहिरुचिकामरुमवमद० खविनामका विधी कनूधपवसुखगुष्टि मृदिना पवसत्तमपयकायका॥
उं स्वरावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वरावशुद्धाः हं विचिक्रयन्॥ विरुमागुरुवेरिष्टा म्बिलं रावरावने० उं शुभगा हानवदु स्वरावात्मः
का हं॥ आधनाधयगुन्यरु हं वंरादिकि विचिक्रयन्॥ यं कावेनी लधन्वा हं वायुमधुलं॥ कस्यापविच वंकावे अग्निमधुलं नू
पकशवकवर्धुिका धं ववजाकिरुचिकं॥ कस्यापविच वंकावे अग्निमधुलं॥ कस्यापविच वंकावे अग्निमधुलं नू
मधुलवचरुको (ध) विचिक्रयका कवजाकिरुं॥ कथा कस्यापविच वंकावे अग्निमधुलं॥ कस्यापविच वंकावे अग्निमधुलं नू पवराति

४४

कं॥ कस्यापविच वंकावे अग्निमधुलं॥ कस्यापविच वंकावे अग्निमधुलं नू पवराति
॥ कस्यापविच वंकावे अग्निमधुलं॥ कस्यापविच वंकावे अग्निमधुलं नू पवराति
लमुखं महाकुर्यं दक्षिणं कुर्यं मोनरं॥ वासवकं महातीमं ऊढामकूट विरुषितं॥ रेववाकावना किं रुद्राकम्यमहामखं॥ वदवेना
वनीं बालिगध कनूधनागमहासर्वं वज्रघ्ना समापन्ना मालिजं धगुज्जयं॥ द्वितीयं रुद्रयनगजवर्मा म्बवधं॥ तृतीयं रुद्रमनू
कं वायं सर्वधर्म स्वरावकशवा मरुतीय कनखवाजी कपालधवं॥ कपालमालालं कृतं अर्धवद्विहृषितं॥ विच वजा कुरु मध्विकला
धिपतिमरुकं॥ विकृताननं तीमं धृष्टा नादिनसान्वितं॥ निवसनं व्याघ्रवर्धं धरा कर्धनवशि न विरुषितं॥ पंचमूढावर्धं दववर्धं शं वन
सान्वितं॥ कस्यालिंगं नागवती द्विरुजामकवकुशिनज्जां॥ वधूकवर्धं नगा वमधुमधिरुमधुलं॥ खगुमधिरुमधुलं मूका कमीक

वा० क

लालीतयवकिन्धिप्रिया। वामजुजालिगिरकयालादृष्टमालायसुधना। दकि। धवर्जनीवर्जकल्यानिवकमहासुखं। ऊंघादयसमाव
ष्टा महासुखनकासदा। शकिनीगुरुथनामाखसुनाहागुपिनी। न्यसत्यमादिसंस्तनसर्वसिद्धिः सुखादये। कृष्णामंचनकंचलोः
नवधूमिनेजुजा। द्विजुजाउकवकागुरुवकागंचकपालिनी। दकि। धवर्जकलिचओलीटपदननिकाशा। मूकाकंभदृष्टावदनाशय
वमूडाविहृषिगाशा। विदिद्वचवत्वावाधिविहृषिदितामुका। पूजयत्यंवामर्कयंकंनृत्तगीकसुखासवं। चगुर्वावसिगादवीरा
वयदवकासदा। पूर्वद्वानुकाकास्यानीलाद्विजुजावकाशाउलकास्याकनद्वानुका। माचमूकाकंभिका। धनास्याहिरथावकापदि
मद्वानसंस्तुता। सुकनास्यागुपीनाहादकिनचसवासना। आग्नयवेवनेमणावायकाशनकाभक। यमगादीयमद्वनीचयमद्व
ष्टिनीयसमर्थनी। विदिगुस्तनरथादवीष्टोहिनीपोमनाहनी। प्रनासनमहाघावापचमूडाविहृषिगाशा। वामकपालखट्वांगद

४७

कि। धवर्जकलिका। उकवांसर्वथागिन्यः सर्वसिद्धिप्रदायका। नृकः कवचद्वयं कृत्वा कृतचक्रं विहावयत्। समयचक्रसमावधमूडा
मकुटायागिनः। अथकवचद्वयं वक्रं। उं हं हं दय। नमः हि। निनसि। स्वाहा हं। निखाया। वाषट्। हं स्तं धदयो। हं हं हा। उचक्रं दया। हं
हं हं सर्वो। जं सुमुं। पथमं वक्रं। सत्यनद्वितीयं वेवाचनसिगा। हनीयं पन्ननृत्तवचनचक्रं। उं हं नृकाचक्रं। पंचमवक्रं। सुर्थमि
षष्टवचनमास्त्रकं। षष्टिः कवचनचक्रिर्गं। उं वं वक्रं वेवाचनीयं। हां थं यामिनी। डीं मां माहनी। डं डीं संचावती। हं हं संगासनी।
रुद्ररुद्रचदिकाया। उचक्रं सुमुं। नाहो हदिरथावक्रं। निनसि। स्वाहा सुमवचं। उं यागः शुद्धाः सर्वधर्मा धं यागशुद्धाहं। वामद
कि। धानियां स्वद्वयन्यस्यकमलवद्विकसकं। हदयमूडादिदवस्यजुमनं। शकिनीजालसंवर्जं। उचक्रं यागवचनस्य सुंदवगाथागं
विहावयत्। धर्मसंतागनिर्मात्रमहासुखचक्राजिर्गं। चगुर्विंशकिनामी धं। धनीनं गभय। अहिरं। चगुर्विंशकिपी। १० नदहसंधि

वा० क

लुधनयक ॥ १ ॥ वैपिधुमयवीनं सर्वद्वयसमाश्रितोऽश्रुयाकानथा ॥ गनञ्जिन्मपददसना ॥ विरुनकूलया ॥ गनरावयत्यनमं पदं ॥ १ ॥
 त्याहरगवानवजीवज्जकसुधागरः सर्ववीनसमाश्रितः ॥ गनद्वयसत्त्वयनं सुखं ॥ ॥ १ ॥ किञ्चिद्वदवाही कल्पमहाकुरुयाजहनुका
 दयनिर्भयसेविधनात्यलिकृष्यकादृष्टपटलः ॥ १ ॥ १ ॥ अथरः संभवामिस्वानास्याहुरुहदरः ॥ यनविरुनमाश्रनथागिनी
 सिद्धिमुहमां ॥ स्वीकुस्वसक्तियागिनः ॥ कमस्यां कमनिस्वर्यं ॥ सर्वाकास्वसूफावजागरुसोख्यमहागुर्भं ॥ नानास्थाननागत्याहुस
 र्वविंदकिवात्मनां ॥ धर्मदिसनाधिकं चडकि कंदधलकृष्टं ॥ १ ॥ १ ॥ अनास्यालकनं वविह्रयासुखदायकं ॥ आस्यं प्रसूलिकं ॥ १ ॥ यम
 मधसना नूहं ॥ त्यागं गंगं महदुर्गं गीर्गं वायं सुसयकं ॥ स्यर्गं वस्तु रुनध्वेवपूयादिगन्धकं मेकं ॥ प्रियदर्शनामागादि सुन्दरीनां तु
 वास्तुकं ॥ वृक्षयुजादिसर्वेषु पिबन्ति सुनयानया ॥ उद्यानं वापिका ती नविअकंगमनादिना ॥ रुद्रिर्गुज न ॥ १ ॥ १ ॥ गुनूवाकमहासुखं न

[illegible]

दा०क

दिगमनासकै॥ कृष्णस्वपनिष्ठागच्छन्स्वस्वात्पादनं॥ पुनर्मागमि संसाधनचक्रसंवनयगवान॥ कल्पिकावचनं गृह्यया आमक
लिकावच॥ ००॥ द्रियां धामवेध्या स्वरावचार्य नयव॥ सहज संसागनिर्मात धर्मकायादिक पृथक्॥ संज्ञा ज्ञापय सुसर्वाया संज्ञा र
वार्ध्ववचन॥ ००॥ पचत्वात्रिकी सोखी प्रविधानकृतादिषु॥ कुरुयुगस्वरावर्जं सुसोखी वक्र कुरु चया॥ सत्यानुरुषु सक्तजीविश्वरूप
चस्त्वलजां॥ द्वापनमूर्ध्व सोखी चकालिनं सम्यकस्त्वलनं॥ सर्वबुद्धगुणप्राप्तप्रविधाने ००॥ ला ० स्वयं॥ ००॥ सर्वसोख्यवस्तु सिद्धांतिं
चमहाह्वनं॥ ००॥ तीयावस्तु सोखी चषादधमनन्दकलेनात॥ धनुषादसविह्वयाभु रावकनिर्गच्छत्॥ ००॥ षष्ठी चतुर्विह्वया रुकिनामृग
पावगमः॥ ००॥ पद्मिनी संखिनी चिरी नीहस्मिनी रगधमयो॥ चक्री वकी रुपट लक्ष्मीदिनी पूजानेनु॥ वलापा ना तुल्यव पादावचद
नार्कजां॥ ००॥ नकाचैक सूर्याकि कां ह्वयावनमहोषधीं॥ सोख्यदानन्दकात्रे सुसूर्यादिक न॥ ००॥ दधम॥ मनधमकृष्टक्रिया सोनी रावनाया क

नंगम॥ चतुर्थवस्तु वक्रकं अष्टसंघातं मानवाः॥ गङ्गा किं च वक्रि (खेवचनानि र्मु मकिस्तथा॥ यत्किं च वक्रि कृत्तचनकि इव वचनं गो
यीष्टा हि चथा गिना अष्टवस्तु सख हं तुना॥ एवं चतुर्विधा वस्तु स्वाना स्यात् वसं हि कां सम्यक् विपदं अणु वर्तु र्गयस्य कस्य तु॥ सम्यक्
यास्यामयुस्ति स्तास्वानमूखायु नाचतु। मरुस्य हावया गासा हा विना मध्यमधु ल॥ उं व वक्र नास्वानन कू आ कस्यो टाय उ रं हं का हं ट हयं
ट हं हं स्वा ट ट हं स्वा ट हा हं ट स्वा हा॥ ॐ निस फुं सात्मकं मरुं प्रक्षु पायसु सिद्धि दं वक्र वर्ध महाघा नां भर्षवधु ना हाय तु अ
घा टं कर्क टं ननु स्वाधिका नपर्व र्द को नउ पटी पीनिवासी च सर्वान स्वस्व क्रुज्जो। वध्य कर्म षट् वी तु द वा सूनादि मरु विन्॥ पचभ मृ गं म
हादीपं पूजा च सर्व कर्म धा॥ इदि पमासना कृ य अमृ गं च सर्व संधिजो॥ वक्र ना निका प्रथा एन क ल नाकादि नादिना। काया वक्रादि म
रु व अ धिष्ठान कृ र्ग च॥ अथ ग२ संप्रवक्ष्यामि वक्र या गिनी या विगं वां अया गिनी संपूष पी ० म र्ग न भ क र। वा ना ही स्व गृ ह पूष

वा०क

पूर्वसवादि कानयता॥ पूर्वसवाविना कर्म यथा कस्य यविप्रमशकृदप्रकृदहाम्यां च सुकपकृक (येवच॥ निमकृयसुचरुनस्रानसोः
यादियुकिदं॥ स्वगुरुं पूजयधवीं पूर्वालिमुखसंस्तिकं॥ कंकुमंकज्जलं चैव सिंदूरं चैव दमस्तकं हस्तयादमुखं चैव मणिप्रोक्षणं चैव
रुद्राक्षमलं विनंतीं चैव कंकुमनसूत्रं चैव सूर्यपदीयधूपनं चैव कंदिलं चैव रुद्राक्षं चैव सूर्यनवविंशतिं चैव रुद्राक्षं चैव रुद्राक्षं
किंकयावदागोत्राद्युक्त्या खलु॥ खलु यानत्र ययं च मत्स्यमांसं समन्वितं॥ लावयन्मदुमूदां च वीनसं कनकदंष्ट्रं चैव रुद्राक्षं चैव रुद्राक्षं
ऊयधवतासदा॥ वलिपूर्वगंकृत्वा नृपिनीयं रुद्राक्षं॥ सुमिगीतसमायुक्तं वज्रवावाही पूजनं॥ अस्त्रपत्रासुमिपूजनीयामथैवमांसं
नपि वज्रद्वयः॥ तां पूजितो रुद्राक्षं वनाजनस्य श्रीवज्रवावाहि वरिं गतस्य॥ संकितं चिरुवद्वारं वंकितासांकं नस्य नियता वनाधिपति मक्ष्म
कया एतन्मनसुष्य किमाकन॥ निमिरुयागिनी पूजां भक्तिपूष्टिं वलकथं॥ गुणगुरुं कुरुलं कर्मकोमानी नर्या धकृ॥ धोहसोमर्दिनं

४८

यनमूसे सुखनचरसा॥ कननागपुनर्वृद्धिर्जायतदुःखमाप्रयातु॥ हसितो मंचकितावां कूर्चनपपूजयकिं नरक॥ असाधं रुद्राक्षं नागं
जीवितं नृनसं सय॥ आदयं किपूजययधमर्दिनं नयनद्वयं॥ कुरुनमचैवार्कं कुरुनयं साधकैः सहसं मुखी कूर्चनयकं यमयमं
पृथक् पृथक्॥ कलिरुवकिं सर्वं कोमानी मयकसदा॥ पृष्टनिनी कुर्यान्नादकं वनखसंक्रियतु॥ पूर्वर्तविकर्माणि नरुपासां सरुक्र
धम॥ रुद्राक्षं वसं रुद्राक्षं मन्त्रयानं च सर्वक॥ अकस्मादागमूयतीक्ष्णसुखाघाटमादिकं॥ गीतवायकुरुं च दं हसितनमूकर्मक॥ नाज
जोनरुयान्याहकोमानी नरुयध्व॥ नवकिमधूनापित्वा रुद्राक्षं रुद्राक्षं ननक॥ महाभाग रुद्राक्षं पूजा कालं वलकथं॥ रुद्राक्षं
मानिसर्वा निविद्विषं दिशिलाकयन॥ अनाचानकुरुं धीधेनाकुष्टादवकां मम॥ अनाचानकुरुं धीधेनाकुष्टादवकां मम॥ अनाचानकुरुं धीधेनाकुष्टादवकां मम॥
विरुयाकोमानी सूचयत्युता॥ उंजमानकुरुं धीधेनाकुष्टादवकां मम॥ अनाचानकुरुं धीधेनाकुष्टादवकां मम॥ अनाचानकुरुं धीधेनाकुष्टादवकां मम॥

नागधरायक। यादंघर्ययनरुसोस्तनसागार्थकावधं। पूजाकालं पुत्रावधामन्यायं विग्रहसूचकं। नरुदिकावधिरंयुजायाः सिद्धिल
 कर्णं। रुक्मायुजाप्रयत्नसाधकालकथसदा॥ पूजयद्वज्जवा नहीसर्वकामरुलपदा॥ ॐ हारुगवानवकीवज्जकसुथमगरु॥ सर्ववीनस
 मायागाद्वज्जवा नहीकल्यकं॥ ॥ ॐ मिथीवज्जवा नहीमहानरुवाजसुखायवस्तुवज्जवा नहीपूजाविधिनिर्देशपटल॥ ४६॥ ४७॥
 ॥ १२॥ अथ नरुधूकनासाकथकलपुविस्तनं। प्रवृत्तिमर्षमत्वाथेयनिवृत्तिरुदस्तुति॥ ४८॥ धूकनीसुसुकर्म्मसुसुहाननिनिदान
 धी। सुवीवज्जसुखावापिसुवसुर्वगामिनीं॥ वाधिविरुमहानरुदकमलामृगकद्वनी। नमयंसर्वनागादिगुर्यागीरमनरुनां॥ अथ
 पुजमसुदवीगर्हायुत्यादलरुधर्म। पथमंकाकवहीजंयतिरुंमा। उयदक। नकनाजीपुदनय। अलकसुनसंनिर्हं। मासमकसुि
 त्याउखा नासासुवंचनान्॥ धूकनासा। उसाखात्मादादीयानिधिधनधनं॥ इतिवावमुर्यय। अडंकिनीकर्मस्वाकनान्। मर्थनीवाधः

४८

जिआमादासुर्वसिद्धिरुलादयान्मममगयाननरुसुअन्यादसमसुदनारु। प्रवृत्तिमर्षमत्वाथेयनिवृत्तिमर्षगावनारु॥ द्विपदकुर्यादा
 दीनांवायामाजविक्रयकी। निवृत्तिरुदकानिर्हं। नमयंसर्वनागादिगुर्यागीरमनरुनां॥ अथ
 रुयायसुनूपिकी॥ ॥ ॐ यथावधमकेनामपदीयनिवागिनी॥ मरुादिताउदवीनांस्वस्वकथायकशिधी॥ उंवेदंजुकाधूकनावालासाः
 गथमूरुंतीरुदघटधरुययटहंस्वाहं। हारुउंटरुदस्वाहा॥ ॐ निसुयजिंमसकंनायकीववथागिनीं॥ मधुलसुननायासुकापिनाः
 यागमागवी॥ सुवदयमहापापघातपुनिरुसुगानिगु। काससुवदयपापकीलकानिगु॥ ॐ यथावधमकेनामपदीयनिवागिनी॥ मरुादिताउदवीनांस्वस्वकथायकशिधी॥ उंवेदंजुकाधूकनावालासाः
 पार्थन॥ चकुरागिकंठानंनारिपनंगुनसमं॥ निराविकंवरुंरुयंकर्म्मकादलयाधनं॥ रुदकनावांजिचकमसलायां। उरावय
 न्॥ रुकिरागिकंमालंचवज्जपनंगुचकजं। अलचकषम॥ चहीनाधेकंरुसुलेकं॥ नरुानिसुर्वकादयाशुयंनशिवचककी। नानर्हजिगु

वा०क

संज्ञानात्रिर्युहाद्यानरागिकां॥ गदधनवदिकाचारिः कथालयकृत् कासुथाधनधीक्षिणीकाशकननहा नार्चयद्विका॥ कमनीयस्तु न द
 नश्रुतीपयिकामुथासुक्तांगनिर्गतासुवीविश्ववक्त्रमहाशक्तिं॥ किंकिणीजालवक्त्रेयपटाकापथनादिगं॥ गदाकाकुं वसव्ववनरका
 दिसमालिखक॥ विश्ववक्त्रावलीश्रुजालावलीश्रुमयनः॥ गदाश्रुवक्त्रावलीश्रुहृन्मनूनूपनारवक्त्र॥ कर्त्तृकावलीयशास्तुमशुयानां
 थेववागर्क्यथेस्यवाश्रुनन्तावलिस्मालिखक॥ ४४४४४४नायकांलिखावुच॥ अग्रादिसमनरुक्तीवीजविनोसकंकूर्याकृत्कर्त्तृकासर्व
 संरवां॥ अथवाकार्यादिकेअपिअरुक्तीसर्वमधुलं॥ तथापिमदिताकावेवीजमधुलपागश्रुजक॥ पद्मदलषकाश्रुवपंचामृत्कन
 टकाकलसायविदयांशुसफर्तिनानिकानयक॥ कालसूत्रवह्निगंतुलकाश्रुमृच्चरीवकां॥ मनुयूग्मचक्रधृष्टयश्रुनन्तादिओषधी॥ ग
 दकपल्लावादिपंचामृत्कनयक॥ वलिसर्वधर्मधरावनादिसमनरुक्ती॥ दायथद्वजद्वीनांरुपालादिकाधवान्॥ पंचामृत्कादिरुक्ती

[illegible]

वरुने॥ एवमद्यादृष्टमका नं स्वसाजा रुमसकं धार्यमानं सचिरुनदयव न धावक धृक॥ दक्षिण ॥ उदधे वडासिक कसलकं पन
 सुकर्त्तव्या धीवधूलहीनं वमजलं वकदमनूक लिकादहं चरिषियानिरु रूस्मी अरुना कुनिगं उरुह डिदुर्गुयजालिको॥ कवर्ध
 कालकेलं वरु वनूयं कुकमाग॥ वामघ ॥ घनदकं मूषलया डकपालकं धनूखदांगयसकं गुपिदनिगर्जनीवच। घघनमाला
 गुरुवलाहमगमनधूलिकं॥ शकं उकाउचर्म अर्लं विरुवअंनिका॥ वादनविकयीसिना हनिगुमसकं। कं कालंदनिकावेवनगुवकगुध
 वरुकी॥ धानिअनंकीलकं चवीजयुनं कनपयकं॥ सचिं कुकायकर्म अमयवृष्टि वक्रासिकं। एवकमसुविह्यादासयकिगं मालिका
 यद्विकयकनायां चदनिकवर्मा वनूकक॥ उधुअुकगजा नूठं हाडिका विघ्नना धनं। सर्ववर्धस्वरावागुअथयानायकवर्धवत॥ मूधु
 मालादिसर्वधे वलाहनधनिकायजो। एव समग्रयाया सच विह्यायकिविंवकी॥ सम्यकस्मगिसनूयनरावरुदादियदासिको॥

समाधिजालमायूर्यपरास्ववसर्वलीनगागलावृद्धत्वमाश्रकिना नानिर्याकिजं कुर्वी॥ स्वस्वरायया धर्मअदसयं किस्व (ग) गुजो॥ सुअनः
 अरुजमूदिअरुअरुसहजसहाय ॥ कंउसना। यधुसंसावहृदखनहाजियससा ॥ वृद्धजना॥ अथक ॥ संपवअमिवजया गिनियाचिकं
 वाकथागिनी संयुअपी ० गुमनं नडाकक॥ अथरुगवान्स्वामियागुलकधमूरुसं। मृमयं कर्मजं चैवकोसकं गामुलाहजं॥ हमजं वूय
 जं वापिधुकिजं धीखजं कथ॥ नालिकलवर्धं (ग) रूकथनकावर्म रवं॥ गृ (अ) रुवंचकायायं पायानंचवि (अ) यक ॥ अकखलुं धिखलुं च
 चरुधयंचमभवच। घटयलुं सफयलुं च अरुखलुं पकिर्लिनं॥ वाकध क्रियावेधसुजाकीववर्धं कजा। स्वकवकडिकधमपी कपिंगल
 मवच॥ रुसवर्धविवर्धवनानावर्धवकीर्लिन॥ हीनाधिकअनकनूर्यनानाविविधिविधिसुथा। द्विपूटंगजयुं चवजकाकयदं कथ॥
 स्यामदकं वपी कंचरिअजऊं चिकं कथ॥ अकसर्वनिवीअनयनिकारुकावयत॥ सुसमावकधद (अ) सिधिलयासमयपिवा॥ संकिना

या०क

[illegible][illegible]

वा० क

नादिसुन्दरीभावाककं॥वृद्धयुजादिसर्वेषुपिर्वीरिसुनयाधया।नानास्त्रनकागत्वातुसर्वविंदकिवात्मनो।सकंदिदमाधिकंचनि
नूकिर्दधलकृष्णं॥उद्यानंवापिकादीनविश्वानंगमनादिना।रुफिराजुन०००वगुनूवाकसहासर्व॥नननानीयुधुझनाहा
सालास्यकृयाचया।यतितानांमुसैनामा०००स्वनलंरुजंरुवां॥वृद्धधर्मचसंघंयुजुतावदनादिना।गुनूगोववनासोखीदकि
नादानयाजना०००र्यायथादिधर्मयुपवृत्तिसर्वकामया॥विधसर्नवादिनांचवृद्धधर्मयुस्यपन॥यागिनीयानराधंरुवसुः
लंकानयुदन॥राजनाहर्ममूत्यायद्विद्यमलनात्मजा।दानादियानमिनानांकर्मनासोखीगिष्यतां।मेहीमृदिताकनूधमयक
सर्व(गयक॥०००॥नविहूनवादकमध्यमनपुस्यपनाक॥आस्वासदानसर्वयुजुयवादविवाधन॥दहाकमलकर्मोदुपा०००॥
ध्यायकापनाक॥वाधिमार्जनिषर्हस्यवीनावाद्यदर्मनाक॥कार्यनिवधककयुगमगुमनिवासिनां०००॥वावस्वमकंरुदि

५३

नीयाकथरुपिवा।वृद्धयवंगतासोखीपनमार्थयदीपनाक॥सिद्धकथरुआलापेयागिनीनांरुवासर्न॥धर्मसंज्ञासहा(थयका
लसंज्ञाकुरुवनां।यप्रकिपुहानसंज्ञागत्वावाधननामकं॥मायासंज्ञापदा(थयधनादिकर्मसहासर्व॥पिरुयुगीगतानास्यक
माम्वादिमनात्मकं॥कमस्कंधयविद्यागा०००नस्कंधयात्यादनं।पूनर्मागकिसेसावजवात्रिकल्यंवाकल्पिकावचनंगु
कृष्णामकल्पिकावचन॥०००॥दियाधमवेधूर्यस्वरावनायकयच।सहजसंज्ञागनिर्मानधर्मकाययुमयच॥संज्ञाकायाशु
सर्वीत्तामसायकृवाधव॥(गयचत्वात्रिकंसोखीपदिधानंकृतादिपु०००रुयुगस्वरावजंसोखीवजुकुर्नवया॥सत्वाकुरुयुस
कजाविशकयचसुलजां।हापनमर्दसोखीचकालिसम्यक्सुलनं॥सर्ववृद्धगुधपापपदिधानं०००रुलास्यं॥चवंचसोखीव
सुहृदिर्दिगिंमसमहाकुरुं।रुनीयावस्वसोखीचवादमानन्दकल्पनाक॥अगुवाउसविहूयास्वरावजुनिकं०००॥अधधिवचुवि

धं विष्णु या रुकि कामु नयान ग० ॥ यदानीं संविनीति की हस्तिनी रंगनामया । चकी वकी उ पटलं कंदिनी पृथु जालक ॥ वला माता कुल
 स्रवया भवचंदनार्कजो । नकावेव सूर्यादिको रूपाव नमो मधी ॥ सोखादान नन्द कालगुह्यादिक न (१) रुक्षम । स नक्षीर वृद्धि याः
 गोनी रावता आरूपां रगी ॥ चतुर्धा वस्तु वरुण अष्ट संख्या च मानवौ । गच्छति या वति (२) वेव व न कि पुर्म रूपा ॥ पवित्र व कि स्रवच न कि
 इ न कि उ व च ॥ गो र्या या शो या गि न्य ४ अ व स्र स ख ह गु ना । उ वं च तु र्धि धा व स्र वा ना आ क ल्य सं रू कां । सम्य क स्मृति प दं स्र व रू क य स्र क स्र
 उ ॥ सम्य क व्या या म य स्ति या या गि नी नां य ना च तु ॥ मं उ म ह व या गा मा रा वि का म (३) म धु न ॥ उ व द ज टा स्र न न क का क स्रा रा य उ क रू
 का हं ट ह य ट हं रू हं स्वा ट ट रू स्वा ट हा हं ट स्वा हा ॥ ०० कि स म्पुं ण म्प कं म कुं प रू पा य मु सि हि दं । न क व रू म हा नो डं (४) य व (५) ला
 हा म उ ॥ आ खा रं क रू टं न शु स्वा धि का न प व रू की ॥ उ प दी य नि वा सी च स र्वा स्र स्र म्प क रू जं ॥ व र्ध क र्म य द वी रु द वा स्र ना दि म लु वि न् ॥ प

३४

कामु काम हा दी य पूजा च सर्व क र्म ॥ रु दि य या स मा क रू अ म्प रं स र्व संधि जो । स मा धि जा ल मा पू र्य स्र प्र का स्र व नी न का ॥ ग ला व
 रु त्र मा धा कि ना ना नि र्या दि क रू क रू ॥ स्र स्र का य मा ध र्म ध रू द म य कि स्र (१) म उ जो ॥ स्र म्प न अ रू ज गु मू दि म्प ग ॥ स्र ह ज स्र हा रू क रु स्र
 ना ॥ य गु स्रं मा न ह रू ख न हा जि य स्र सा रू व रू उ ज ना ॥ अ थ न ॥ संप व आ मि पं चा मू र स्र सा ध न ॥ य न स म्प क वि धा न न स र्व सि हि रु
 ला द यौ रु म्प न ग रू स्रं जा न ग रू य दि धि (२) म पि कं । रु स्रा द्ये वा च रं ना म प र्वा ना सि हि स्रं म हा ॥ स्रा म व रू स्र रू डं गी क रू ता न क ना
 च न ॥ रु स्रा न त्र क ली पा का सा ध य स्र रु म पि च ॥ स्रं य रू क रू ग रू डं गु शो का गी रु नू द य मि नी ॥ खा य या न न स्रं य स्र म र्पं द ला वि च क रू य
 रु क रू (३) कं डू नू का र्म अ न्या न्यं गु रू डं गु म ह य रु ॥ रु स्रा न ट क रू नं ना म र्वा पि का व रू थ ग ता ॥ पू र्वा क रू वि धा न न स्रं य रू सि हि च
 जा ये न ॥ आ दि पू र्य प्र ग रू स्रा डा क रू कि उ की रू ति ना ॥ स म यो य दि स्रं ज य मा रू गी स्र व य स्र दा ॥ मां स म र्पं त थ न कं ग ह य स्र वि च क

दा० या

[illegible]

ॐ

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

[illegible]

वा०क

[illegible]

धनूखजाययस्कलुपिरुनिर्गुनीवच॥सूर्यनमालाद्युषवंधिलाहमभनधुपिकं॥रुकाउच्चमंचस्वविकथयानिका॥कादनचिह्नि
कचीवसिलाहसिगुमसकं॥कंकाचंदसिकाचेवनगवृकगुदावरुकी॥रुनिअनंकीलकंचवीजपुनंकनपगुच॥सुचिगुकायकर्मच
मघट्टिष्टिष्टिमिकं॥उर्वकमगुविह्नुयाडासकनिरुगुजाजिका॥अधिरुषकनाखीगुदंकिचर्मावनूधक॥उधगुकगजानूठंरुकिः
गाविघुनासिक॥सर्ववर्धस्वरावरुअथवानायकीवर्धुवर्॥मूद्यमालादिसर्वचवस्कारनभानिकावथरु॥उर्वसम्यकव्यायामंचविह्नु
याप्रतिवीवकां॥सम्यस्मिन्सूत्रयनरावथद्विपदायकं॥गावहिविधमाख्यातंमनीनंचप्रध्मापयि॥उरुननासिकाद्यानंचंदवाचक्रमान
उ॥आयनंप्राप्तसूर्यस्यअवधूकीवानूक्रमान॥यंकारनंसूचिर्गुद्यमकानमध्वाहिनी॥दकाचदकिद्यामादयाकावद्धहंकिमध्वाभा॥अ
कानास्तिनिमाप्रतिवंचनाकाकाकिनी॥नाडीसर्वसूखात्मानंनडीकालरुसंगिरु॥समूदायादुनंपचमगुलधूचसूचनान्॥उषूराव

कस्वयंयहिविशाकालरुवंचनाह॥कमकंचयुधैचपीजदिमननादिकी॥मृगनामविकल्पायनीयकखचनीपद॥वर्धयंरुवदगुः
 कोयिकंरुविकंरुथ॥विजायुधैरुवणादिवावाहीरुयथजमाह॥प्रहायधर्ममिणाक्रमधमधुलनायकी॥सफणिंभक्तकंयागंम
 रुहनात्मकननु॥उंआ॥सहैरुहवमुशुयजमहीदासुदकावाकीयथहैहैहैहैरुहदस्वास्वाहाहाउं॥ॐनिप्रह्लापायात्मकंयागीनी
 वीननायकी॥यमदादीप्रयागनरुकथयमरुकं॥अथागंसेप्रवक्त्रामिमधुलालममरुमं॥नवंकश्चिदध्यायपंचयुधैचकामरु॥
 पूर्वमवास्वचक्रं॥प्रथमंदवतात्मकं॥वर्लिचदायथदण्डयुधैसवादिकात्रयह॥धीनागंहीनधर्मरु॥प्रतिष्ठावल्लिपात्रग॥हाममधु
 लरुह॥सर्वविद्यासकामल॥मरुनीनिप्रमारुकावृयवायियदहीन॥गुनरुक॥रुपालयसम्वनादयप्रकाशित॥विज्ञानचेष्टा
 लयनमधुयसुविहमिष॥आदिसिद्धिभक्तमवकुरुमधुलमालिखत॥पत्रिकल्यतरुहागनकुर्यात्सननादिकं॥हसंदत्ताऊपस

नुहंकात्ररुमिसाधनं॥मधुलैरुमिरागस्यदिगुहैरुमिसाधयतु॥सेवसकिरुवत्पृथीस्वचिरुंयनिगुहिरु॥दवतात्मकमाचार्यसर्वव
 द्यात्ममूर्तिरिशवजयधनावीनाअ॥धयजकिनीसह॥वज्रमूलालयंधीमान्दं॥अवादनकत्यना॥उद्युदयत्युदकायासदवासनगुह
 काना॥अपसनेरुदुष्टविघ्नायकविकटपूठना॥अयंकनूधवल॥धीमान्प्रकावकप्रयाऊनं॥वज्रधदीकवपूषासुलयामिहिकाय
 जान॥लेयथयदिकचित्सविशीर्थदन्यनान्यथा॥रुमिपत्रिग्रहंकृत्वाधीमांजाकात्रवधयतु॥पृथीवंकानजायीकांकनककलहाधनि
 नी॥प्रतिष्ठादकि॥हसंस्तुतिंकृत्वाउयाजयतु॥हमकिरुहासिलंदवीअमूकाहंमधुलैलिखत॥पृथधूपादिनापूषाअर्पंदत्ताविचक्र
 ॥॥रुगवनकाधसहकंमधुमधुनथगकं॥ॐहमिलिखिकंनाथमधुलैसहजादयं॥विद्यानामनूकंपार्थयूषाकंयूजनायच॥ग
 मरुकस्यरुगवयुसादंकुरुमहंमि॥समन्वाहनरुसंवृद्धा॥यवान्धमरुदवता॥दवतालाकपालाअरुनासंवाधिसासिता॥सासनाहि

वा० क

नका सर्वथ कविद्वज्वरुयाः। अतर्कयामपादायसमिधस्यचनरुमममसुलंवल्लिखयानिबजवावाहिमूरुमं॥ पञ्चरूनाचिर्गसुर्गपञ्चविं
हाकिरुदिर्ग। वलयसूत्रनया न्यसर्वधर्मस्वरावरु॥ रूकावावायथागीपचशमृरुनलपिर्ग। चर्कद्विगुसिमादीर्घानविंहाकिरुमिः
कं॥ प्रिजःकावेस्समृवा र्थनालोधर्यकिमूठिना॥ यस्सुर्गपाकथहीमाकथेवगायःप्रसूययत॥ नवनसुनियूकानसूयमाननवावृध
। सुर्गससूत्रयस्यारू०पीसहजादयमसुलं॥ अर्द्धहस्तासमानस्यहागरुसुर्गुजावरु। पथमं वृक्षेसूत्रनद्विगीयकायसूत्रक॥ पश्चिमः
दक्षिनस्यननियर्गुनूसंस्तिर्ग। पूर्वोरुनदिगस्तु नमिथीकिष्ठसमाहिरु॥ आदोचतुर्गुधमननसूत्रयदवकाष्टकंगकाष्टगुधमानन
काष्टमकंप्रसूययत॥ पुननसूत्रुलो०काष्टकाष्टमकंप्रसूययत। ककचद्विगुधनेवकाष्टमकंप्रसूययत॥ ककचतुर्गुधमाननकाष्टुसू
त्रभरुत० पुनर्दिगुधमाननकाष्टमकंप्रसूययत॥ ककाचतुर्गुधमाननकाष्टुसूत्रयतु० क० क० चतुर्गुधनेवकाष्टमकंविद्वर्ध०॥ क

ज०

दर्शवियुक्तलथीरूतिमधुलसूत्रकं। सुर्गकिंउचतुष्टिमधुलंसूत्रलकं॥ आचकवाउयर्थनंरुयद्विधिनादिर्ग॥ पञ्चननमयेऽप
रिन्नधकंदलादिदि०॥ स्वर्गपीरुंरुथानकौहनिर्गंरुसुमवचजेधनादिदि०गत्वाआर्योवाममूर्धिन॥ पाकथसंचलयांचसूत्रुफनसमा
हिरुंयावन्मागंरुलेनेपापाकतीयापनस्यनं॥ सुलमागुयद्याधिक्रुयाधननागानं॥ वरुंनकलहंवेवद्विन्नयामुत्पसंरुव॥ पूर्वोदु
महास्वकंदकि०पीरुसंरुव॥ लाहिरुंपश्चिमंरागंमनगकारुनसंयुर्ग॥ मधुकारुमिरागंउ०उ०कीलप्ररास्वर्ग॥ कानरागयसर्वथ
दाननिर्युहसंधिषु॥ खचिर्गंवरुनलेसुसंलिखस्समाहिरुं॥ वज्रपंजलमधु०गु०धमनाष्टकरुषिर्ग॥ चतुश्चगकल०वेववरुकाक
लैकिन०। विरीषधपूर्वादिदि०वासावरुंनसंस्तिर्ग॥ अ०हहासजेधन्यीलकीवनरुकासर्न०पावाधकाननेमर्थावायुर्वाकिलिकिला
नज०॥ पूर्वमिनीयअ०वर्धकंकलिवरुवृकक॥ वरुकनंजक०वेवलटापर्कटिपार्थिर्ग॥ ००००धनद०वेवना०ग०ध०धनाधिप०जेधमः

न्यावदुगासनंनक्रसंखनिनाधिप॥वासकीरुदक॥वेवककीटयप्रउववमहापमरुलरुलदकलीकर्मखपालक॥गर्जिभापूरिका
 धात्रआवर्तयनचवचपनाधश्रुथमवर्षअनमयाधिया॥म॥अपनेचविविधिकाकालकगृधृगुमलिका॥वित्रीवन्निकासिंहमूष
 यापुषधाननासर्प॥गमसूखदूखविचनमवल्कके॥कंकालगुलरिनावलम्बाईदग्धकाशिन॥कपालजानूकवन्धहाउमृदुक
 कीषध॥अनकसिद्धविद्याधने॥समयाचानयागीग॥ये॥यकवताननाकसादिरि॥महाकिलिकिलायमानानिमहासिद्धिनिद्धिसंपाफा
 ॥आचार्यगणधम॥नम॥दृष्ट्या॥ॐ॥एहगवानुस्वामीवज्रवाहाहिनायकी॥सर्वयागमहावीनवज्रसत्त्वसूखात्यन॥॥ॐ॥निवज्रवान
 हिकल्पमहाकुरुनाऊमधुलसूयाकनयावस्तुत्यलि॥नकनअनुर्द्धापटल॥१४॥अथवज्रवानासावदथनमृत्पूवसंगन॥वृश्चि
 रुतुसंरुतंकारिकरुदयीमूर्त॥वसंनविषयकालइरीत्यलिलकदी॥यमस्यसूदनीसाउमृत्पूवचनवज्रया॥हाद॥भकानमहाचक्रपनिव

हस्तिकानयन॥पञ्च॥पञ्चविंशति॥दससंचयान॥पुनर्द्वादशकाष्ठपुष्टिकअसंसयानि॥न्यानि॥दंडमासाचकिथिदिसंनथ॥ॐ॥यू
 गिद्धयवासनेकमारुपअदधीदिमादिउ॥दिनमकादहानाउंति॥वज्रुवनाकविर्चरुभनसावादि॥कमारुप॥विं॥भसकं॥सू॥॥पा
 ॥१॥किमुजानीयादेका॥विं॥॥त्यात्मका॥उकानविं॥॥त्यनका॥नमका॥म॥कियां॥समसफगनसूर्यजममकेकुचंडमा॥पूरु॥कालसमा
 प्राणिउकवानवज्रसदा॥अ॥कलालदिनाकवषाउ॥॥वज्रसंख्या॥वर्षक्रमनसं॥॥ध॥॥दास्यकिवनूकमा॥॥कस्माच्चइ॥निनीदवीरावय
 समुलालमका॥यस्मिनादिरथपानन॥कस्मिंवायेहेदिसंमर्त॥उ॥साखापूवमूलं॥सासंकुत्याउगुफका॥सर्वयूवसर्वसंधिसमयकालक॥क
 मर्मवन्धरुमानवर्मकावर्मसर्वसूचिकं॥अ॥॥ध॥॥कयकंकुत्वागी॥वर्वकिमुपकाल॥॥वागनिवदुपापानिनस्यैकिकर्म॥ध॥स्वयं॥दानंदाय
 थरु॥॥गममहीयादियानकं॥वाधिविरुमामा॥रुसुंदनी॥पिवरु॥॥॥भकि॥कंचपिवरु॥मात्यकंदापियव॥॥रु॥कय॥ली॥न॥जा॥उ॥त्यं

वा.क

[illegible]

सुप्रसन्नानदी नैव पंचामृतं स्वयं तु ना॥ प्रिवक्ष्यामि गुणानि वापि नृस्युर्न स्युः किकालया॥ अकार्त्तनाम किं न तु अक न लं तु मा प्रया न॥ न स्मा यम
दुर्गीरुया सम्यक् ह्यधर्मकां॥ वक्ष्यामीत्याजका दुर्विविधं तु कर्म धर्ममर्क॥ उक्तवाक्यं समाख्या कं द्वितीयाध्यात्मिकं मर्क॥ प्रिसृष्टिहा वथ द्रुं पत्र
तीकालवाहिनी॥ हंसवानधर्मं प्राप्य पीवत्यधनवानूधी॥ पञ्चमृतादियत्किंचित्प्रविष्टं न स्य सध्वक॥ पीत्याजनाम नैया कि व ज ध ना पदसर्क॥
उमहृत् अजा रुं अन्धरु रुं सिस्मि रुं अजनाम नृपाव रुं यनि रुं॥ म न द यो नै रुं वादि अ न रुं अ रुं नि पा य न पु न रुं रुं उ॥ न द्वि पूर्व स म पा
धम वामद क्रि द म ध कां॥ आया म व न ध रा व पु न र्य म रु न म र्क॥ दुर्नि प रु द य हं स अ व धू नि व य र्य प दं॥ ज वं व रु उ का ना रु ल रु थ रु व रु द्धि मा न्
किं व रु ना रु उ क न दान पा न मि ना दि कां॥ वा ना ही पू ज नं कृ त्वा दी ना धर्मं तु कृ ता र्च दी॥ या य म स थ स म्प क्क ष वं द प थ रु रु ॥ अ ध म रु सं प्र व आ
प्रिवक्षाचार्य विधीयत॥ विनी क धम न व धम रु स र्ध स र्ध र य प्र द ॥ म रु रु रु प्र था ग स्य रु पा ल् धम रु का वि द ॥ मा ध र्य वा क्यं स र्ध ष य रु व स र्ध न रु

वा० क

सदा॥ दानादिरिव नानिर्ह्यथा गन्धानां निरुत्पन्नं न॥ सत्यवादी अहिंसा च का नूष्ण हि रचक सा॥ समता चिरु मूढा दुःसत्त्वानां नाथ कुरु के॥ सत्त्वा स
य वि० धर्मं च अना० धनं च वाचं च॥ ॐ प्रियदर्शनं नृप वान्॥ अरिषकार्थं नृत्वरू० स० ट वाक् गु० धा दधि० पी० स० वा सदा निर्य
आचार्यो वारिधीयक॥ आचार्यं धर्मिण्यसंयमकं कूलिना धर्म उत्सव॥ नि० कुरु कं का धर्मं कुरु कुरु मद्धम संयमक॥ अरिमुखो क० धर्म न च यन० पा
सिंच निर्दय० प० नृदया रित्तापी० वरुण्यं नृधम सदा॥ धीना विनीता मरिमा नृकमा वा ना र्जना० भ०॥ द० भ० क० ल० प० नीत्या गी सत्त्वानां प्रियदर्
शन॥ न स्यु० धा स्य नृदयं च कालिकाग्निर्विषादिवरू॥ गुनूयुक्ता सदा निर्य सद्धर्म दर्शनात्सर्वदा नादिरिव नानिर्ह्यपनलाकारिका क्रि०॥ कर्षा
हिष्य प्रमत्तयूदी कृत्य त्मधु ली० रु०॥ कुरु कुरु लियूदी कुरु अर्धथ कुरु कुरु मानस॥ त्वं म० भ० स० महावीर्या गिनी वन संपू०॥ ॐ शुभ्य हं महाना
थ महावाधिनयं दृढं॥ दहि म समयं कुरु वाधि विरुचं दहि म॥ वीर वीर नृधम अवा ना ही ह नृक स्य च॥ गु० क० पी० धादि सं शुद्धि कथया दह सं

हिंसा वृद्ध धर्म चरमं चरद हिमहा नद्य गयी प्रवहाय स्वमां नाथ महा मा कृ पूर्व वनी ॥ अहिवत्स महायानं मरु चर्या नय विधिं ॥ दशयिथा
 मिरु सम्य क राज नस्य महानय ॥ संपाका हान मगुलं वज मरु उरा वने ॥ तस्मान्म किमिमी वत्स क नू सर्व रूपा फय ॥ गुनू पूजा नथ मे
 ही वरु र किर्जन प्रिय ॥ मूला परिं पत्रि स्य स मूला परिं विवर्ज्य रू ॥ सत्त्व स्या ना धनं कार्य ही नयानं न संवथ न ॥ अनी धर्म स्ता नयिथा
 मि अ मूका भा चया म्य हं ॥ अ सयि थ्या मि स त्या नां सं सा न इ श्व सा ग ना न् ॥ तस्मान्म शिष्य स मा यू कां शिष्या धं वा धि वा सथ न ॥ दशा द्धि द न
 काष्ठ व शु वि ना ना वि धि र्ग नां ॥ न क स र्ग य स दा न का वा कं वि द्वा वि (अ ष न ॥ धी ४ को न म रु सै यू कां कू री क स्य प दा पथ न ॥ का थे वा कि रु सै व
 नंद या न रु रा रु रं स्व प्र नि वि कृ थ न ॥ म गु लं प्र व हा थ रु ग य ज्ञा प ट व छि नां ॥ पू ष्य प्र का न र्ग क द क्रि धा सह सै यू नां ॥ पू र्व ज न्मा दि पा य
 स्य नि र्वा य म गु ल द र्शनं ॥ क स्यं रा तुं नि पृ थु स स र्ग म ह मि नि उ क वा न् ॥ स म या द क प पा र्थ च म गु ल यू ष्य कृ प नं ॥ य या पि यू ष्य प नि र्ग न

वा०क

[illegible]

33

[illegible]

नाशसंशयः॥ जिह्वागदहर्नंदवीर्याहमनर्धनक॥ अथवधनकापि विधिं शुभं स्यात्सर्वं शुभं वा सच कृषियुक्ती पश्यन् ननु सैर्दशनक्षसः
 फाहनतदामृत्कथिर्नैर्ष्वजन्मनि॥ शुक्रपनिपदाति॥ अथ शुक्रं यश्चिन्तयति रवक॥ यस्मात्स न स्यात्सुखा गमयति हि नैर्कुर्वन् सैर्धाम रुगलिं ग
 यूर्हृदि न स्यात्स ननु यदिरुवहदाया निपचत्तमा सभवत्॥ यस्मात्स नैर्निर्मिर्नेषक॥ यस्यामृत् सुदृढं॥ पंचमासेन सैर्हाय यदि हा कोरुवद
 न॥ यदि कस्मिन्नेव काले यदि च दुदिवा कनो॥ विद्यं किय स्यात्स त्वस्य मासमर्कं सजीवति॥ हस्तश्च न॥ अथ वदु॥ संधिर्सेधीनी कटिष्ठा दुर्लभा॥ अथ कठविः
 अथ नयस्य मासं विधुर्न कुर्वन्॥ या वरुथ न विधुर्न कियदिसा मर्थमहं न क॥ च न॥ अथ वदु॥ या द्वा नैर्जं दुनीं शुवन नय॥ अथि नाजीवनं या च नैर्पक न
 सदाहका॥ षट्मासेन तदामृत् यदि नूड स मा रुवक॥ हं हदि मधीन॥ अथ सर्वं मासपिक॥ अथ न॥ अथि पक न रुव कृत्पुना दविचान॥ अथ न॥ अथ
 नैर्ष्विधुर्न कीर्षा॥ अथ दक्षकादिपुनार्थव॥ सद्यमृत्पुर्षिया नीया कथिर्न सनी नपंजल॥ कर्कसूल न॥ अथ विधुर्न सद्यमृत्पुर्षिनिर्दि॥ अथ न॥ अथ मध्यचरुथ

विधुर्न कृत्पुना सनर्धरुवक॥ नासा॥ अथ वदु॥ या द्वा नैर्जं दुनीं शुवन नय॥ अथि नाजीवनं या च नैर्पक न
 ल॥ अथ दं रुवक॥ अथ वध॥ अथ नैर्ष्वटल॥ अथ मर्दयद्दक्षमूलया॥ विधुर्न मक॥ अथि न साधन॥ अथ सदा॥ नासा॥ अथ नैर्वाचनं केलमृत् न क स मन्त्रि न॥ सय
 न॥ अथि न विधुर्न कुवीर्जं मूर्धं॥ अथ वदु॥ या द्वा नैर्जं दुनीं शुवन नय॥ अथि नाजीवनं या च नैर्पक न
 अथ दं कानं सर्वसिद्धि क॥ अथि विधुर्न क विधान्दुद॥ अथ न क कृत्पुना॥ अथ लटलायमानं शुपक॥ अथ नैर्दयादिकं॥ विधुर्न सय संधिचवधनामृत्पुर्वच
 क॥ अथि यानि च सर्वववेयानस्येव किं॥ अथि न॥ अथ वदु॥ या द्वा नैर्जं दुनीं शुवन नय॥ अथि नाजीवनं या च नैर्पक न
 अथि यकावेव कृत्पुना ल॥ अथ वदु॥ या द्वा नैर्जं दुनीं शुवन नय॥ अथि नाजीवनं या च नैर्पक न
 अथि वधविनाशनी॥ अथि न कौचनी ल॥ अथ वदु॥ या द्वा नैर्जं दुनीं शुवन नय॥ अथि नाजीवनं या च नैर्पक न

वा०क

ॐ व्याजप्रमजिउमनादंमूखिवनीनयधकनाहंयहंरुद्रदृष्टस्वाहाउं॥प्रह्लापायस्वरावंचरावथरुद्रमध्वमश्वमायुजमासंधवचरु
नवृषरुनायडा॥अयंरुनकिमानाउवंचरंमृगवंशुहं॥अन्यमन्यहिनरेवकूर्यादुनिवर्धस्फुटं॥अन्यवचनमृग्यंचविहृयाडाकनक्रका
॥किंरुसर्वशुन्ययदंकृत्वागुननाधिरुनदु॥अथान्यरुमंवक्रमृगनिर्हृयलक्रधी॥स्वसत्रीनवेवाकचनिमिहंलक्रथसंधी॥यादथा
कालकविज्ञानाहोवधायदारुवक्र॥यदिवसपनाइसीपंचसंगठरुनदा॥कृदिप्रधानथा॥कालगुल्यकालषूहंदिक्का॥रुम्यामवहिवलायी
मृगवर्धननध्वकिरुगलिगंसमायागमध्वसधचहंक्रिका॥म्याचंरुगुल्यमासमनधीरुवनिनिचिरुं॥हकं०मध्वयावीध्वशुलोकार्ही
यदारुवक्र॥यक्रुथनमृगस्याअदिधर्मीनसवथरु॥वामादिपूरुवीद्युयांयानयध्वकिदर्य॥सफाहामृयरुनूनयदिस्यान्नपतिरुया
कर्हमूलकृवामध्वनलजा॥यवधयक्रु॥चदु॥संधिगनवध॥समृगमृगुल्यदारुवक्र॥अकस्माकृयरुसुल॥रुपकुध्यारुयाकूल॥यरु

स्य मृत्युवर्धनयदिधर्मेन सवयक्तु कुरुयदिरवतु शुक्रं शुक्रायां प्रकिं प्रहि (१०) ॥ यदि मर्मासक्तु दामृत्युर्लोहितया धिसूचकं च कृषिप्रवः
कनिष्ठं दृष्टुं पापि विप्रमः ॥ दय्यं (११) लिलवा पिस्वद्युयां वनपथकिं नाणविंदुधनं पथ्यदिवा न कुरु मधुलं ॥ अमाये विद्युं कथय (१२)
कुरु वकिं दकिं प्रिं ॥ दिवा च्यापथं स (१३) दुकाया ४ परनं कथा ॥ हं सका कमयू नाना व (१४) दकणमलकं च दुधयं द्विसूर्य च सविना
कनर्धं कथा ॥ गन्धर्वनगर्धय (१५) हृका (१६) गिषवगिनी ॥ पथ्य प्रत पिष्मवा हा द (१७) न्या श्री पथक ॥ प्रकं परं मूकस्मा च मूद्रिं कचक्र (१८) क (१९)
॥ पथ्य दके र्धं के सस्य मृत्युर्मासा वक्षरुधक्तु ॥ कनं कनहिं च दुं सूर्य न मिषिं वकिं कं ॥ नाजो सूर्य दिवा च दुं सवनं कलन कथा ॥ नाना मनुष्यमा र्धं वसु
मूडं नदीमिव ॥ मूडपूनीषया शुक्रं शुक्रायां कालं परं किं च ॥ पथ्य मकं रुव मृत्युर्दिधर्मेन सवयक्तु ॥ कथा पि दिवस प (१३) द्यायां धवच नूपिनी
॥ मिना दर्भना रुस्य मृत्युस्या इव मध्वनः ॥ पूरुतायां विना सस्या दामया (१४) च दर्भना ॥ दकिं धा दर्भना सिरु रायां दीनो महीयसी ॥ पथ्य धा ना रुधन्

वा०क

[illegible][illegible]

वा०क

न नरुजस्मिजालचन्द्रमिवापर्व॥ स्वस्वहाववरुथंरुथगीतांरुत्तुध्वनि॥ कावमनधरावचकर्मधर्वचनामरु॥ यानंगदुकिर्मसाजानमन
धंनपिर्वचनं॥ मनदविविधयुल्कालगुनासयाकासमधुल॥ विधार्थमानवायूचमनधकात्तर्वचनं॥ षष्ठकीमकविंशंरुसरुआधिरुपातिनी
॥ प्रवमिनामृवधूकीमर्थनीसावधीयरु॥ वालयधिरुमूर्खरुवर्धिरुकाताविकापिसा॥ नसानानीप्रकथरुदुदंचममलरुधी॥ पुनचया
रुसादवीयायाञ्चकार्थसूचनारु॥ र्ययंसमाधिसाम्यखंसमाधिसमानता॥ रुद्धेवमहाप्राधीवजापमंचरुध्वनं॥ मंदमंदगगात्मानारुस्वयंस
र्वयुसंधिषु॥ समर्थविपक्षनाखीचवाधिमरुधुनरुगचनं॥ नीयरुहमिवजाख्यामहापनधनीयदा॥ चकंगुधविष्टिष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टु
महाधनयदंपाफि॥ सम्यक्प्रहाधलरुधी॥ प्राधीसंचानधीकृत्वामर्दनासर्वकांचन॥ पक्षरुधुसदा॥ अष्टमनधीयागिरि॥ सदा॥ कदाविरुध
युद्धवसारुपाकायागिनिमागनं॥ रुद्रंरुधुमहानेदात्खादनामृत्पूर्वचनं॥ रुस्माच्चयागिरि॥ कर्तुंरुधुयागिनीनींदुयुजनी॥ नारिस्तुष्टुष्टुलः

34

एक महावज्रधनं यदं ॥ अयं नमः कियाम् रसिद्धिं न स्यात् वत्तारुमा ॥ अवीचादिमहाननकारवक्रसूत्रमन्त्रगण ॥ किं न न कुरुं यथं किं जानीः
 यासि कं न यथा ॥ यागिनी नीसदा रुकिर्कनं मूर्ध्नि मादिना ॥ वर्ध्नि यं बुद्धीनां रुचिनिर्वाहस्व नूयका ॥ मधुलघुनमध्वरुणावयच्चित्रयामन
 ॥ स्वमरुतत्रया गनस्य क्रिं दानिया गिनं ॥ उत्पत्तिस्तु सदायाथ न स रुजया गाढरुधुक ॥ उं वज्रं मे हामधु ममार्मथ कानी नय वं हूं वृहं वारु
 हूं हूं रुद्र रुद्र स्वाहा हूं उं ट्वा हा मय वं सर्वय मा जा वयं विंदु मधु कां हृदयादिक वक्रय यथा मनसं यूरु ॥ कन्या कर्म च मासं च राडवगायदी
 पिनी ॥ सत्त्वार्थं कुरु कुरु वस मला गधिका न क्षीं ॥ वा ना स्म निर्मि कां यां तु उत्पन्न रुच ना क्षीनी ॥ रुग वां वज्री महाया गप विष्टं सर्वं देवतां ॥ महा वक्र
 वर्त्ति रावा निर्मि कं सर्वं सर्वं कं ॥ सहजं रुचि रुदा सं वृद्धत्वमात्मसंस्कृ ॥ संरा न वत्त रुद स्या व कथं नृष्टिं तु जाय कं ॥ माया जाल मिदं सर्वं न माया
 न च भु न्द्य मां ॥ सम्यग्मात्मात्मकं रावं वृद्ध स्वास समी नर्ध ॥ कृत्वा नादि तु राव त्वं स्वस्व राव वृत्त कर्धी ॥ वा वस्तु मा रुका का वा रावं स्वराव कं न थ ॥ विक

दा०क

ॐ श्यं वा नास्ति मथ वां कना मथ नी सर्व सं ख्य वि प्रादि सर्व मंगला ॥ सर्व ला क वृद्ध यूप ना दिन न का स्वयं ॥ य मादि का ध्वय उ म र्थ निय र्व वा
ल्यं क ल्य य ना स्ति क ल्यं कान्य व क ल्य थ क ॥ क ल्य क ल्य न मू कि ष्या द र्शि ना सर्व द र्शि रि ॥ या यं रा व क र्थ य ध्व न सं य ध्व कु म स श्रिय ॥ अ ना पा न नि ना
ध्व कु र्ज न ना दि दु प र्य थ क ॥ ना ना ग म ने रू रू व र्था य क वि वा न थ क ॥ वि वा र्थ मा न या मू कि ष सं यू कि र्ग नी य सी म म ॥ वि रू क त्प द ग रु ध्व क धि कं
व र्ध मूल क ॥ णि या य गु ने व अ रू णा वि का ॥ गो न वा य उ ॥ अ न्य मू कि ने म य स्ति स्व ल्य य ध्व सं जं न व ॥ स त्वा व र्जी स्व ल्य य ध्व का ट का क लि या ग क
न स्या त्प ध्व व ना नां उ रू न वृ द्ध स्य र्ग म च र्ण ॥ दी र्घ काल ना क नू र्धं स च य कि ष क ल्य नां ॥ य ध्व वृ व र्म र्था क रू क ष पू न रू न वा च कं ॥ का वृ द्ध प र्थ
क वा धि स त्वा नां वि षा यं ना क वि श क ॥ व मु वा ध ना द्ध रू क रू क रू वा धि स त्वा क ॥ ॐ न्नि अ ना ॥ ॐ स रू रू न वि स रू ॥ ॐ वृ द्ध रु क ना ॥ कं द वृ द्ध स रू ॥
ध ना ष या क रू व रू ध नू ॥ ॐ ध नू ॥ व य ॥ ॐ आ च उ ग म म हा अ म न रू ना ॥ ॐ र्से उ ध नू ॥ क नू र्ध य व ॥ ॐ अ रू स रि डि रू य च उ रू न क ना ॥ स र्वा मू का र्थ न रू

36

[illegible]

वा०क

वमृधुकेकालमीहर्ग। पाधम्यावा कृतेरुयैयक्रिकाचक्रक॥ चकेकेखरिगावैववज्रपयैचसूर्यका। पविष्मैरैहगुवर्जयकमववुनादिर्ग
॥ नित्यत्रमधुलैवकंगीनिकाधनिरिस्मदा॥ ॥ जगत्तुमैकनूविहियकुकुमिधुनयवमग॥ ३० कनूधममगाथमद्रुमधुलचैकंगीनिध
नि३कामसिमहमरुवाकृधेनासमधुय३नउआनूगठाजिमरुवाअमवलाउविअसिअयस्मकासमजाकिमलाअसहसूदरुउ॥ वमवममा
ॐ वक्रहवाहु॥ ससहानूअननवाहु॥ सरुवाअयवदधुआॐ जययुमिसन्नकक्रुअहु॥ कावधूसहधमरुमिहु॥ कअरुमिसरुजसः १०
नूअनग॥ ॐ॥ कामद्रुमॐययमायाहु॥ क्रिमधुमिसमवाअरुजाहु॥ ॥ ॐदंगीनानिवाधनप्रवृद्धहनुक॥ स्वयै॥ अंआ॥ कायवाक्रिका॥
वक्रहंरुद्रस्वाहा॥ उवावधमिदंमरुमटिषाकावयागवान॥ मटिषामरुहगासासर्ववीनथयागवान॥ तेनर्वकालवागीवकर्षिकाका
सूया॥ स्नासपनिगाधुव॥ कर्मकार्यकृद्गुहिकादुर्द्धकैपिगसफकि॥ रुजास्याकसफदधतिनर्गवैवर्गमूर्ख॥ जगामूकटधर्वीवैव

विश्ववज्राद्यवचकं॥ महादक्रकवालास्यसव्यवसन्यरु३मदा। पीकनककमनरुमेपा३रुगसनिहा३॥ उंक्रुकलालरीषधमसयाववा
कवसंरु३॥ रुयावावृकंथवममनायथकमारु॥ दकिचर्मदिहसुव्यागिमूद्राकथायना॥ वजासिंकुधुनिधुलैवदकि॥ धयैयथ
कमारु॥ यवर्गुकेरिवादीवधुलैरित्तुमूजलै॥ चकंदमेनूहलिकावदधुचरिषुयालकं॥ मूर्खकाहनदधुकावमयनपिठिकाकथः
काकयेकैकंवि काचअग्नि कृशी३यवैर्ग॥ लगुदादय्यैवाधगुल्फादी३रुसूकै॥ अंरुवाकृनिगाउरुहतिमरुयदालिका॥ कवंधाजालमे
रंगरेववावृयं३यथकमारु॥ वामघधधर्वैर्गैर्गैमूधलैया३कयालकै॥ धनूखड्गंगपूकै॥ धूवमालागुं३नाधिला॥ ममनधूलिका॥
हाकैदक॥ र्गैचर्मचनैविकैवैअविका॥ बादनैविरिकादीवग्रहलिकमसूकै॥ कंकालं॥ नाजिकावैवनरु३कै३वर्षिका॥ धनिध्वनकीलकै
उवीऊयवकयूगकै॥ गूविष्णुकायवा॥ मांचरुदावृष्टिवृकसकै॥ उवैकमगाविष्णुयाद्यासफकि॥ कनासूकै॥ यैवमूद्राकृतारु३वैर्गैयन्मजायनरुय

वा०क

नैऋतं च मधुलौमा चैव कयून नो पूनालयः ॥ व्याघ्रचर्मनिवर्धनं नामावलिवगमकं ॥ रुक्माग्रकामहादवीवज्रवा नाहियर्षवकः ॥ प्रह्लायायसखा
देवसर्वसंधिषु विग्रहा नानाधीह नूकाकावे ॥ सविस्मृतं विरावयकः ॥ यदमालागुसर्धर्षादिना नौकानयदुमी ॥ यस्य दलयेयुर्षादिश्रुतना
कनयागिनी ॥ चतुर्विंशति संख्याता ॥ कन्यायाश्च षड्भक्तं ॥ पूर्वोदिउलुना केवजाकिन्यायाषड्भक्तं ॥ उलुनायापश्चिमाकं नामा यषड्भक्तं ॥ प
श्चिमायादकिताकं खलुभाहादिकं कुलं ॥ दक्षिणया पूर्वोर्ध्वं च नृपिष्ठा षड्भक्तं ॥ जाकिनी नृपिकां चैव नृपिकां कुयनावृता ॥ सवालिका नृवः
रुचिकृष्णार्धका कुनीलार्धकी ॥ नामाया ॥ यध्वी रुद्रा कृष्णलिनी कंका लिका ॥ नामावर्हिह विनाई ॥ कुनकाई ॥ कुकमायक ॥ खलुभाहा ॥ भनीच
विहं ॥ कुक नूकलीवच ॥ नूदकिमकिमाख्या नं नकाई ॥ कुपी नार्धकु ॥ नृपिन्या रे नवी सपी खलु ॥ कुटि नूदया ॥ पी नार्धकु ॥ कृष्णार्धदवी ॥ कुजा नृवा वा ना
हिका ॥ अकन नृदलाना कर्पचा मृककं न ॥ प्रह्लालीट यदं चैव कपालमाला लिका विरि ॥ नामावर्हं विरुया सभ नृप विरागकं ॥ रुद्राखव

११

ऊचकुंचनीलकृष्णचमस्कवाडाकिनीचरुथनामाखद्युवाहातुनूयिनीपचधुचधुकिनीवेवपुलामकिमहाधमनकंवीन
मनीखर्षनीचलंकष्वनीडमक्यकंनेनावनीचरुथनंमहालेवविष्णुनावायुवगमसुनारुकीधमादेवीसुरदिकाश
हयकर्षखगननाचकुवगमखद्युवाहिकासोयिनीचकुवर्मिनीसुविनागुमहावनाचकुवर्मिनीमहावीर्यायामिनीयूट
नीरुथनामार्जालिनीशानीचद्युकाकुसुमनीरुथना॥सुचसिद्धिर्महाकालावर्धचकुवयादृष्टीचतुर्लजाचकुवकुंकयालखद्यु
गधनारुथना॥उमचकुर्लिकवेवमूककधदिगम्बनायचमूडादिगम्बवकुमालाविरुषिनापुनासनामहाधनामर्षचकु
यथागिनीनानारुचयुक्ताचपुलायायादिकंरुथना॥चकमानूयाधतुचिदिनीयांतांनिगयकपुमूदिनाहनिमिख्यानासर्वगुधसय
विदु॥चकहमीयूमध्वचछादहाहमिचिथनसर्वसर्वयुक्तुवाचकुधसर्वकं॥यदिहकिममाख्यानापी॥अयपीअदिकं

वा० क

[illegible][illegible]

वा०क

[illegible]

नीयथाकमागुदोदोवर्धसनाकार्यामृत्वा नूयककुमारगुर्वो रुनयधिमशुदकि (धरुमयः सदा कृष्णीलहनिरुवकापीकवर्धुकाव
थरु॥ सममधुकाकास्याजाकिनीदकि (धरुमयः सदा कृष्णीलहनिरुवकापीकवर्धुकाव
संलगनिर्माद्यथआत्कुर्याथअकर्मविहीयचकंजिलखंरुकीयंयगुलषकं॥ चतुर्थयत्रनयात्माधमधनसर्वककुमारचतुवालकक
कुर्यादाद्यादिशुमिकमर्म॥ यंचलयात्मकंचकंचतुका (धसमकलं॥ कुरुसहजचकस्यधमधनानिचकथरु॥ च (ध) यगर्कनंचेवकालाक
लकलंककं॥ रुहीयद्यथपूर्वादिदिक्वाभनसंस्थिर्गं॥ अदृष्टहामुं॥ धन्यालेकीवनद्रुकासनशधाजान्धकावनेमर्त्यावायूयांकिलिकि
लालवः॥ धमधनधाननूयानिवगाउरुसिचानवे॥ अननकुमनचकिष्ठकाष्टधमधनानिचगवृक्षदिकयालनागन्धामधयाथयूनकमा
गुं॥ मिलीखाचककं॥ कलिनूकवृक्षवटस्थ॥ कलंकक (धेवलगायकटीहिचयार्थिवः॥ लुत्थाधनद (धेवनागन्धाययमाधियः॥ लुत्थाधन

वा० क

[illegible]

धनी ॥ हनिकी घट्टा किं किं धी घट्टी नी तथा ॥ इका कालिका स्वयं सा सी घा घनी च व प र्वदा य न म च नी ॥ व र्धना ना विचि र्च च अथ वा च क
व र्धका ॥ उ य क उ नि वा सी च ह की र्यं वा पि का य ना ॥ ख च नी कूल मा या कि सं स्ति ता म रु धी य क ॥ रु सी अ र्चि वा नी सा दु ॥ स्व स्व यी जा दि रु
जि नी ॥ क दा वि द म नू ष द्वां ग वि हा ना य अ र्ज पि च ॥ स्व स्व चि ज्ञा रि न या च्च का न थ मु य थ नू वि ॥ मू का स र्व च का दी नां स्वा धि य किं रु का न थ
रू ॥ प लू या या त्म का क उ कू ली मा त्म कू ली न रु ॥ ६ ॥ र्ध कू र्था य थ य र्ध्व मा न ॥ धा च्च ट ना दि क ॥ कि न ता स र्व च क षा दि ग म्ब र्ध ना मि कि ॥
अ न न रु थ ग गान धि वा स्य मु किं कू र्था दि व रु धा ॥ नि म रु नं वि वा नं च स र्व र्यं च न ज्ञा म य रु ॥ स ग म्ब के ल न व ल्क न मु त्रा प य रु स मा प
य रु ॥ य न प र्श क व स न प्र ति मां त्रा प य त्म सा य ॥ अ दा का षा सं स्ति र्ग र ग व र्क म धु ल च कू प्र कि मा दि प्र व षा थ रु ॥ द षा क र्म क र्म को र्थं य व
हा ना दि कं या व रु ॥ अ क्रि नी उ मी ल थ द्वा च कू म धि कि रु ॥ य र्थं धू र्थं रु थ दी यं ग र्ध नं य श म व च ॥ स र्व क र्म य रु त्म अ क्षा म क र्म षा ॥

वा०क

[illegible]

लहपिस्त्रावेवदद्विबुधगुणविधी॥नर्वैयानाहिवर्कचवर्धुहचक्रयादृष्टं॥अथवास्त्रास्त्रकाङ्क्षयाशुजाया॥वेवयूर्ववर्त॥पक्ष्मयायात्मका
सर्वेष्टदाहवासनीयनी॥हमीसदृङ्गायाङ्गायाश्चुर्दीपिनीसमका॥अशुजाश्च०००दं चर्कं ययंगुद्यपुदकं॥आत्मकैहनीयकंचसं
सदजाकचूपकं॥वर्धुचुचऊवाचऊनामचर्कं॥आत्मकमकं॥हमी॥धनमकुदअमिकुधुनिकानयन॥अशुजाकुलसमानय॥या
वद्वस्तसहसकं॥अशुजाविनियुयार्कगुदधमकुलपोष्टिकं॥गथ॥आदधमकुलवधमकुलीचुर्दृष्टं॥धर्मिमवच॥यादृष्टं॥गुलिक॥
नकुलवृष्टादिकावध॥अष्टकनांगुलमाननदध॥गकलवर्धनं॥विंशदंगुलकुलुनमवनकानागमाकिका॥चनानियमकुलुनिह
यदृष्टं॥पमाधन॥कर्मनूपयनकार्यजानीयाश्चविचक्रध॥आकांक्षस्यजिरुगागं॥वानिगंचसदाहवर्त॥यथवहिननमीचनथ॥
यंनमवच॥रुद्राकवदिकाकार्ययथ॥अष्टपमानन॥कुलुम॥अशुवजानीमककं॥विंशदधन॥॥धर्मयिगंचवर्कचक्रयाहनि

वा०क

नमवचनवदिकाकार्ययथअष्टपमानक४॥कुमुदधुवजानांममनंतुविद्यायन४॥एतपीनवनकंवकुहविकमवच॥
 यथअष्टवदिकादयाचतुत्रमाष्टमानक४॥मनिकवर्तुलाकावाद्युक्तयूचीननंतुवक॥चतुत्रसुयोष्टिकंतुपीकंवउरुनाननंतुउवाटनम
 रिवाचनंतुअष्टचतुष्टयश्चिमाननंतुवक॥विद्वयमानधीकर्मदकिधननदिकादाकंववधकृष्टिचिदीवनकावर्धुदिकादाकं॥सु
 क्तनेमाहनंतुकर्मनेमणीचदिगाननंतुउवाटनधुमवर्धुचवायूयाननमवच॥कलदासकृत्तिर्नकर्ममाएजयानंसदावदवका॥आ
 सनवर्धुकनूपदादवगांरावयसदा॥हंकावाकृत्तियागनद्विरुजाकावीविरावयक॥मनितिसूत्रावयमर्तुमनितिदीदवमात्मकं॥
 स्वययुयोष्टिकंतुयोक्तुविरुनधमनिकीवधाननागविरुनकाधविरुनमावधी॥विकृतावोदविरुनउवाटनारिजावकी॥अर्थः
 पाशादिकंस्तुयआग्नीवावाहयक४॥स्वहृदयाकाऊहंकावचकसर्वविरावयक॥ ॥कुकिवायुचकंदिकीयं॥ ॥अथवाच

१३

कंवचचकंमदिनीतामक४यचं॥पीकवर्धुस्वरावयवर्धुंमलेविहृषिकं॥वर्धुंमथागिनीनांतुहचवीधंयथकर्म॥सिंधीचापीरिक्ताधवीगर्ज
 मृगीमार्कविकी॥गावीमहिषीकुक्कुवकीजम्बूकीगधीचमवीमुखीगर्दवीरुदीचअऊकीचउकीकमाक॥धनीधूकवीरुचूकीचउधुली
 मूधुकीकथावसवातुविलापीचअवधीवृहस्वानिका॥अधकाकीसाहूलीचयाठाचिगानिकटिकानकूलीकृकीगुहागुणमनीवासिनीय
 वा॥चर्ववर्धुयथचकस्वस्ववर्धुदुवायून४॥पल्लयायात्मकादवीउयकुन्दाहवादिनी॥हमीनरिमूखीचवपल्लयाचमिकाचसा॥पंच
 दीयानिवासीचआयूधदियूर्ध्ववक॥धवीनग्राकावचूर्ध्ववकस्वरावकीमर्क॥यूर्ध्वरुचयश्चिमाचदकिधननसूर्यरूया॥वकाधीमाह
 चवीचकोमावीवेष्टवीकथा॥वावाहीकुन्दीचधीमहालक्ष्मीका॥धयक४॥ठाकिन्नादिवरुडाचचूर्ध्वविर्जगुकाचयक॥का॥धयहमीच
 रिमूचवपल्लयाचमिकाचसा॥द॥धदिवरूयाचिनखापिअऊ॥कायवाकिरुधर्मधर्मसूचसूमारुन॥ममनानिहियथकृअग्निचकय

दा०क

[illegible]

11

अथ च यनो ॥ भागिनी विन्यसत्तापिदवादिषूकला रुवी ॥ देवी नागी यक्षी रुक्ती च सा नमाही चमा रुकं ॥ माकारा र्था रुगिनी च इहि ता राग नयिका ॥
पि रु र्गिनी श्रुया सा चमा रु नस्य र्थार्थकी ॥ र्थार्थ रुगिनी माका च रु स्ये व पि रु मा रु का ॥ र्थार्थ पि का मही मा रु मा का मही रु वी धवी ॥ मा रु र्ग
गिनी र्थार्थ च रुगिनी राग नयिका ॥ स्वमा रु मा का रुगिनी रागी नयी स्य पूरिका ॥ पि रु र्मा का पि का मही रि ॥ पि रु नस्य रु र्थार्थ का ॥ इहि ता
पू रु र्थार्थ रु र्थार्थ या रुगिनी पू न ॥ स्व पि रु र्गिनी पू र्णी रु स्ये व रु ॥ गा रु जा रु ता रु र्थार्थ पू रि च पू रु स्ये व रु र्थार्थ का ॥ इहि ता या रु रु मा
रु ॥ पू रु स्ये व रु स्व रु का ॥ इहि ता पू र्णी समाख्या का पृष्ठं ॥ मि रु रि का ॥ न क वर्ध समाख्या का आ यू भदि च पू र्व व रु ॥ रु मी ड नंग मा च व व रु
यमी वा सिनी ॥ मला च क समाख्या का पृष्ठ पाया त्म रा व की ॥ ध कि च रु सदा अय विरू या स्वा रु सु द नी ॥ व रु च का दि सर्व रु अ नू त्ना म विला म
रु ॥ य रु नै क ल रु रु विरू या स्वा रु सु द नी ॥ व रु च का दि सर्व रु वाम द क्रि ध पा धि ना ॥ य रु व रु सर्व आ त्मा नि दा य थ सर्व र्ग मि ॥ य र्थ ना मा

वा० क

[illegible]

76

[illegible]

मकनीकर्मनीमरुदुर्वीगीकद्वीअडिका।सूचीगर्जनीमीनीचजलगुहायकीमूखा॥हटिगीकर्कटीदूवीमखिकापियटीमूखा॥जलनानीवः
वीचधीदकिनीवापुजंवीकी॥जलाहीवहाखाकदीमूकिकीमसिजंगुली॥लीसिद्धनीकर्कटीहाटकीवर्ककीकृता॥इदूखीदंसकीकलाय
वमानायकीवली॥जर्ववर्धुसरावागुखनंवास्वसरागज्जी॥मूर्खवधस्ववृपानियागिनीनीयथकमारु॥उयमलायकंवेवहसीवचनवा
यना॥सफदीयनिवासीवविहूयायूधनर्ववक्॥अथवायूधगिवायायणिंहादहानकना॥कयूनानिसमंकय्यामूर्यपी०कमायक॥जंवी
यमिदंननद्वादसखलुखलुकि॥कानानामसमूडगुर्गदुकिमर्वजंनवान्॥संखदंजसंपर्कागुजलायूजानीचमाषकं॥६०दंजकंसंखदजं
गुअग्निचक्रंजनायूजं॥सर्वलकहासंपूर्णपक्षयायात्मकंस्वर्यं॥॥उंवाधिवृक्षायस्वाहा॥अथवृक्ष॥उंवजलनायस्वाहा॥प्रक्षय॥उं
वज्रयस्वाहा॥उंवनस्य॥उंवज्रकूवनायस्वाहा॥कीववृक्षधी॥उं सर्वपापदहनवजायस्वाहा॥किलानी॥उं वज्रयस्वाहा॥अथवृक्षं

इलानां॥उं सर्वसंयदस्वाहा॥दधनस्य॥उं वजायस्वाहा॥इर्वया॥उं अथकिहवजायस्वाहा॥कृष्मनी॥कक॥हल्कमलासनस्वदवगावीजनिष्ठा
सर्विज्ञावीजपविनकंमधुलचक्रंविहावयक॥समयवक्रस्तनचक्रंआकृष्यपवधायक॥॥अ॥अ॥जंम॥अ॥उमटिकाकावैरुविहावयक॥
॥॥क॥वमनादिकंयूजामुकि॥अर्घ्यायैरुयूजयक॥स्वदवगावीजजायदाहामथदविर्सीकिम॥प्रक्षकंदवगावीदयात्यथाश॥अ॥याइ
कृयाक॥कयसफाधिकीयावच॥मसहस्रमवच॥यथइवानूनूयदाअग्निचक्रंविचक्रदा॥कथाहिसर्वदययूयमनिचक्रदयाक॥
समिक्क॥दिपरासधुलरक्कावमनादिकं॥कृष्मसिसिहालाधूर्यगंधीहदिपां॥कृष्म॥उपादीयायै॥दीयमर्घनिवयैचयूनदयायथ
कर्म॥यथयूष्मकनविधाननविस्कर्षयदग्निचक्रमधुली॥लोकिकअग्निचक्रसंपूर्णलाकारुवहामथयदि॥दिनचलोकिकंकर्मग्निचक्रं
नाजोलाकारुवैरुथा॥वावाहिकल्पसंपूर्णयायानीवि॥हायक॥किलिकिलिमहासाहंगीकनृत्सूखात्सहे॥कालमूर्खीदवीयागन

वा०क

[illegible][illegible]

दसधुकी नंदधनं सर्वसोखदं ॥ सुखार्थसिद्धिदा वक्रिर्मूर्तिं दयास्व सुदवगा ॥ दायकर्म नूतय धनं यथं न्यादिकर्म कुरु ॥ पाणी पल्लु धुवा पा
यास्तु ॥ धनं यथावना ॥ नगा विनिर्जगं सयिं महा ह्ना मृगं मर्गं ॥ ननं संनयं थदमि थक मात्मानं नमं वेनं ॥ चर्वकं नाकिथा ह्नेनं चकं सोला गधं सय
दं ॥ ॥ ॐ निह्ना न चकं रुनी यय ८४ ॥ ॥ अथ वाक्का वक्रु विरुचक मिदस्मृगं ॥ नका वरुं वक्रिका धं सर्वस्वरा वरुं यनं ॥ नागिनी यक्रिधी
रुकी पनी नानका वी विनि ॥ पागकी अनुरु वी वक्रु की नय मक्रिया स्मृथा ॥ कालसुगी कूकूली वरुयनी दुय कायनी ॥ नोनवी चमहा नोनवी मे
नया की द्विपर्वनी ॥ धयी माही या नागी चमदमत्सनी रुमिका ॥ शीरुकी सवना चे वरुं दनी दुइ किं कका ॥ नागका कनी दा सुचयानी थयूच का कनी
॥ असिन रवी वेरु वधी कूवधा वी च वक्रिका ॥ कूफा धी दुमहा दवी वरुं चक स्या दही ॥ रुजा यूर्ध्व पूर्व वरुं ह्ना पल्लु या यम नू पिर्का ॥ द्विपधम धम न
कं रुहू मी धर्म मघ नरु ॥ विरुस्वरा वधुस्वत्वं सर्वगं चक कमरु ॥ स्वरा वं विषा कने ना स्मृ चक कुरु सुवा वहि ॥ सर्वया मव विह्ना चकानी हि ॥

यथा कमरु ॥ दानयाली च सर्वगं च ८४ स्मृ नानि ददा दहा ॥ नवं दस विह्ना या धुन्य का च विचक ८४ ॥ ह्ना न विह्ना नरा वत्ता रुधम धम नरा गवत्सयं ॥ ॐ मं निर्मा ध
चक यूरु य ८४ ॥ धयना मरु ॥ अन्य सर्व मिदं य ॥ अचक द्यं रुक थरु ना ना सिद्धि पदाम रुना ना वरुं रुला दयं ॥ ॐ न मे ८४ धम धम न वामी सहा कालानू का
नाय ॥ रुय थ ॥ ॐ वल पवल लल लल लथ द वलिं गाय स्वाहा ॥ सवा यूरुं कृत्वा अरुं ना रुं का वरुं यथा वदा गच्छ पिभु कृष्टि ॥ ॐ चामू धूम कशि वि
यूक्तिं कुरु न २ यच २ दवद रुमाने य स्वाहा ॥ वामच व धरु ल अरु कान सभर्तु लिखित्वा रुस्या रु कन का ॥ ॐ च ॥ गङ्गी ८४ का वच रुष्टयं लिख न ॥ धम रुय
दं लिखित्वा आ क मय रुय रु ॥ वधी क न ध मरु मं ॥ ॐ वरुं का ध वला वल रुन दह पच विध्वं धया सा दय मान थ रुं रु ॥ वाल्मी क मादा या य च गव स हि
रुया विरुस्मि मा रु कं बाधु किं कृत्वा कन वी न रुत्वा दक न सच य रु ॥ गुगु नू धू यम विद्धि नं कि सुल वलिं दया स्म फा रु ना दक धनी पा रु य कि ॥ यदि न व र्
य कि स फ म दि व स स्व शु व रुं कृत्वा घ ट क प क्रिय न यां प्रवा ह्य रु ॥ वरुं य न विधि ॥ ॥ ॐ ग ग ८४ अ वि ग म ८४ स्वाहा ॥ अरु न ना प कालि रु मू वला रुं

सक जायं कृत्वा कस्य विद्धि न दानं वा सु पथम् ॥ मुखवन्धकृत्वा रुवनि ॥ उं मुका किं मुका गच्छ किं मुक १ का दं किं त्वा गलं मुका नो मुक २ वी ध द व द रु स्य म
 ख वन्ध नि स्वा हा ॥ वली व द स्या यति क व छ या दि हं स्त यथम् ॥ य स्य क स्य वि का र्थं मुख वन्धं वा व ह न य ठि क सिद्धि ॥ उं न म र नि धा रं ने वा य चिलि २ कि न
 न नू य न मू खि का नो रु र्धु व द्ध मि ॥ म र्क का रु ग न स र्प म र्क व ना हा दि नो उं णि ना खिलि २ स्वा हा ॥ उ र न म रु न उ क रु स न ला रु कं उ क विं णि वा नं य वि
 ज य गृ ह क रु वा टि की च रु क्का ॥ म ला रु कं क य थ नू नि नू य ड वा रु व नि ॥ अ थ वा वि व ल व ध ना जि का स र्प य मू ल वी रु ध रू न क न वी रु म हा का न वी रु
 वा उ रु यी व रु स र्प य म ही व रु क न रु ग ना र्थी नू धि न ध ना य च रु द द्ध मि पिय य धू यं व लिं द या रु त्थ अ द्दि ध रु स न स र्ग रु क वा म रु र्ज नी का ध ना रु
 न म हा का ला नू का ला य ॥ क य थ ॥ उं च ल प च ल ला ल य द व लिं ग स्वा हा ॥ स वा रु कं कृ त्वा अ र्ध ना रु लिं गं गृ ही त्वा ना व रु य या व दा ग रु कि पि धु रु ति १ ॥
 उं वा मू रु धू म क र्णी वि रु क्ति रु ह न २ य च २ द व द रु मा न य स्वा हा ॥ वा म च व ध रु ल अ ल क न स म नू लि पि त्वा रु स्या रु क न का ॥ ध रु ग र्जी १ का न च रु रु य १

लिख्य म (ध) म रु प दं लि पि त्वा अ क म्प ज य रु व णी क न ध मू रु म ॥ उं व रु का रु व ला रु व ल रु न द रु य व वि धं णा स्मा कं रु य मा ना मा न य २ रु रु ॥
 वा ली क म या य च्छ ग य स हि रु या वि रु स्मि मा रु कं वा रु किं कृ त्वा क न वी न ध च रु विं णि क रु य थ रु ॥ णी मी षा का न व ध कृ ना रु व नि ॥ उं र्जी र्जी
 रू रु वि द २ स्वा हा ॥ अ न न म रु धा ॥ म य म रि म न्यु पा नी य स्त न प दि थ द्धि वि न ध मि ॥ की व रु य थ मू क १ उं व रु क स्वा मि व रु ला क
 धि य रु या क नू २ ग रु २ रु क य २ न रु ना र्गि वि २ ना ण य २ रु रु र्जी स्वा हा ॥ न रु ना ग उ ना र्ज न म रु १ उं अ नू रु रु रु स्वा हा ॥ उ द कं य वि
 ज य न रु प का न य रु ॥ न रु ना र्ग ना ण य मि ॥ व ला मू लं स फ र्धु कृ त्वा रु स न व रु क र्वा ना ण य मि ॥ अ या मा र्ज मू ल व रु च रु थ क र्वा ना ण य मि ॥ स
 फ र्धु का रु गृ ही त्वा वा न मू ल मा र्ज वा धा न थ रु ॥ म र्ज वि न ध मि ॥ उ रु रु न मा रु १ ॥ ॥ रु कि वि रु व रु प थ म १ ॥ ॥ अ थ वा रु ना अ
 न च वा रु क रु क थ रु ॥ न रु म र्जि रु व रु च रु थ रु १ ॥ य रु रु रु नि दा ल स्या ध र्म वि र्जी रु रु व थ रु ॥ गृ रु वि रु रु वि रु रु च रु थ रु १

विकाविधागकाऽयुविनालिधकाचवधनाडुमकुजापिका॥ श्रीशकनमानसंकायासत्त्वार्थकनूधमयसी॥ वाजविकायवाऽडाहाह्लातलारा
 कयविनी॥ जनाचमनधीविकासखडशवाधुगधुग॥ अस्तिचनसिकावेवगुनूविकागमानिका॥ क्रमावाक्रमाऽधकाविशकाडुपिकायवाऽ॥
 सर्वकर्मकनादवीपकृतीचकदमहक॥ स्वचकवर्णसाख्याकं॥ धममकुंशुयूववकापल्लयायात्मकादवीप्रकृष्टाअमधुली॥ चहुषी॥ १०
 वधककुरुदादमसहस्रक॥ ह्लातजकिनीआयाअयजाअदवकीमर्क॥ पी० वस्ठनमिधवैहमीअपिसमपरा॥ अर्वह्लातादिकायाकंजला
 मिर्वाद्याकाऽकं॥ वलथचकनामंचविह्लायाववयागिनी॥ ॥ उंनमश्चधुंकाकनूश्वाहा॥ यावाचकयूनीषधुं॥ ३३॥ गायकनसी
 जन॥ गुगुनूचनखंकुष्टकनवीर्जक॥ थेवच॥ अरुषीधुयगुठनसमंरुसूयाजिकंधूपायंसर्वहाधुनीसलारुविक्रियारवक॥ उंनमारु
 गवकीधुयसूवीचामू॥ धुविलिमिलियारुकअमूकवसमानयस्वाहा॥ ३३॥ उजवचवाकृष्टंरंगवसर्षपकथा॥ धुपलानागयूषीचरागंस

ऊंचसस्यवा॥ अरुनधूपिकंवसुशिषुगकुमिविर्या॥ यकावासीसंयुटंकुत्वातामम॥ धनियाजयक॥ उडुकपशसंयाअरुस्यपशुषुवालिरवक॥
 काकयकृषूलखिन्यालित्वरुविषवाजिका॥ धमधनांगनसंयुक्तालय्ययुंम॥ गायिकं॥ विजुमावाकथा॥ गनअ॥ लैषांगनकदिन॥ नयापवाहये
 रु॥ उडाकारुवरुनियं॥ अकलिं॥ गनिधमगत्वामकुजायमहात्मनी॥ उं॥ ३॥ ३॥ उडाटनप्रथाग॥ अपकिर॥ गमथनप्रकृमिकुत्वावाउ॥ धंगु
 लैकालेयक॥ धमधनकर्यटनामालिखीरु॥ अप्रक्रियकनाम॥ धुनरुमूर्वीकुटपीउथरु॥ मरुकअववथरु॥ रुमूखचसफजयनमूखलन
 पुरुनारु॥ कुडादशात्सुफिकारुवकि॥ मनसिलायीवामरुसूयूनीकीलिखित्वादीयशिषायांकापथद॥ धमविधि॥ वायुकातमधुलमूपलि
 यरु॥ ऊपशुदवदरुस्यनामंलिखारुकापिधुम॥ अप्रक्रियवृहंकाकंदयाकिमूवाकयकि॥ कूककावस्यहस्रवरुंरुमरुकाजनत्वसाधिकसहस्रप
 विजुयउदकम॥ धनिनूत्वा॥ धनरुयथरु॥ गामसिभारुवकि॥ अथरु॥ मानयिधुमिहकि॥ सिहकनवापिधुकनवाप्रकृमिकुत्वाकायायकय्यः

उक्त्याडयनिवाष्टादकंयुविजयाननीपकिंकुकिमूखादानययावयादकलसगुकीकानय॥कदूयनिहसंदलार्कनामंविदर्किं॥मरुमः
 कानसाहसंजुद्धादवगृहकद(ह)मोस्ययित्वाडयनिवाष्टादकंयुविजयानिसेधंजयकुंयुजयदिनम्यकि॥पञ्चसर्वपवृधिनाकाः
 नारुल्लाटकीतीकुनेलनाकानारुल्लाटकीकुनेलनालायधार्मसगृहअष्टसहसंशुक्रया॥सयअयस्मानममयकिवृधिनंद्ययकि
 कवधवावृधिवधवामयकि॥मममनरुधमनाधार्मसकिंकुकिंक्वादकिनाहिमुखवासपादनाकम्यमूकाधिरनकुंनयम्यनाम्राअष्ट
 सहसंशुक्रया॥सयधकुमयकि॥नककीलपियंगुघुनाकानांअष्टसहसंशुक्रया॥पञ्चमसोराएवकि॥स्वकीलस्वरुमंदलघु
 नाकानामष्टसहसंशुक्रया॥धनधन्यसमुद्धिर्नवकि॥सर्वगुनरुकिंरुंकर्म॥इकनवीनययादिद्वचवदनैरथाकष्टइहनिदंयय
 यदानुहनिदया॥कनडयलेकपमकसनमववापियंगुघुनयुयंस्वरुसिद्धार्थकंनथा॥निर्गुनीरुनकमनलाचनकिंकुकिंवान

वीवीजमववा।मनसिलकिरुलावेवउडीलनिवपरुके।हलकलधुवीजअहिंगुरुल्लाटकेरथा।पञ्चविंशकिमनानिसमरागानिकान
 य॥य(थ)दंगुकिंकांक्वाआदिधवपयाजय॥उयवासायनरुत्वाकुसुस्यवि(म)मरु॥पृथादिसंयूकनपंचगयनपीषय॥
 रुकनासर्वदाधर्मयकनारुसंय॥वालानांसिनलयवालगृहसुपमय॥दुष्टग्रहपूधूपंदयात्पमाय॥सर्वजलधूमिन्नसिलयनि
 ईलारुवकि॥सकाम(ध)विवादचवाऊडावललाटधानयत्सदाजयारुवकि॥कमरुवलपय॥सीवसारुवकि॥कन्याधनयत्सु(ग)रु
 वकि॥दुष्टपदवानावीनीनारुथानीयूलपय॥नीधूपसूयकिंसर्वकृष्टवा(ग)मू(ग)मू(ग)पलपय॥स्वरुवकि॥अशुकालीऊरुहानि
 धीनांपंचगयनसहपिव॥गर्गकिंकिंपुवकीरुवकि॥नकगुपुनधुलादकनसहपिव॥गुलपसाम्यकि॥वक्रवा(ग)मू(ग)मयकल
 यय॥वक्रुगर्गनायकि॥विषदंकाकाल(स)मनालपनिर्विधारुवकिनिर्धनयकि॥सिंहयाधुमकवनम्यनिविष्टपुनूनादिरु॥

वा० क

सर्वगुरुयत्र पवित्रं किय नमन का सर्वजन प्रिय सो राग्यै रुवनि। अथ सर्वमिदं पञ्चदोषधिगन कथ्यते ॥ ॐ निवा कचकं पथमं ॥
॥ अथ वाक्का अर्चकाय च कुरु कथ्यते। पवित्रं मलमश्वा च या गिनी च कवर्हिनी। पवित्रा रापरा नारी आरा सवी पवी रुसरी ॥ अ
पमान सरी च कीरु रुक्ता अनरुकी। पृथ्वी वाचकी च वृहत् रुला च कवर्हिणी ॥ अ वृही अ वयी च की अ दधी रु स दहीनी। ने व सैरु
ना व सैरु नी ना व की प र नी रुथा। की याना वी अ स नी च विमान वा नी धी रुथा ॥ ॐ ह्रीं विष्णु या च कवर्हिनी। वर्धस्व च क
वर्हिनी व कुर्यात्तु जायुध रु पूर्व वरु ॥ पृथ्वी या य स र वा च उ प पी ल व सैरु रु। रु सी न धि मू कि च र्या च द द ह रु रु च क का ॥ च रु न सु मि दं च
कं निर्माद्य काय सैरु कं। पञ्च लखा द ह्म दि रु सर्व ल क ध ल कि र्क ॥ दिन रु द वी रु ना व अ र्व नं च रु म धु ल। वाक् रु म्म ह्म नां वा न या री व य थ
क मा रु ॥ पूर्व स्व दी व जा रु वा ड रु न ग ल्ध नि का स्म रु। पश्चिम व रु न दी च द क्रि। ध व रु वा मू खा। कान रा। ग व रु द वी रु धी। न ना दि य थ क मा रु ॥ व

ॐ

ज्जाला मूखी द वी व रु रु कू टि मू खा स्म रु। श व रु ख रु च रु च रु च व र्ध दि र्कं रु पूर्व व रु ॥ महा नो डा क ना ग्ध मा ज्जाला वि ना जि ना स्म रु। वी ना धी
व र्ध नू यं रु य थ च सर्व या गिनी ॥ मधु माला धृ ना सर्व वी ना नां प ह्म मालिका। रु टा म कू टा च रु वी ना सर्व। री रु स्म रु ध ना। उ न रु पी न या गि न्य रु
टं व रु उ म रुि रु श। सर्व ल रु ध। म म्म ना वा ना क्क कू लं सै रु वा श वी ना धीं सर्व ना मा नि प थ म च क्का दि र्कं प र्वा ॥ व रु वा ना हि नां वि श्व प म्म ना नि र्कं च
न रु कं। ख रु क या ली। महा च रु कं कालं च रु काल कं। वि क टं ड रुि रु ना वे न मि ता रु व रु प रा श ॥ व रु कं कू लि कं च व रु रु किल कं रु था ॥ महा
या गिनी व रु वा ना धीं रु रु दी व रु रु ड की ॥ महा द वी वि नू या की महा व ल व रु व रु की ॥ काल मू खा का स ग र्ग प द न र्ही वे ना च नी। व रु स रु
महा व रु वा ना धीं रु रु ना कि नी। धै र्यं रु र्य मा रु रु ना ड या य वि रु व रु की ॥ धै र्यं ना म य थ द वी रु लि रु नि रु का न य रु। प ह्म नां रु व रु
धो धो ना या पि रु। धै व वा ग रु प म्म रु द वी नां स्वा मी रु का न य रु रु ॥ कं रु स्वा म्या दि रु व रु रु ड क ल्प य थ जि ना ॥ रु व सर्व वि ना य रु व रु रु

वा० क

नसहस्रकं। नामागुधरुदरिचानिर्माणकयिकात्मकी॥ योयस्याचक्रस्यायागुधगिनीप्रथमार्गि। कया ददधविष्णुयासंवा नीपी० प्रपीथकी
॥ (१) पायथादधीरुमीधनकाध। दिवासिनी॥ वक्रादीनामवीरुयायूषं तुल्यादिकावकी॥ वीवश्वनीधीरुथवेवमभनवासिकथनी। द
धधप्रथमंरुयंदिनीयंवायादधकी॥ रुकीयंखधुनंवापिचरुथंवायखधुनी॥ पचमंरीषधीपाकी॥ यथंवापिरुयंकवी॥ सफमंमूल
रिन्नरुउदधकंरुअरुमी॥ महानवकपालाअरुअरुभभनकसदा॥ सामान्यासाकवृक्षअयालिजाकाम्बनीरुथा। अम्बनीरुगम्बनीचरु
लीनकीपिधवकी॥ नानावमानसंयावयागिनीपी० वीवकी॥ खवनीरुवनीलन्यायापिसापिमहर्षिका। रुपिनृत्पकिसानंदामहाममा
धिकावधरु। कवधंअधवकान्यासिनहीनींरुनृत्यकी॥ सफकापादहीनींरुमिन्नकंकादिर्गुकी॥ अवमवनिमध्वपिकावयन्नरुगादि
की॥ नानावर्धनांरुयावाहनंयस्ययस्यरु। निव्यन्नमधुलैरुयासंवाधिकावध। समी॥ यादगीरुगुवर्जचपननपिनादहीरुली। सर्वकर्मधि

८६

आनीकामिर्णमूखाअदवकी॥ कटवृन्दं समाकृष्यविष्णुमूद्यदयनृयना॥ वसमाहूयकवकीवसायनं कवृत्विधिंअथान्यरुमैसंवअनसाय
नविष्णुरुमं। यनविष्णुनमारुनसाविमोयायलकृष्णं। सामसिल्लककसुवीरुषअपीरुवन्दनं॥ पृथकपृथकसमाकृष्यनामनधवंच
नी। एषयचकृलात्यनामधमाक्षमिसेरुव॥ सामान्यरुवकीनवृक्षसूयविवर्जयना॥ वकवर्धसूरुडोगि॥ कृष्णपकवजसुना
दालिकात्रिग्वकधीयासुगभ्रकृष्णानका॥ रुस्यायूषंप्रमसस्यासर्वालिमकसिद्धिदै। गुक्तपकपसर्वापदपसर्कजोदिकृ॥ आय
काधुआचरुद्यसूरुकिं कसंनिहीपडास्मासमिरुमनारुि॥ रुस्यावलसं। एषंरुषयैसंगहंवनी। की। नादिशऊनात्यनीपी
कवन्दनसंगहं॥ रीषजंनालिकाख्याकंमोसजंवजिधाचरुं॥ उरुमंही। र्षजं सूर्यमध्वमंनालिकारुव। अधर्ममाससंयूकंनसायनमिविधा
रुमं॥ वयूषयूषिकृच्चदंरुवृक्षसर्वलकृष्ण॥ व्याधिप्रिसृगनारिण्यारुयजंमौकिकानदी॥ चरु॥ समाकृष्यनिहीपयूषसवरुसदा॥ चउंच

वा० क

नमिपारुखीचद्वचनमिनापिनि।सूर्यःसूर्यः।यारुखीसूर्यः।वहकि॥सुवि॥।नरुद्वसुसमायासंनस्यदशाचनित्यसहायमासकृत्तया।गनअ
युर्वर्धनिसर्वदा॥वासनस्यपदाननयनिशुद्धनकर्मदा।जीवपिनिनूतंसर्वशुक्लपदुदागीयथा॥निर्वजनपीरुहविर्ममलामलविवर्जि
तं॥शुद्धअनुरयुक्तवदुर्धवविवर्जितं।पसनंनिर्मलस्वर्गकिंवित्स्वष्टिकर्मरुवं॥शुद्धस्वष्टिकरुद्वर्षिपुवधनमरुमं।मस्यमंमंरु
थयानंस्त्रीसंगविवर्जितं।धीनाविनीरुसगुर्धस्वदहायनियानयन॥साईशिथीसमायुक्तंगुहांरुस्यपवहायन।दवनावाधनंकार्यअलिव
लिसमन्तिनं॥स्वाधिदवनाया।गनअविद्धितंमरुजापिनं।दानयुद्धकर्मकार्यशिथीसंकायकानयन॥निर्मोदस्वदनसंषाफिकिश्चनि
विष्टीकृतां।सखमासनसंषाफंमोर्नकुत्तासवृद्धिमान॥स्वदहंयुक्तयत्सम्यकसम्यक्फवलानिवा।रुकेयथासक्यकर्मदहावर्षादिना
मरु॥वर्षद्ययंवसनरु॥सिद्धिकावसधीसदा।द्वादसिद्धिसंषाफवलियनिरुवर्जितं॥नानावागविनिर्मकंजीवदावदुकावर्क।दवाप्त

८१

नमन्यानांसर्वयोरुवकिवस्वरु॥पचनवहिवस्वुनांनिर्वाधंशुक्लकृत्यन॥नरुकर्मसंयुक्तंमिष्टसिद्धिप्रवर्तक॥कामधेनुसमंदहंरु
चनीसिद्धिमाप्नुयात्॥वृद्धीगीनेष्टकालशुनिगुधीवावल्गुर्जेश॥धूर्तनयननिर्यासकस्तुनीवन्दनाचिकेश॥उरुनयनियशस्वीमयचवालस
मन्त्रिकेश॥सर्ववागविनिर्मक॥सन्वय॥काकिरुद्रवर्क॥शिरुलावन्दनाचनीवर्क॥धीरुलयासह।कस्तुर्यार्य॥पिवद्वर्षसीरुवर्क।ऊनानू
जा॥शिरुलावन्दनवर्क॥कस्तुनीमरुसवयन॥यन्मासमारुसंमयदीर्घाय॥स्यात्सन्वयवान्।कस्तुनीशिरुलायुक्तंपात्रानमारुसंमिर्गं॥
य॥पिवरुचरु॥पीरुसंरुवनिनूतानूतं॥वदुमर्कु।कषायाययन्मासंरुद्रयन्तवाय॥रुस्यजायरुसिद्धिनिपि।कानारुसंहाय॥नर्व
सर्वक्रियावीनावदुयागिनीकुलाकृवा॥निर्मोदकायमपिलयागिनीविधिरावना॥ ॥रुकिवदुवावाहिकल्पक्रियात्मकमहागुरु
पयागानमासनविधि॥ ॥मृधवदुवावाकागुपूजाकृत्वायथाविधि॥गृधुसाधकप्रवक्ष्यामिमुद्रादवगुनस्य॥चूविकाचरुथावा

वा० क

माजाकिनी नृपिणी वरुण॥ यनायुक्तानुवर्हिनी यागिनी षट्पयनास्तथा। वामहस्तद्वारा सुदर्शयिष्यो गरुदिकी॥ निविधमकस्य सुवीचा श्रुतं न
स्त्रिविधार्थकौ। तथा गमं वरुणसूर्य आलालिक पनमास्तर्क॥ हनूक वामहस्तार्थं विमं पटयार्गं विदुश्च वाचनामाम की गावापाशु वाचन
नात्मिकाशा वरुणधर्मी श्रीरूपाय घातमितास्तथा। उर्वरिविधार्थं या सुवीचा सर्वजगत्परि॥ क्रिगिगर्कादिकं रुरु तथा दाकादिनायकी॥
क॥ श्रुतं गगा दवी अमुलीय तथा गमी॥ गुह्यसत्त्व तथा दवी गलहस्त तथा गमी॥ नखदुकी तथा वीची क० कस्तन यूयागिनी॥ अग्रहस्त
मयं गुह्यविवर्जय दधश या यस्याधिपतिर्लुगस्य रस्ये वलक्यरु। मन्त्रा रुक्मिण्या गन को शिकं नाशिका गमी॥ रुक्म गाजन कर्तुया
स्मृतिवत्तन चात्मना॥ सगहं गुमहा मूजा सत्त्वा न सर्वका न जां॥ नाद्रु का नो गि सूर्यस्त्रिभुव हना सागुर्मं तथा। रुक्मिण्या विषया च स्रक्म दयं न
नृपिकी॥ श्रीमि खनय मृगं दुकसर्म विरुवी जकी। उर्वक नागि यागिनी रिश सनय नय ससस्मनी॥ काद॥ शुभ्रगर्ग विरुं माका स विध नः

८८

यकी॥ समनसास्त्रा दनचकी यक नागुर्मं दाय॥ ललना सखसामर्थ्यं गमं वीजमना रुवां क काल वसदा मूडाल लखनी न शुभया॥ प्रविश
मि वाधिवर्कमान नद यदुय साधक। नान्या या यस्मिंसा न विमूकि शुभया विना॥ यागिनी गद्य पत्न्या सुमन्त्रा रुक्मी महायसी। सफर्किं दाम
हावक मकु रुकं गुसाधकी॥ उं समकु रुनि विमूर्धं रुन समिक वा ना ही निय॥ दहं हं हं हं रुदस्वा स्वाहा हा॥ उं वं वं वा नाहिय हं रुदस्वा हा
॥ उर्वमकु बाजा नापिन रुमान रुविद्य कि॥ गृष्टि संहान क ना रुद द पदं मूदा रुना प्ररूपा या मिना दवी वर्णं स स्थन पूर्वकी॥ प्रमि मूडा स
र्वरूहि न दा क या अरि रूया। अरूक या म हा मूडा मिना हि या गिनी यूनश॥ नन का दि रुगम नं वा उ चो नादि मादि रुना नागम धवा वी ना
सं पत्न्य य दाय यन॥ गुनूप सा दना वास्ति रुत्पत्न्या शुभा विदुश्च। अत्मना सिद्धि राव यकी यक ना न्यथा वचश रुत्पत्न्या दना मूकि सुविह न
दीरु रुविदुश्च। गुनूप देहा ना रुगं मपी उं वाधि पात्रिकं। विरु नर्ग शुभकी प्रमि शुभा स नृपकी॥ अथ वा सर्व गुनू द्वा शुनू वा सर्व सर्व की ना सा

वा० क

यत्र महाह्वयं वाक्कथं तीरुगा चरं॥ कायचक्रमहासिद्धि सर्वपापनाशकं वहां न सोखी न वा सोखी तु सर्वं नरु महादयं॥ ॥ॐ मिथी वज्र
वानाहिकल्पकायचक्रं पथमं॥ ॥ॐ ह्रा ह्र ग वा स्वा मी आ स वा नो च या च नो॥ न ह स्पे सर्वं नरु धीं अवय्य तु यथा विधि॥ वज्र वा नाही स
हादवी पूजौ कृत्वा यथा विधि॥ गृध्र साधकं पव आ मि मूडा दवी गु नू स्वयं॥ चूचिका वरुणिया गिनी नृपिनी या गिनी सदा॥ पना वृणा नू वही नी
वा नाही यथा गिनी कथा॥ वाम हस्त रु यत्र न व द दाय क या गरु ड की॥ विधि धर्म के क म्पा रु वी ना श्रु वि वि ध र्द की॥ कथ ग र्द व रु स र्थ आ ला
लिक यत्र माथ के॥ ह नू की वाम हस्त गी द्वि संपू ट या र्ग विदुः॥ ला व ना मा म की ना बा या धु ला च ने नात्म का रा व रु क्ष सी ध नी ह्वा यथा गिनी
पनि वृणा॥ न वरु विधि र्द ह्वा सु द वी सर्व ज गत्य की॥ वि कि ग र्ग दि के न रु रु थ जा कि नि ना य की॥ प का द य त्म हा व रु क र्म क्थ या ग ना य की
॥ व श्र मि क र्म के दि वी सर्व स वा प का न के॥ यत्र सर्व या गा शा लु यी जि द वा दि के र्था पथ मं व रु वा ना मूल म रु व क र्म के॥ आ ह्वा य य नि

६९

दवी रुग्णा मारिः कलिगक॥ रुक्म लयू हि उत्यत्र आत्मा मीलयतु आहूया॥ सकृं ह॥ त्र क म (ध) रा व य यत्र म श्र वी॥ वीजा कृ न य उत्य
न रु द्वि प द मूल म रु क॥ न च रु न वि ना ही च ॐ ह ला क प न रु क॥ उं स कि न मा स ह रु सु मु हा रा सा य रु क रु ट ना स्वा मा हा व ल्या
क व र्ति न रु क रु ट ना स्वा मा हा व ल्या क व र्ति न रु क रु ट स्वा हा॥ उं व व रु वा ना हि य रु क रु ट स्वा हा॥ ॐ दं म धु ल व का गु रा व थ रु
प धा न रु ॥ व रु वा ना ही अ ध र्ण मूल म रु व रु क ल्य रु ॥ न रु स्व ना के रु म न दि ग्ध वे न रु क रु टि न॥ ग र्ग रु स्य वि रु या रु धू पा द र्थ सि द्धि कां रु या॥
स वि धा न रु ग व र्णा धू प ना न न म रु ॥ ना य मा ना स्व यं रु न रु स्व ना न रु व रु की॥ वि रु वा रु ला क रु ना मि थि रु धू य जा य रु॥ मा रु न
व रु क रु चि रु क का न रु रु दे व रु वा ना म व रु क रु ॥ या गा द वी म श्र म य रु ॥ का स र्व क म्पा व रु क रु यत्र म र्थ (ग) व न॥ लि य मा न म
रु या (ग) वि रु न (ग) प क र्म रु॥ ग म ना सर्व संधी व रु ना सर्व महात्मना॥ कया ल संपू ट व रु क रु हा म वि धी य रु॥ न व रु सु स मा स्वा र्ग म रु

वा० क

यं प्रकिया लभ। यागिनी यज यन्त्रि स सा मयानं दिन दिन॥ जर्व कुरु सु म कुरु १ सर्व सिद्धि पदाय क१॥ मी सै स नया ला श्र वा म ह सु न हा
मथ न॥ सर्व द व स न कुरु रा गा दि लि द (हा स ह) वृक्षा पि व स मा या कि किं य न १ कुरु मा नू वा १॥ नि शी व नं द क का र्थं स्व द हा द रु न ग थ ॥ न
मा म था क हा म न सर्व ला क व स मा न य न॥ न क स्व ना या न क न नु क मू जी र्थं रा ऊ न॥ सै यू के र्मा नू षे १ क (हो १ स य मा क र्ष धी य नै। स्व का र्थ
घ न मू जी र्थं स्व क (हो १ म य दू ध १॥ नि म्ब का र्थ नि स दी य स य वि दू ष नै य नै। का क य कुरु क हा म धू रू ना यि स मा हि रु १॥ न दू र्ने ल न सै
यू के स या सा र न मा व धी। न व स ह सा रु नि वा रि वा ना डा क मा प्र या न॥ या रु हा नि आ रु कि मा स न हा रु क वृ न १। क स्या मा स न या इ र्द्य नि
द न धू रू क र्मा क॥ हा रु कं सार्य क य सु म रु व रु न व च्छ रु १। न क विं हा कि ना रु हा सि द्धा रु ना रु सं द य १॥ अ नं ग षि व वा रि रि १ सि द्धा रु म द ना सु
क १। का वि क ल ला का नी अ वं द स्य रु न व रु १॥ की उ रु रु न व सि द्धि स्त्री का टि रि १ प वि रु रु १। पी व रु वा ना ही क ल्या र्थी ह वृ क स मा या गी। व

२०

जा चार्य य नं अ रु सर्व वी न न स कुरु न॥ सि द्धि दं लि पू ला क य स म या वा न व क्रि न॥ जर्व हा म कुरु नै सि द्धि १ पू र्वा क या ग या गि रु॥ न या ग सु य ना
क र्म न क र्मा या ग के र्वि ना। सै का कि द्वा द (हो १ क र्म वा य र्वा ह न गी ग रु १॥ हा म क र्दा क नू य य उ रु य स कि मी ल ना रु॥ द्वि ना रि य म ला या
१ सर्व सै धि य क य न १। रु मि का ल रु वि रु या म रु व रु न रु म रु नै॥ ऊ पि त्वा ज ल (हा गु र्थ कृ त्वा सि द्धि स म रु रु १। कू ली हा य रुं प्र क र्ण द का
न प अ र्थ ग रु १॥ का र्थ नि द्वा य य रु सो मू रु ना रु म रु मि द्वा। क का वे ना व नै प थ म स रु म च य न १ स व॥ न व म रु का नै द या रु या द (हा गु रु
न क॥ स रु द (हा रु का न व रु न का विं हा कि रुं य न १॥ न क विं हा रु हा का नै द या रु य रिं हा गु हा न क॥ स रु रिं हा रु हा का नै द या रु य रिं हा नि का न क॥
स रु रिं हा म द या रु रु का नै या रु य दू ध १। न क च त्वा रिं हा रु रु रु का नै या य रु रु १॥ रु य च त्वा रिं हा रु रु रु न वी ऊं नि या रु य रु। न का न य
वा हा म द या रु का नै सर्व सै रु क॥ द्वि ती य का र्थ य न द या द ना। मा दि कं स्व नै। य रु का रु ग थ अ रु य व नं सर्व का न रु १॥ द हा म रु का नै द या

दा० क

द्वादशयका नवकं गुरु ॥ अष्टादशका नवचद्वर्णिं (दातु पत्रमाद नं) ॥ अष्टाविंशका नवचत्रत्वा नि (दातु का नवकं) ॥ चोचत्वा विंशका रथा गुरु
 गृकाने दाययत्न ॥ अष्टचत्वा विंशका मकी हंका नवधरु रं सदा ॥ अष्टमचरुत्वा अष्टम सर्ववर्ष स्वयं पून ॥ चतुर्दशका नवधरा ॥ अष्टम
 का नवकं ॥ विसम आशका नवकं च चतुर्विंशका गका नवकं ॥ षड्विंशका नवकं दद्यात्किं दमवां नियाऊय न ॥ चतुर्विंशका यदं यो दुषत्किं दना का नवकं
 था ॥ द्वाचत्वा विंशका दं दया दुरु मरु समा सग ॥ द्वादश नां दुका खानां साधना म विदर्हि नाश ॥ हंका नवधरु का खानां मध्व साधना म लिखत
 मूलमरु ॥ समा वष्टा वरु मा नं दुका नय न ॥ यूगा वरुं समा लख्य वध कुरु र सो रला ॥ वध दय ॥ समा लिख्य यत्नं वरु समा रु व ॥ आग
 द्वा विंशका विंश वरु धनं रथा ॥ समयं सर्वं कुरु या पव ॥ मरुं निया रना ॥ अष्टा मिक नहा म नहा ग र्यं मरु नाय की ॥ ॥ अथ कर्म व
 नं वरु वी नस्या दय या गुरु ॥ या गिनी गुक्त यूजा वरु दालिं ग व न ॥ पदा ॥ पूरु य रु का वधू की च सर्व ना लो व सा ध की ॥ पि सा च मूल मूर्ख च प

क्रियायावदिच्छति॥ तावन्निर्गंकर्म (धरुवकिनायथापवदाम्यहं। रुमीलगाकिलरुलनपचत्यादकलायक्रुक्॥ कलिंजंरुगवनिविडु
यीसर्वकारंवरुद्विदुः। याथाकुरुकवाहिनीश्रुधर्गधालिवरुनिवासमरुगानिकानिकानयद्विधिवेषमहाकृपश॥ अर्ककीनपि
स्वरुननावर्हिरुलिंगक। यत्प्रसाधमिच्छतिवरुसुमाधरुवदिनि। मिश्रमुष्णदकनापिप्रकलथत्पूर्वप्रमानक॥ (धनयप्रकधालीव
ध्वरुकीलंरुथापनीनवनीकेकवीनस्यमूलसधनासरुगक॥ पिच्छानारिलयंदत्वातावन्निर्गनयर्गनि। नरुनीद्वयसंगुष्णगवामन्दिर्गस
मा॥ पृष्ठद्वयंकथिर्गवयावरुपृष्ठद्वयंरुवकि॥ (वर्षपित्वासफदिवसनिष्यादथदसायनी। (वर्षयागवर्ष। (प्रवृत्तसम्यक्की। (वर्षाषिर्ग॥ वा
नवस्यरुलंगुहीत्वाचूर्णकुकावयक। सूकद्रियसमायुक्तवर्गीकनधमुरुमं। वरुवानाहीजायमानायरुयगपिवस्तिगशसफरुयन
कर्तुंन्यासवसयनूराऊनं॥ यैर्यविरुयलिःसर्वकहिमर्वप्रदाययक। ध्यानवसुसुवर्णकरुकरुगायनपानकं॥ कसर्वमात्र्यामकीक

या०क

नगृहीत्वा प्रपूजयन् आदिकान् कनकचक्रं च कीर्त्तयन् साधकं ॥ विद्यया सयुक्तं मनसं स्पृष्टं न न वक्तुं न ॥ एतद्द्वयं नृपविकाचं नृवक्तव्यं
नान्यथा ॥ अनया विद्यया सकृदुपनिषत्कामादं ॥ नृवं च यस्य यस्य गुणस्य नृस्य नृकान् धिबन्धनं ॥ काविरं सगुणं वक्तुं नृपध्वनिं ॥ सर्व
यामृदकं मां रं नृवक्तुं नृसं दाय ॥ म्रियं दृष्ट्वा स नृपा नृनां ज्ञानं वही पतिं ॥ आकर्षयन् किं सर्वं मृदु वापि साधकी ॥ सफारि मन्त्रि
कृतानि सायां गच्छन्ति सत्वा ॥ स नृव नृस फा ह नृगच्छन्ति नृसं दाय ॥ नृवं कृत्वा कृत्वा सर्वं कर्म वही मक्षि मनी ॥ स्वयं वदन् यागात्मा सिद्धं
हृन् या नृग ॥ यन् नृधुका यन् नृनालिका स नृपिका ॥ अरु नृधु महा वायुर्दवता सर्वं गमिका ॥ वक्तुं वा नृही महा दवी यागिनी स
नृसा गवा ॥ ॥ बुद्धिं श्रीवक्तुं वा नृही कल्प यागिनी नृनृवा क्ता मय नृल कृष्य पटल अष्टा दश पटल ॥ १८ ॥ अथ नृनृवा ह वक्तुं
गवा नृवक्तुं स्वामिकी ॥ सूरुडा यागिनी दवी हां यागिनी यूप याग नृप ह व ल य विरू या म नृख ग कि क्त्वा ॥ प्रमृदि ता यागिनी या

गीमूलमरुस्यु॥ क्लानवास्वासवावात्मासर्ववृत्तिमयमागहं। तत्सर्वेषुकर्मेषु नाजिस्त्वानक्लपनाह॥ समुप्ययीपविष्टस्य सर्वपाः
 दानदेकै। रुक्माने महाकर्मकृत्यामूलमरुस्यु॥ कैकानवायुविक्लानगवाहमहानमात्मना। वीजोक्तैरगताह्लात्वाउत्पत्तिरिति
 लिख्यता॥ एकैकस्यवीनस्यश्रुतवमूलमरुकै॥ उंमहाक्लानपिहमसेगरुपुक्तिरावयवकैसाहंहाहृदयिहृद॥ एवाहृहाहृदस्वा
 हाउंमरुडहं॥ उर्वमरुसमरुहतावर्गनृपैरुक्तमह॥ हावयैगुक्तमहृदयागामरुसमनृपकी। वलिहामंचकैरुवापय
 कर्मसमानरुहयागनृजापयुक्तुहत्वासेरुहसदेवदु। यक्तुचकीपवशामिसर्वसखाहिनादयी॥ पूर्ववृत्तुचकषूक्तुवामरुमिर्म
 न्यमरु॥ वेवावर्नपथमरुद्वितीयविन्यमरुग॥ हनीयहंकारंदयत्यंचमउंकारकी। षष्ठगुकारनकंदयारुहंकारनसकमवकु॥ म
 रुमरुकारनकंदयाहमचगृचकारनकी। द्वादहंकारनकंदयारुचतुर्दहंकारन॥ यचदहंकारनरुवाउहंकारनकीरुथास

फदसुसैकावैचकविंशतिविन्यसु॥विंशतमरुद्रकावैदयानरुद्रकावैचकविंशतिविंशतमरुद्रकावैचकविंशति
 जाकावैदयादयुक्तिं॥गुकावकी॥चलोविंशतवैदयादयुक्तिं॥देकनासु॥वहुसुं॥यकावैचकविंशति॥गजाकवो॥यचत्वाविंश
 जाकावैचोचत्वाविंशतैकावो॥यचत्वाविंशगुकावकुसुमचत्वाविंशतवाअष्टचत्वाविंशदयाहंकावाकवचु॥रुगहादंयून
 दयादकानयवशगुवा॥मूलमकुंलिखकुंषीवकुंषकयसाधकी॥रुयगीवैलिखत्तकीसमकात्यविचिर्न॥दिनीयंवाभावहंचसंपूटय
 रुयलिर्न॥गुसुक्रवषुवात्यहिविंशयासहयागिनी॥नागकुंष्टिवस्यवदवादीनीकुमावर्षी॥सदाकृयासकायागीमानवीस्वचिरुजंयूनश
 रुयार्मालिकसर्वहियापियापिचदुर्क॥नारीवभाव॥सिद्धिपाफाउदुष्टवरसी॥सम्बन्धनोयकर्मनसर्वकीयरुधुर्वी॥वक्रकुरुहसं
 याचकैकैकर्मकिंविन्नागवाजाकथावाशोरावयवाकमाकमा॥पा॥वासाकीविंशयाअया॥सर्वपालकशसमानायमनागीकुंषावा

महायमकी॥यानरुद्रकनागचहंलुवयूनशयूनशकर्मकिकविंशयाकृयाऊयनागके॥दवदहाविजयैकुअनककुधनेजया॥आक
 र्धर्षपव॥नवचकनविमर्कुनीवर्षायेनकुंरुकननिवावर्षसमवायेना॥नागिन्याविविंशयानाविंशानकसु॥अनाकानदयै
 वाच्यदहाविंशानरुद्रकी॥हंकावाष्टाष्टकंदयासमाधिनावाविधसु॥अन्याययूममाधयेनागिन्याकुरुसंगकी॥महावज्जवावाहिम
 र्वासाधयनागमधुर्ल॥यथाकुसमयवर्षनिजुष्टपहनेदिसंधिकी॥मूलमकुंलिधनवीविंशयावागनागनागिनी॥कुंडीयंलीनकैकृवा
 ऊपिखालकमक्रुवो॥यैयैकर्मवाकाकुंरुंकैकर्मवर्षनयकु॥नूर्यैयकुंष्टिकैकृवाकाटंवासोम्यवृषको॥चिरुनूर्यैसमाख्याकैकस्मात्सुद
 नामै॥सर्वधियत्यथा॥गनदंदवकाकीयरुका॥तान्यदवसमाख्याकैवास्मिन्कैयूनशकनसर्वहियाननया॥गनजायकृया॥स
 वानीवासहादावावाक्रमघाअपस्थकि॥वासनाकयकालकुनसर्वनागअपस्थकि॥रुगहादंरुगवानस्यामिवज्जवावाहितथागरुशस

५४

मयलुसदाकस्यकियननान्यथाववशयुर्वाकाकाष्टकंस्त्यामकुमालामिमानीयमरावेनाचनेपथमकुद्विनीयमौविधीयरा।हनीयैरुकारने
दयात्यक्मवदार्थकथा॥यष्टगुकारनकंचैवक्तुकारनसफमयूनभज्रुष्टमद्विहंकारनेचनवभरुत्कारनरथा॥दशमनिकान(वेवदादमहंका
नकंपूनभज्रुष्टमद्विहंकारनेचनवम।श्याद(शरुकारनचबुद्ध(शगुकारनकाहंकारनपंचद(शरुकारनवाउमचकुसफदमसकारनचहंकारने
कानविंशक।विंशमहंकारनंदयारुक्तकारनचेकविंशक॥विशचनेकानकानकिंशमवरुथायूनभज्रुकिं(शज्ञाकारनचकुयकिं(शवेनाचने॥
चकुर्किं(शआकारनचरुक्तुकेवयोजयरा।यक्किं(शययद्वचवत्वाविं(शद्विहंरथा॥षड्किं(शहंदिहंदयात्तफकिं(शरुक्तानकां।अष्टकिंम
ययंष्टवहांकारनरुदाययरा॥नकवत्वाविं(शरुद्वचवत्वाविंसमकुनाजसद्वनियोजयरा।विश्याहद्वयूनमकीकाष्टाष्टवत्वाविंशमावांकी
नैवयूनद्वयादकानयैवास्को॥(शषाष्ठांकवत्तामकुसाधनामविदर्हिनी।यममुखसर्वको(शषूरुक्तयादादिकंनयसरा।हृदययमरुमिनु

मरुमालामिमन्यमरु। पथमेव वाचनवद्वितीयेरुनिजाजयक॥ रुनीयसेरुदयौतुयंमवदमादिकं। क्रकानेव सुमदयाहूंकाने
 मरुमन्यमरु॥ अरुमस्रकानेनवनमसेवदापयक। दहामहंविद्यातुहाद। हागृकानेयूनश॥ रुयाद। हाक्रकानेवचरुद। हाहंकान
 कं। यश्चद। हानिकावचरुहंकानेवाउ। हान्यमरु॥ सेफद। हाहृदकानेगृहंकानेवाउमन्यमरु॥ हंकानेविंशमदयाहृदकानेचैकवि
 शक॥ वेवाचनका। हाकिंशककिंशककान्यसत्येनशेचकिं। हासेवदयासेवगुसफकिंशक॥ अरुकिं। हाहंकहचवाविं। हाआनयय
 दां। चकववाविं। हावांउदिहंकववाविं। हाक॥ शिववाविं। हाकययचरुचवाविं। हाकसतु। यंचववाविं। हाकहृदरुगमफचवाविं। हा
 क॥ अरुचवाविं। हाकहृदरुजकानेपंचाविं। हाक। गुन्यहृदयमरुगृमाधनामविदकिंसी॥ परंमसर्वकालिखितामुखययकधनदां। संपू
 षकानेकंकृत्वाहमहानकयेठचरु॥ नाहिस्मनरुदयकुरुवावयलुविवरुदशधर्मधनुमयंपरंयमकल्यस्यरुहृदश। अर्थवस्तुनस

२६

नयकली। हांसावधाना। नागगतिमहाशानीस्वरावेसर्वयकुकं॥ वनादेशुतागुरुगतिंसचयवंचनो॥ अन्यायानसुयथापिदशानापूर्वकः
 मिमीको। अ॥ धार्जचक्रवाधुचवगमपयागरुभप्रयूनीयवाधुमिपीकिनामसमासकश॥ संहर्तंसर्ववीनाधीचक्रवर्णादिकर्मकां। रुनि
 डाकयालयलंलखयदलकमिप्रिं॥ चवकिंसर्वकालतुनायादयूसार्द्धयुयौरुदावाकानव्याकृआगत्यागतिमकृते॥ कमास्वासनक
 र्याउदियमृडांनालयौ। स्वयंविह्वानसुखयूजाकिंसर्वत्मकंविदु॥ वयनेनरुवरुस्यसर्वकालयवृद्धिमाना। क्रियासर्वानिनान्यस्यपरवः
 किकृर्गमनाहू॥ ग। हयदानयंकस्यकर्मधवद्वरुगुको। मयंरावस्मवयागीरंरुवसुकथधना॥ पविर्कनकर्मधनान्यंकर्मस्मयतूनश
 रुकुरुमहावाधिकीयरुसर्वजकुकं॥ यूनवपिनिर्वाणचक्रवाविषकिमहासुखात्। यकिजानीमयानकरुचसर्वयर्जकदी॥ वाधुमिपीकि
 र्जकवस्वरावकुरुमंरुवी। उर्वचसुकथकर्मचक्रवगायदस्तिगी॥ वरुंसेस्मनयूर्वगुतावयचक्रमधका। मरुसेस्मनधर्मात्मासेरुवकिः

३१

[illegible]

५८

[illegible]

पूर्वविदुः उरुनकु नृयन (ग) जनिवच ॥ नृयौ वरुयदीया सो नाशु मियवस्ति नाश ॥ उरुदी यदु रजा मियवस्ति मीविधीयका उयदीय
 मयानमयुध कीर्थरुलादयो सो कान नमया पाकं नाज नवहन मखी ॥ वनमावंधया गनमधना मया दमकिवा अमदया पिसकुन विदु
 र्वपा (ग) यानको ॥ ह्याययमिनरा दृका कु काने सर्वमंधिगी ॥ अंगप्रविचयं न नवजने नात्यवाधिगी ॥ अनेन मकुया गनविदुषरी गुमावरी ॥
 उरुदियं विषयं सर्वे विषयवा क्लोकि कौ ॥ कृपया मा निरं करि नात्मना मूकि रुकु कां वा नाका वक्रम (अ) वृत्ता वरं वक्र नायकी कुम (अ) दय
 नृपा सिख रं वा नक मायुधी ॥ कस्मि कालवसे रूगी सकृत्ति ॥ कृ नवृत्ता प्रह्लाया या सनृया रुविहूया वक्र नायकी ॥ उं वक्र वा नाका सर्वे ह्या मृग
 पवर्धरु यनाय नरुं ३ रु ६ ३ स्वस्वा हा हा ॥ उं सो धिनी यरुं २ रु ६ २ स्वा हा ॥ रा विना त्ताम हा या गी कर्म कुर्या यथ सिर्ग ॥ अम हा नै ग संदी लख
 यमानु खामि नाश ॥ सर्वा यर्वधी नरु गान् पूया दिस मधा तुना ॥ वक्र पूर्व ना वाचका वृत्ते कान यवम हा कौ अना नयुग मकुं अरु नक न्य सद्ध ॥

९९

वरु ४ का (अ) वे ना वन वरु दान वृया गिनी ॥ रा य प्रथम यकी वरु रुका वृय यथा कर्म ॥ जसं रु वरु सन रु द्वितीय सयका वृका अरु मा गुरु
 हा काने गुरु रु गवां विषयथा कर्म ॥ रुगी यमध्या (अ) द्विरु चक्र व २३ ॥ २८ ॥ या रु या वा नाका यथका ययप की वृ विहूया वं अना यरुं ३ रु
 रुक था ॥ रु रु रु रु यथा वसे र्हा यय सर्व मकु कौ सफ मका वृ वृ वा कं दान वृ वरु र्कि रं क मा रु ॥ दाय यरु रुं २ व मकुं सर्व मे हा म हा म (अ) वृ य
 वरु का रु निरु था दान वरु रु यी ॥ साधना म विद र्ति त्ता मरु ना वृ पदे १ स हा वका उयुध मान वरु यग र्वं कान यद्ध ॥ गम्य रु यन सिद्धा कं
 साधकी सिद्धि रु रु ना ॥ सामा न्ना या ग रु रु धी न रु स्यं न विषयि न श सि ॥ दी नां य न मां सिद्धि वरु ना नं वरु ना रु मी ॥ अरु वरु रु वं मकु स रु नृ य र्ग
 या सिर्गं गु नृ ना रु यथा रु र्त्त पा य रु रु वा रु रु सदा ॥ य न दा ना रु था जी व निरु र्था र्गं दान म वचा जना म रु रु य मू काम रु व नी सदा रु रु ॥ स
 क र्ति वा म हा सा ही स रु वा रु व नी रु था ॥ पूर्व नं रु य था य द्या प्र कि रु ना य कि रु ति नाश ॥ काम का ध रु या ला रु मा रु मान रु व रुं य रु ॥ दि रु वा

व्यासदास्यमनुशासं गुरुकथा ॥ सोऽप्यसौ र्ययविर्देवदयादयं न कल्पयन् न कायातिमानव लुकिर्निंदा विपर्ययक ॥ सर्वमाधनदेवुष्टनि
 संगनिष्पृष्टमदा नवमाहानवपूजां च जायं वा क्रमालया ॥ दिवसं वाचनं कर्तुं यं चान कर्तुं कल्पयन् ॥ यत्र मात्मा तन्मय न विह न निविर्
 किनश ॥ अकाम्यमाच व सर्वकाम किं च न माच व न ॥ निवर्धं याद्युवर्म कर्तुं च मूढा विरुषिता ॥ यथा यो यासकं यागी ह नू कर्त्तुं विहावयन्
 समकुरुदवर्थायां विह न कस्य मानसौ ॥ गमक वाजिदु रलयक आवय नु न्यसक ॥ नाना नू कलया गन विह न स्य धि वी कल ॥ अथ वाचा
 नु नाना मवर्था कर्त्तुं मरु मे ॥ अमया यर्थे नित्यं उका की उक मानसौ ॥ उया कय कवयाम इ ल कय लुमा शिर्न ॥ भ्रम भान उ कलि गवा उ क
 वक्रान नवन ॥ यव का येन दी नी न महा दधि ट क पि च उ या न रुग्न क य वा पा सा द शु न्य व भ्रम ॥ वरु थ थ य पूर्व दान ना रु दान म ॥ ७ ॥ पि वा
 यथि क निर्मा ल्या पि यू का च य न क न विरु ॥ भ्रम भान लि ग निर्मा ल्ये क न मूर्ति प यू य क ॥ शु ग्या म ले व य क ॥ ४ ॥ व भ्रम सर्व वि र ग य क ॥ म

१००

खलावन्धये नू नू य न व न व दया ॥ जल्य नं जय मा र्या नं ह रु क य नू मू दया ॥ निर्विकल्प विया गन विह न या गि स दा स र्वी सि ह व द्वि च न
 या गी सर्व सं का नि स द नं ॥ अथ वा आ नि उ व न मा थि र च न त्म रु स्य सि द्ध य ॥ शु न्या गा न गृ ह स्तान कू ग्राम कू स्मि र गृ ह ॥ विह न मो न या
 गन या व दू य ले धि रं कथा ॥ स फ ग दू न्य दा नी रु जा ग र्म ना पि जा य र्म ॥ उं ज य य दि र्म पा फ न रु क स स्मि रं म न श लि क्रा स्मि रं य दा विह न
 रु क ल य र्म रु रु ज नं ॥ निर्विकल्प क नू य द मि द्ध रु ना रु सं द य ॥ उ र्म यी सो ना धु म ॥ ४ ॥ य य दि दू म रु मा शि र्म ॥ किं रु दू थ रु र्म पा फ म रु
 क र्त्तुं य दि दू सि ॥ सो ना धु दान सं द या ल्य ॥ त्म रु स मा न रु ॥ व ना उा य र्म या गि न्यो निर्म ले र व कि नि थ र्म ॥ सर्व या गी नी स मा यू कं व रु स
 व य र्म र्व ॥ ० ॥ ॥ रु मि श्री व रु वा ना हि क ल्य म हा रु रु ना रु सो ना धु प द ॥ ४ ॥ य वि द्ध य द ल रु र्म य रु व रु ना म उ क वि रं गि य ट ल ॥ २१ ॥
 अथ न्य रु म र्म व रु वा ना हि रं रु गु रु का ॥ वा ना का रु रु स्य प मा र्म क थ रु रु रु मा द वा रु ॥ अथ द र्म य र्म रु रु स्य प रि प र्य म व मा ह ॥ रा य स

902

कदाचिच्छर्तुं हामकर्मस्य नृणां सदा दत्तवान्वाचवे निर्वर्तकं सर्वं ॥ अथाननकनैव श्रुतिविधि विधियाचनं ॥ पूर्वा कलक ॥ धर्म
नवर्था प्रकल्पयन् ॥ घटस्य कृत्वा प्रणिमादीनां पुनरुत्पत्तिं ॥ आकाशमधुलैव कं पञ्चमयानपूजकं ॥ विज्ञाने ध्वजयुगाकच्छ ॥ धर्म
नैव पञ्चकर्म ॥ समये त्वं समया हं त्रिभिर्नृणां यत्तु ॥ यथा हि सर्वमेव दृष्ट्वा मुपि न वृत्तमेति नृणां माया दद्यात् ॥ यथा कृत्वा नृणां सुख
मागता ॥ अथ ह्येतां नृणां कृत्वा यथा दिकामिमां ॥ गृहाद्यागिनीस्यार्थं वाधिविरुद्धं यथा ॥ अननकथा गता धिष्ठानं सुनिर्दिष्टाः
विचक्रुः ॥ निमज्जन्ते सर्वं पानं विज्ञानं नवजामयन् ॥ सगन्धं गन्धकेलनं वल्कलं कुचस्त्राययन् ॥ पुनश्च पश्य कलक ॥ धनस्त्राययन् ॥ यथा
वृद्धाकाशं यागिनी चक्रमधुलैः प्रणिमादिषु सर्वं यागिनी मनुष्यवदयन् ॥ दशकर्म कुरुकार्यं याचय वरुणादिकं ॥ अग्निनीच उन्मी
लयन् वज्रवक्रं मधिरिष्टं ॥ यथा धूपे स्मृतं गन्धं दीपं नेत्रं यमवचं सर्वं कर्म यत्तु ॥ अथ हामकर्म यत्तु ॥ दवा अग्निमुखं सर्वं

प्रणिष्ठा कानयदधशप्रतिष्ठा लक्ष्मणैषा फलमुक्तिमाप्नुयैकावयत् ॥ मृदुह रुच्यनिर्वाधैर्यथा लार्हं तु पूजयत् ॥ राजन दानदा क्रिष्णैः
 ननुष्टिचपुष्टिकैः ॥ पुष्टिं तु जनसो राग्यं समाप्नुयैषा किं कौं ॥ किं कौं इत्यर्थं यागं ताना इष्टवमप्यदवै ॥ अप्रतिष्ठा यथा दवै प्रणिष्ठा
 कर्तुमशक्नोति ॥ शिष्याम्ना धवता कर्तुं कर्तव्या यथा ह्युक्तं ॥ निर्विकल्पिक नूयन प्रणिष्ठा दवकत्यर्वा ॥ दवता ला कपा ला प्रणिष्ठा कर्तव्या
 कथं दत्ता ॥ नदा च सै किं न दव पूजा यय समन्विता ॥ तु सा हत गवा दव वे निध वज्र या गिनी सर्ववी न समापत्ता वज्र वा ना ही यवै सखी ॥ ० ॥
 तु किं वा वज्र वा ना हि कल्पमहा ननु वा जवर्धन रुद्र दवता प्रणिष्ठा विधि प्रक वदा विंशतिः पटलेशः ॥ अथ सर्ववी ना या गिनी ति
 १ सममार्जं कृत्वा पुष्टिः ॥ दव दान वस त्वानी कथं सख च जायकी ॥ यदि सर्व रूपा मा स अग्नि कर्म तु ता तु री ॥ अथ सरगवा दवी हा मरुत्वं
 यदा यकैः ॥ तु किं व सै दय मस्ति अपनय तु ह्युक्तं ॥ तु दवी महामाया वा ना का व स न के धा ॥ स्वस्य हा मा नू र्मा न द स त्वानी दवनायकी ॥

१०३

नूयताममनास्ति वाधिविरु महा इवा ॥ स्वस्य हा वगु र्मा कव रुद्र या क्षाम सै रु व श कस्मा कृ ता तु री वी क हा म सै कल्प मा प्रयात् ॥ गृध्र दवीः
 प्रवक्ष्यामि हा म कर्मा दित कदी ॥ रुमी ॥ धा धि क म रु द अग्नि कृ शु नि का व यत् ॥ अथा जुल समान यया व द क स रु च क ॥ अथा जुल नि नू त्या
 कं कथा गुल योष्टिकं कथा ॥ द्वादशी गुल व द क कौ व रु द द द धा कि म व च ॥ धा उ र्मा जुल कृ (पुन कृ ल द द्वा रि का व द धा ॥ अथा जुल प्र मा
 न न द द ना कृ ल व र्ध नै विंश द जुल कृ (पुन म ल का वा ग धा कि का शा ना नि व य म कृ शु नि ह य द वी प्र मा न रु श क र्म धा नू नू प का र्थ व
 यानी या च वि व रु द धा ॥ आ का क स्य रि रि र्हा (गे र्दि हा (गे स व लि र्हा रु व रु ॥ सर्व ता नि व कृ ल स्य मा मा नै या न ल कृ दी ॥ कृ शु स्य वा रु हा रा
 न गु र्द रु र्गै व का व यत् ॥ उ रि रु स्य रु हा (ग न न मी रु र्गै व या ज यत् ॥ यथा वा रु न न मी व रु था रु क व म व च ॥ न द्वा क व दि का का र्थ यथा
 इष्ट प्र मा ध रु श ॥ कृ शु म (ध रु व जा नी अ लै क र्गै व वि (ध रु रु श रु व पी र्गै व न कौ व रु रु रु नि रु म व च ॥ यथा क र्मा नू र्मा न द कृ शु नौ व

808

पस्थसन्निविनक्रुदाशात्मन्धवचनैवीकनकवर्णसूतावनेश॥दशुकुंठितावामदक्षिणकूमालाकथा॥यथासकृदिर्नलम्बादनसर्वावनधरुषिः
नं।आदिर्नमक्रिर्नरुयैदुर्वापाद्यादिवायवश॥मूत्रयूनीयास्यावेवचदनचक्रकसुनिका।नकायूर्यसमाख्यातं।अप।(धनत्रयायसै॥७०॥धनेनखदं
नास्तिचर्मवस्तुसमासक॥कथनामांशुदवास्पन्निकृष्टुस्यमध्यक॥अन्यंशुक्रविधानैशुनानाविहिंनदाक्रमिं॥उंऊहंकावधकूटुया(ध्ववस्तुय
यन।अशुक्रुत्वाचमनार्घ्यचदयाकू(शुयूस्तुयथरु॥समयसत्त्वसमासीनेहूनसत्त्वपवधायक।यथधूपंरथादीयंगर्धनेययथैकथरु॥जानूना
रुंनवरुहोयाजीसर्ववधानयन।उंअ(गन्वाहा॥७०॥किपथमाक्रमैवदाययन॥उंनमश्ममनेवृष्टानांअमूकस्यभाकिंकनूखाहा॥रुकोसमाहिः
नामस्तिवर्णगन्धस्वनाह्लाजक्रयकृविचक्रुदाश।शुक्रासूतकथावक्रनिमिरुमूपलक्रयन॥वक्रनकगिथ्याह्लासर्वसंपरिकाविधी॥हिदिस्वामध्य
माह्लायानिष्ठकंपसमूहली॥चदुश्मिषासमाह्लायापूरिमिष्टिनिष्ठनसदा।कूद-दुर्मानैर्लक्ष्मिन्धनयवेइयसन्निविताशानिधूमविमलावक्रिनावाग्य

गणवृद्धिकृत्। चतुर्को नाम विप्रत्वा तु सार्धं गकनकायमै॥ यथा नागनिहावापि सवर्षा पर्युनस्थः। वंधूकयुष्मत्सर्कार्जवाकसमसनिहा॥ सप
 रुमद्वर्षं तेनाथैश्चर्य्यश्चसंपदं। वपको जायलाभीलमालनीहीरगन्धवान्॥ कर्पूला नूतनगन्धिश्च गुरुस्तनाधियशयन॥ वीक्ष्य वदन्मृदंगाश्च
 हीरकाहानसंश्चन॥ अकिगकीननिर्घोषाग्निनम्यमुखावरु॥ श्रीवत्सकृत्तुहीस्वाकृत्तिहालकलगाकृत्ति॥ धंजुचामलं सरुजस्वस्तिकाचगजाकृत्ति॥
 निरुगद्वदक्रिष्णवर्णं नच कपिभुमसार्थद॥ जगदीशु रसैपदिनायनागधसंयदं। चंचलाणि मूखा कालाणि हि विषावदधूमला॥ रुवकिमस्तुलिंगानि
 विहसमानानूजाकनी॥ मद्रुप्रकंपिनाथानिर्मूर्धुसकिनिस्तुनी॥ मद्रुर्जमकिवाभनमद्रुस्तुलंगिमदिनी॥ कृष्णविद्विचिनीवामोवक्रिगावक्रयं ध
 वी॥ नृपानां वनधनार्थयहा। शानायनं ध्वं विवर्षधुमवर्षं हंस्वमवर्षं किकर्ष्यवशा॥ नूतनलाहमेला रुद्रुपिनाथविनाशकृत्। यज्ययुलसर्था
 तिष्ठउद्युगाही र्धसंनिहं॥ यासोरुयानकाकावशकथयकिमहारुयीउयशमफद्रुतादयादगिर्नकिमुमानसा॥ उवाधिवृक्रायसाहो॥ अथस्तु॥ उव

१०५

जलनाथस्वाहा॥ जक्रुस्तु॥ उं वज्रयस्तुस्वाहा॥ उद्वनस्तु॥ उं वज्रकवनायस्वाहा॥ क्रीनद्वृक्तु॥ उं सर्वयायदहनवजायसर्वयायदहंस्वाहा॥
 किलानां॥ उं वज्रयुष्टकायस्वाहा॥ अखद्युर्गदुलस्तु॥ उं सर्वसंयदस्वाहा॥ दध्नस्तु॥ उं वजायुयस्वाहा॥ उं अपुकिरुनवजायस्वाहा॥ कृहीस्तु॥ क
 राहदिकमलासनस्वदवतानिश्चर्तं विरुवीजयविधर्तं मधुलवर्कं विरावयत्॥ समयवकस्तनचकडोकृष्णपवहाय रुद्रशआ
 र्गमरुत्तमधुमकिष्णकार्वा विरावयत्॥ प्रीकृष्णसमयादिकं पूजास्तुति॥ अर्घ्यार्गुयुजयत्॥ स्वयंदवतावीजजायनहामयदधि
 सैकिरुश॥ पृथकदवतीदयायथेष्टयामुद्रु॥ उं यसफाधिकं यावत्समस्तुसमववायथाद्वानुनयभाहामयदुविचक्रुदश॥ तथा
 हि सर्वदयैव नदग्निमुखसुदयाह। समीकृष्णदिप्रतामधुलरुक्तावमनादिकेन॥ कृत्तुमसि नमिजालाधयगर्धकृदिपांक्रुदीगा रुपायः
 याद। दीयमर्घ्यं निवर्ष्य च पूनदयायथाकर्म॥ यथापूर्वाकं न विधानेन विस्तर्ज्यन्मधुलैवनी॥ लोकि कसामसैयुर्ललाकारुनहामयय

१०/३

[illegible]

मरिमा दयानां गुणरुद्रिः ॥ कलाय प्रवलायी वक्रा मिष्टा दना ॥ ननु नाह्यमाना वा वालानी वा धिमार्गना ॥ वरुन नैव सदीर्ग ॥
 कानमसुसैयुर्ग ॥ वरुन स्वधनी नाडी मूर्धसुखाललाटगो ॥ स्वक नैव धी न यद्वर्जं कदा कालय युवृद्धिमान ॥ जनाम नयन नय वा धि विः
 रुषकी उर्गो ॥ लंघनं रुवदा यच्छिरुर्वरुमयै रुवर्ग ॥ रुगवन रुगलिङ्ग रुसादि नयै दिनदिन ॥ कस्मिन् कथे युया ह्यि पतिता सर्ववसु
 कामा नागन वात्मा च सैरुव किमदात्मन ॥ याग रुकुम्भ रुह्ये दक्ष दक्षक जायत ॥ यागिनी रुकुंभ रुह्ये सुसार्थ कृति नय यश ॥ य
 मवला वव अमि धर्म च पुसना दयै ॥ चरु कायस्य यागन सैरुव दाम्य ही उक्ता क्रिया गजा ह्यनं न त्रवज स वृषक ॥ नायकी जाकिनी का
 रुहा यथ जागव जिना ॥ वा धि विरुं सदाश्रुं कि कायी व क नयुवा ॥ गनु उ मूर्धे व गृहीयात् सैरुज य मिले रुही ॥ इति व दामख ने व दान यश का
 नय रुक ॥ वल क कय सर्वासां ली जासी मलदी ॥ हाम च सर्व न ने व यै व रथा दिका नय न ॥ नया वै दि न मा रु द ना हरी नय व रुक ॥ गुलिका

१०१

वापि सुगुह्य स्वयं वी न द रा विरुं ॥ रापिता रुगम ध्युजो यधी न त्रवर्जि कं ॥ मधुर्लक्ष्मी स च नाना याग प कामि र्ग ॥ उं न मश्मश्म न वा सि
 महा कालानु नाग य ॥ रुयथा ॥ उं वल प वल लल लाल य द व लिं ग य स्वा हा ॥ स वा य र्ग कृत्वा र्ध वा जो लिं ग गृहीत्वा ता व रु य न ॥ या व द ग द
 सि पि रु कृष्टि ॥ उं वाम ॥ रुधु म क णि वि युक्ति क रु न २ य च २ द व द रु मान य स्वा हा ॥ वाम व न द रु ल श्रु न क न स म नू लि खि ता रु म्पा रु क न
 का ॥ रु ग द्दी ३ का न च रु र्ग यै लि ख रु म रु प दै लि खि ता आ क म्प रु य द्दी क न दै म रु मी ॥ उं व रु का धि व ला व ल रु न द रु प च वि र्धं ग या म्पा कं
 मान य रु रु ॥ वाल्मी क म या य व र्ग य सह रु वि रु मि मा रुं वा रु र्धि कृत्वा क न वी न द्वा द क न स व य रु ॥ गुणु नू धू य म वि र्धि नै रि रु क व लिं
 द या रु स फा रु ना द क धा ना या रु य कि ॥ यदि न व र्ध कि स फ म दि व स ख रु ख रुं कृत्वा न यौ प वा रु य रु ॥ व र्ध कि व र्ध य न वि र्धि ॥ उं ग ग द
 अ नि गे म स्वा हा ॥ अ न न प रु लि रु मू ख ला र्ध स फ ज र्ध कृत्वा क म्प वि र्धि रु दान रु य य रु ॥ मूर्ध व र्धे कृ ना रु व कि ॥ उं मू का नि रु कि मू का

१०८

[illegible]

१०२

[illegible]

कासलामध्वविवादननाजडावललाटक॥धनयत्संजयारुवकिकर्णकनवलपयत्त॥स्त्रीवसारुवकि॥कन्याधनयत्तु॥गुरुवकि॥इत्युप
सवानानीर्धनारिथामीषूलययत्त॥भीषुपसूयनिसर्वकृष्टना॥गयू॥गामू॥सहपिवरुस्वयारुवकि॥अशुकार्नेजाकहानिधीर्धनारि
थानीषूलययत्त॥भीषुपसूयनिसर्वकृष्टना॥गयू॥गामू॥सहपिवरु॥गर्भनिरुक्तिपूजेवकीरुवकि॥नकभूलभूतदलादकनसहपि
वरुभूलपुष्ट॥म्यकि॥वक्रना॥गयूमसुकलययत्तुवक्रुगर्गनाभयनिविषदंशकाल॥अभानालययनिर्विधारुवकि॥नित्यंअनयनिमि
रुयायुमेकवनम्यनिविद्धवर्जनादिरि॥सर्वग्रहस्थपविष्यजकि॥यनमनक्रासर्वजनपियसोराग्नेरुवकि॥सर्वदा॥राषिकारुगमध्व
षडोषधीनलवजिकौमधुर्लक्ष्मिनामवनानागर्गनिवानधी॥ॐ॥गुरुगवाकर्ममूडावध्वसदास्तिरु॥सर्ववीनजमाताडोषधीना
नुनायकी॥ ० ॥ॐ॥निधीवक्रुवानाहिकत्यमहाकुरुवाऊपप्रवलाकर्मपुसनायधीपकनधीनिर्दशवदुर्विधकिपठल॥ ० ॥अथसं

मानपालकाटिस्तुक्तथरुचनसायधी॥रुयगीवपया॥गनसाधयडसलकृधी॥रुकार्नेथानिमध्वयुयकार्नेमसुकस्तिर्न॥पीकार्नेपममध्व
रुवकार्नेरुदययत्त॥अर्थमानमहायार्गसुनस्वकीनसायधी॥रुननिसर्वनागर्वरुगर्गथानुवरुर्न॥नसायधीरुसदात्ताकस्तिर्वाकी॥थन
वावसा॥रुयाकार्नेगीवार्योनसायनायाग॥अथकी॥गर्हंरुनयो॥गननविम्यासमयूर्धिका॥नसायधीवक्रुसर्वैरुमैरुवक्रुधुकी॥गगन
सुवत्रिकरुनूर्गद्विकिवाधिमानसा॥वाधिका॥अथनसावक्रुयाधिनीयागनायकी॥सर्वसंस्थपुनसजासमा॥नैषूपदरीका॥रुस्वरावसदा
लाकरुननागमाहाधकी॥रावितानसनाथरुयागिनीवक्रुमार्जगा॥उदयनिसाधकाना॥आर्कयनयागिन्यालुपजायनविनाभयकिना
गाथविप्रायाताशयकिवा॥अपहृनधापिसर्वयुस्वानदाविरुलकृ॥॥यक्रुनसानांलाकयूसर्वसाधयरुक्रु॥नसायनेरुकीठकिनेना
स्याकृषसासना॥नसाककार्यकृवीरुहामथागादिमववायथासुखयुवाधवावक्रुधनत्वमात्रुयात्त॥ना॥गदनागमानाकवक्रिदध्वयुदाह

۹۹۹

धर्मलक्ष्मी ॥ व्याधिनिर्मुक्तगतास्ति स्याद्देवर्जं शाक्तिकावली ॥ वसुसमाहवनिर्ह्यपत्यपसवरुसदा ॥ चतुर्वचनरिपावर्तव्यचतुर्वचनरिपायिनी ॥ स
 र्यासूर्यदयारव्यसूर्यावरुनिष्कनी ॥ अरुद्रमुसमायाईनर्धंदयाच्चनित्यं ॥ ४ ॥ यत्मासकृत्थागनआयूर्ध्वधर्मिसर्वदा ॥ यामनस्यप
 दाननयनिष्ठुधनकर्मणाजीवनिनूजंसर्वचशुक्लयकृत्तशीयथा ॥ निनैजवपीरुहनिर्गमलामलविवर्जितं ॥ शुद्धअनुरवग्रवचतुर्ध
 षविवर्जितं ॥ पत्नीनिर्मलं स्वर्गं किंविनरुटिकमनिरुं ॥ शुद्धस्फटिकरुचदर्वपिपुर्वैधनमूर्तमी ॥ मत्स्यमीर्गुथापानैर्मीर्गवविव
 र्जितं ॥ धीनाविनीरुग्गुर्गस्यदहंपनिपोलयै ॥ सार्धक्रियैसमायुक्तागुहीरुम्यप्रवक्ष्याम ॥ दवगानाधनैकार्यं अलिवलिसमन्वितं ॥ स्वाधि
 दवकथानित्यं अविच्छिन्नं मरुजापिरुं ॥ दानयुष्मकृत्कार्यं सिर्यं संगावकावयतु ॥ निर्वाद्यसुनसंपादिकिष्टचनिविष्टिर्गुर्ग ॥ सूर्यमा
 सनसंपादं मोर्नैकत्वास्वृद्धिमान् ॥ स्वदहंसाधयत्संम्यक् सम्यक् सफेदलानिच ॥ रुद्रपञ्चासंवयत्कर्मदशवर्षानितावत ॥ वर्षद्वयै

993

पिथी॥ हनीय वालगं दीवंचतुर्थलकनूपिथी॥ पक्वमपक्वमृकासावद्यद्यद्युसैरवीसकमसागनं नृपंशुसमपमनूपिथी॥ नवमनसाय
 दचदशमसहजुनूपिनी॥ कादशमिवनृपंशुदशमचक्रनूपिथी॥ जयादशमार्कलुचचतुर्दशमचक्रमसुथा॥ नाद्रपक्वदशमचक्रवधाउश
 विद्रुनामरुशस्वसैवयविजानीयातुषाउशकावलकृती॥ श्रीहनुकीपयागनचक्रथक्रयसाधयनानजनानचमृत्पुत्राधिकाद्यादिव
 र्जिनी॥ श्रीकानचक्रवन्नाशोहकानैहदयनसक्तानूकानैकचक्रयकीकानैशुकपालकाचतुर्विद्रुप्रकानशस्वसैवयनुकानयन॥ धाउ
 काकानरुचवयागिनांपनमाकृती॥ सृतासृनचवक्रवपविष्टमधमकनी॥ चतुश्चक्रदलीगयानसायनीरुपनैसकीकलीसर्वयोगिनी
 विजानीयाशसैरवी॥ याग्रमानार्महाचिर्लप्रायकमाघदर्शनी॥ स्वप्रचक्रायननिर्यसर्वकालखवस्मिन्॥ सप्तकनकदाहस्त्रिनिर्वादागलक
 रीकूर्यात्पुहकनेनात्मीरुही॥ र्थयूचसैरवी॥ नवचक्रस्मितायागीमार्जामायानिनिश्चिरी॥ प्रह्लादचक्रसमागम्यसूर्यानापयनचक्र॥ नसायद

मीरुवायागीकृष्णपुष्पयादृशी॥ पाउरानां पुत्रकलानां सूर्य (केवकनारनी॥ कनूवा॥ गुचनीयागाङ्ककालाकलैरुथा॥ मधुलवकम (ध्वम
 विक्रियिता श्रीरुकी॥ सर्वलक्ष्मणसंयुक्तं नसायनेकुजायगा अथरुगुययकृद्वनसायनायलिकानधी॥ मधुलक्ष्मणवज्राखीअमृर्गनी
 नसागन॥ खधुमधुमक्ष्मणनेकी॥ वावादसागनेकुली॥ रतायनासनादवीकन्यकाकामनुपिनी॥ उदिताईसमावर्धलाक्रानसम
 पका॥ नानावन्नविदिगीगीयमवर्धसमपका॥ अष्टादशरुजादिव्यामैकाना रुवसन्निता॥ नानावसधनीदवीकेलाकैवसधनिशी॥
 खमवानांकुषामयकपालकुलिहध्वज॥ कथावादेकथाघर्षेनवमरुवपद॥ रुटकाधनूपाहीवखदीगीसकमधुली॥ मूलमूलवी
 धावगधयकिवाहृनकन॥ उर्वयोवनसंपत्तागिनकासुवसदवी॥ मधुलामटिकितासर्वनदीरुतानिमध्वगा॥ श्रीनसागननामैववह
 रुचुमधुपमा॥ सामयानकुसाकन्यादहवजवेवावनी॥ वेशवनीदहमध्वरुहनीकीवहृर्गवहृ॥ सर्ववीनसमायागजाकिनीजालसंम

११४॥

खी॥ वकीरुतानिसर्वाणिअमृर्गनीदनुपिनी॥ हर्लकलीचराकाचरस्यगर्गमर्गकथा॥ कंदधर्मादयाख्याने (गालकैमृगगीयगा॥ यासना
 वहुयागिनीयामरुदसचरुकी॥ यमनृध्वनेमाध्वनेवर्धयागनत्रहैसैव॥ यशस्वादसकमाघेवयावगपवन॥ स्वयी॥ निर्मदस्यकुरु
 क्षानेसकृदाविह्वानकैरुवह॥ क्षानविह्वानसम्यन्नमदनव्यामाहकैरुगत॥ पी० कुरुचसंमार्हमलापकभभनमववापूजापूजकसैव
 ध्वअमृर्गअर्घमुरुमी॥ यशयेकाकनपाकैमैगलैवसखासर्व॥ पित्रिदवसेनृथयविवाहयहृकर्मशी॥ विषाधीयहृकर्मयहृरुजिनीव
 विग्रह॥ वेधनीमैगला (र्थयसुधानीसिद्धिसाधन॥ प्रवेष्टायकालयदीर्घयाख्यान (गचन॥ प्रकिष्टाहामकालयपीरुमन (गचन॥
 नमिलियागिनीपूजमरुसाधनरुक्षमा॥ उर्ववहृविधहृयाहृसादावेनवियरु॥ स्वाधिकानस्यवहृमिष्टगुरुगुफकाधिपागुनूवीनथया
 गिन्यापूजयदनूपाधयत॥ उंआ॥ हं॥ हुं॥ किमरुधधिविदिकानयत्सदा॥ हं॥ हं॥ कीं॥ हुं॥ किमरुधधिविदिकानयत्सदा॥ हं॥ हं॥ कीं॥ हुं॥ किमरुधधिविदिकानयत्सदा॥ हं॥ हं॥ कीं॥ हुं॥ किमरुधधिविदिकानयत्सदा॥

कार्नेगन्धनायक। डीका नावीजहकावअमृताका नवरावयक॥ विदवादि व्यक्तिकृतपिवरयदिदिहिरुं विषकस्यनसंदहामरुसिद्धिने
 जायक॥ मदनविकेलाकश्चिद्विद्याजुजायक॥ मदनविकुरुमेकी कामार्कमेथूननकि॥ नृत्तरुसकवेवकलहाकुयकिधुर्वे। निन्दिकाय
 सकावापिपयकनननव॥ कुधवयागिनीसर्वयायामाननकवजक। व्याधि। साकैरयं नृविदवकिरयानका॥ गुनूनिद्रागुनूडाहीस
 चडाहैनकानयक॥ अमृतसुवर्षरुसिद्धिसाधननिष्कलै। उरुवर्जयेरुमेकीपूर्ववृद्धनतापिनी॥ पाभयद्विधिसंयुक्तवर्ननेवयसंयनी।
 यागीयागिनिमलोयनवचयद्विधिनादिनी॥ सर्वसाधनवर्षरुगागागुरुनकल्पयक। ननमसादकपाफसिद्धिनाहूनकल्पयक॥ पद्मावृद्धि
 चलीकन्येसोतागधरुलसंपदा। सवाद्यगुप्तमेधर्थलरुनरुनैषदी॥ इवजामूलजावेव। गीपिष्टचमधुजा॥ वृक्षाजवकुलावेवय। गाय
 त्रामहीरुल॥ साधीपंचविधैषाकैययकायविधास्तुता॥ गीसीसफविधानउज्जम। याविधानरु॥ नानादगविधाभकमयसंरूपवर्क॥

११३॥

कीकृत्तिकाकाकैचमधुसिधैचजायक। अनरुवाशुकीवर्षेआदीनैरुगुलावयक॥ पृथ्वीगुलुनृधूपचवलिंदयावआरुनरु॥ कर्णचविधिसंयुक्त
 जायकचवलवानुधी॥ सयासयंयदाचिरुदिनदिनरुकावयक॥ एवयागवेलिंदीयसयासवमदामय॥ अ। कर्षकैमकरुवसकामले
 कानिच॥ पुरुमकरुनीवस्यशिवरिमलकानिच। गुठयेकवलैयासमकमकरुकानयक॥ सयासवमिदंशकैपार्थिवैननविलस्मिरि॥
 आरुलकागव॥ सवधरुकिपृथ्वीचतपृथ्वीचधन्यकै। मलयै। मलिवाकाक। गेलयकिधुवेकली। मनीचपुर्कसयैमझि। सनागकगै
 दाडिमैचरुथावालैलवईमाधिकाविनी॥ गुठमवलैवेवसर्फेवादकदापयक। अ। वीहीरुगन्धवजायकस्वकुशीरुली॥ मर्कनासरुसंयागी
 लाशैकजवृद्धिमान्। च। गलानलदंचकैरुमालैचनृदधिकै। सफमादित्यरुजाति॥ तत्त्वसयासदारुमै॥ गिगुप्तसारुवागार्ये। मलनसम
 चिनी। अष्टा। नैपदाकवैवकुसुमविवरु॥ याचयसधूसयकुरुगावर्धपदापयक॥ चिरुलाकैकूमैनालि॥ कर्पूचपुष्पागुनू॥ वारी

जानसर्वाधिवध्यार्थनथाजयत॥ धन्यमध्वगर्भस्यवदुर्दिनविहारायकशयावयिसाहुमध्ववीत्यादावंचमृगंरुवत॥ सोहीऊनंवद्यु
 गंवरुमसिद्धिक्कुर्तुर्गुणी॥ द्विविधंमुहिननारि॥ अकिरुलसमचिर्गं॥ मृगमर्दंमर्मवैवमदिनादिसर्मरुवत॥ यनार्द्धध्वकीयूथीया
 मअधममचिर्गं॥ सिद्धियायाव(हाय)दुस्वरावाचनरु॥ यनार्द्धगन्धयूथस्यहाकमिधुगुकावयत॥ अनेनैवदुया(गन)मासमासन
 दुयाजयत॥ नानाआदावरुषीवरुत्वादहा नृगा रुवत॥ नरुदाहावरुदकरुगुगुल्लययत॥ मद्यपानंविनायुर्कहासंवेवचुर्गंवि
 ना॥ सजुनैवविनाधर्मविनाधर्ममकिर्दं॥ मानासंरुवामयेनकश्चिसमया रुवत॥ आत्मयूग्धेवसंकश्चिद्रुगुगुनलरुगु॥ अथवा
 नृधियानंवेदवकामरुकाययत॥ यमनृगुध्वन(सेव)पया(गना)सर्मरुवी॥ वानृणीवेसमाख्यामंनरुयस्यादावायुना॥ दुहीध्वनीवाधिवरु
 नरुयाचरुकनरुका॥ रुक्यगुस्वसंवयेपिवकिंकनृधाम्स्वात॥ कीतिरुद्वयेयागिन्यासिद्धिमायानृगमिनी॥ नृस्वरावाहुदवीधेम

११६॥

ययानरुकावयत॥ सविरापमनृगुणीयथाविधिबलरुका॥ हंकावायनयूनगद्वयसंकावअरुवत॥ अकावाकनयागीचकीकावा
 वेदवकी॥ रुकानादिवलायलुवकावासनरुदुर्क॥ दीकावैरुवनिर्वादीपथागंरुस्यकावयत॥ हाकावैराययासर्वविहूयायागमरुमी
 गकिचयसमाशिरुयमनरुध्वनश्चय॥ हनृकीसंवनी(सेव)वरुवा नाहिनायकी॥ यमनृगुध्वनैरुपिविहूयासर्वयागिनी॥ यमनृगुनसमा
 ख्यामंनरुध्वनैविहूनकं॥ द्रयाद्वयंरुसंरुर्गंवेदवरुवरुदु॥ जाकासर्वरुदानृठाकिरुवनवरुनरुनं॥ नृयमानमहाविस्वनिमिरुलकय
 रुक॥ आका॥ हाकनृयधजायकयनमाहूकं॥ यागिनीचक्रमध्वगुमरुनृपिनीकीतिर्गं॥ वेधकर्मसदाध्वयानन्दकनृरुहिवायस्य
 यम्यगुकर्माहिरुस्यरुध्वनैवरावरु॥ सर्वयागिनीवर्षयाकिसाधनवाधिमूलक॥ मानरुगंरुकाकुत्वा नृयमानाहुयमध्वक॥ सर्वयायपध
 म्यगुगनायूथनिवरुर्गं॥ कामनासर्वसिद्धिकियागिनीरुवगुद्वय॥ सिद्धिलघास्वचिरुनविकल्पनेवकावयत॥ अन्यथा रुवया(गन)वि

लं सर्वप्रवर्तकः॥ तीर्थिकानीरुमनस्यैवमभनवावकार्यः॥ क्वासनापनिह्यसन्नूपयस्थरुदृष्टी॥ ॐ ह्यारुगवादेवी नृत्तमानस्तथा गत
 ॥ सर्वमयसमायागभरुदृष्टयसदास्तिता॥ ॥ ॐ किं वीवज्जवा नाहिकल्पमहाभक्तुवाज्जवा नृत्ती निर्द्वेषयसन्नृत्तश्चनप्रकनदीनामयः
 द्विंशतिपटलः॥ ॥ अथ हिंसा विधिं वक्ष्ये कुरुया सर्वमस्त्रिया॥ वानाकादिप्रयागनसाधयकुवज्जुयी॥ वाधिविर्हस्तिर्नयकुवज्जुयनि
 वीर्कः॥ चिरुवकृष्टिजानीयायागिन्यापनमाकनी॥ कालिकानां प्रयागनवायूर्वाहननी प्रमिशयकुवायन्नवलाश्चतस्मिन्काललेयंगताः साहिस्त्रवः
 कृष्णाभीहिजायन्तु नवकृष्णा॥ जगत्या कर्जन्तु यैश्च किं दृष्टमानसा॥ गत्यागनिविधानादुदियगन्धानूलपयन्॥ किं कामानन्दनृत्तकार्यादि
 यनसप्रयागकः॥ जिहाविह्वलनसमाश्रित्य हृत्पुनिकमध्वमा॥ स्पर्शकायनकायस्य समाधीपनमाकनी॥ पूर्वनिवासानुस्मृत्य जायन्तु चयाग
 वान्॥ अहर्निशैर्मम कृतवाननी यद्यत्तमववाषष्टीयवकुहामासिद्यटिका तु निथाजयन्॥ द्वादशभुजलमायामाश्रुगुलधैवमाकृतिं॥ यथा जुला॥

१११

प्रमाननशलाकाद्वादशी गुला॥ कदा नवमूर्द्ध्वकाष्टचतसनामवा॥ आह्वानुवविह्वया नहिस्त्रासवा नरु॥ यथा नवमिताया स्त्री लकृष्टी
 हामकर्मध्व॥ लावयथागिन्यादिं कालाका ननिवा नरु॥ मधुला कविर्कृत्वा यामिनी लकृष्टा पन॥ विश्वरूपमिदं विह्वयतु गद्युकिप्रा
 सितां॥ स्वहावाप्रकिनेनात्मीयन्तीनां लग्नयास्तिर्न॥ हामकवातिरुद्वलुयनमाया विनसादिकं॥ सर्वजानी सुविह्वया धर्मादया कथस्तिर्न॥
 हामयकृत्समाश्रित्य चक्रे कस्या कनस्तिवा पंचवक्त्रविजानीया आधाया पंचवायवः॥ रुहाकिनाश्च वीजं वज्जवा नाहिया गवान्॥ पंचवीजानि
 हामाशि अहिस्त्रनाम पंचमी॥ अथ न्यस्य प्रवक्ष्यामि हामकर्म विधेयं न॥ बाजहता जयत्तुं दृष्टा सह आसि साधकः॥ पूर्वाके विधाने न
 हामकर्म समाचरन्॥ महामासं शुक्ली वधा लाया साधनाम विदर्शिकः॥ रुद्वया त्रिविकल्पनं पूर्णं सकटं कृतवन्॥ गोमनूजगुलाल
 मालमोहनदशायनमाकृतिं॥ मध्वक्रीनं समालायल कर्मकुरु हामयन्॥ लहर्न नगन (यद्यजयन्तु वमहाश्रयं॥ विषी मुकुरुनेलनमानुषी

स्तिरुहामयत॥ कश्चकना (गो) प्रकलनरुषकठान्वितं॥ तथा काठविष्टा मुक्तकगलुन (गो) दक्षिणातिमुखी कृष्णपवित्रधामकी मध्या क्रवो
 डकर्मिषा॥ होमयदकविरुनचभु नोमिमहानि (हा) साधनामसमायाग्य उच्चयाननादिकं॥ ससेयवलवाकस्यमन्यथामपिकाकथा॥
 उच्चाटनं तथा वक्ष्ये कृष्णं वनदपि कशका कपकवधनिम्बपुलेतुमकुविता॥ सूर्यकंचकर्मिषा कालचगुहानिचा धूर्तना (गो) प्रवात्य
 यूरुहायुगना रुने॥ विष्टिस्तु सर्वलाकय ४ यकैवधूसरुजने अथ कर्षदावे शुष्मा त्वा मिधुन समप्रर्त॥ वायवी सार्ध दिग्वा ससाध्या माल
 म्यचास्वनी ललिता रूपयी ० श्रयादा कृष्ण प्रयाग कश॥ ऊं काले वर्जय मर्तु विधा साध्या हृदाम्बुज ॥ यापिता मलक विध्या हेलो कवसमानय
 त॥ एकखसुकवाले वानिबुधं चान्द्रा रुनी॥ लखसाध्या धनी नवाकनवीनं होमयतुथा॥ साध्या नाम समुच्चार्य नूधियधाला यधूर्तुन काष्ठमव
 त्वा॥ रुर्जगा नावनस्वनकनलखय साध्या नूपकं॥ वसुना ययसा धापमर्तुजस्को रुहानिचा॥ एकैकपृथ्वी गृह्णमर्तु सायपिविगुहं॥ सफः

११८

दिने होमयत्नमिर्तुथा॥ अथान्य कर्तव्यमिन्नकाचगुनका सुकं॥ प्रति साकृर्निकृत्वा चसनका नाचननचा नासा रिसाध्या लखचहृदयस्य
 पयतुथा॥ अर्धनाशुयमिप्तिर्न कदा कर्षयति रुकश॥ शिकरुकनविलिनीमिता प्रसूचीरु विध्या रु॥ साध्या हृदयना हो गृह्ण विध्या स्तुनय
 रुथा॥ सुवर्तु (गे) नि काया रुगमालिख्य रुस्य उयनिवा मरुस्तना रुधर्तुजय रु॥ यस्या नाम समुच्चार्य जपमर्तु रुक्मिणी रु॥ दवागद्युति उजा
 कय रु सगृह्ण साधकश॥ मालिख्य नयननजलका कय रुधर्तु लिखित्वा उर्ध्ववा नायेन क्रिय रु॥ उच्चाटनल रुधं वापि वानन स्ति मयं किल रु
 र्थया रुल सफा हिम रुक्मिणी कृत्वा यस्या नाय रुन निखन रुस्य गा रुधर्तु रुवति॥ गारुसी रुधरु वा रुधुमहिषा नी रुन निखन रुदि ना रु
 रुवति॥ अपकि रुपु रुवर्तु गृह्ण नन रुलन रुकुलं पाठय रु॥ नागमल्लिका समन कालय रुहृदयम रुमालिका जप रु रुच रुर्ध्व वि रु
 य रु॥ अर्जुयदं रुन रुस्य सर्वज कि नियं रुध कि॥ उं रु रुलिं ग स्वाहा॥ वे स र्था नार्जुन म रु॥ क रुप स्य य रुव मादा य रुहि न रुदि गृहीत्वा

गृहधूपेपदापयत्॥जनपुत्रमयाकिमुदहं॥पिनिश्चिन्त॥उंउदकनसमाजाउदकनसंरुवा॥रुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि
 वल॥महाका॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥
 पञ्चरुयदि॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥
 लीपुर्हसर्वथो॥गुवा॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥
 गवर्ह॥अथवक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥
 लाकावक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥
 देवताविन्या॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥

११९

उयामन्त्रासर्वसंयत्किं॥विनारुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥
 नामिरुसुखमहासुखी॥यागिनीवक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥
 रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥
 वा॥उका॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥
 मय्यंरुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥
 यवय्यंरुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥
 मा॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥थलासुकांरुवा॥गुणयक॥रुवा॥वक्षिस्मि॥सुखादयस्वाहासंरुवा॥

कर्मसादव्यापनिष्ठास्य ॥ अर्नवेवप्रकर्तुं कृयया सर्वरुक्क ॥ विभुर्द्वि सर्वरुक्क न स्य मधुल स्यादिदवत् ॥ द्वि शुजादिसूत्रा ॥ श्वेवरुक्क जायं वि
 शुद्ध ॥ अस्या नो शुद्धि रावर्त्त सज्जसं संधिषा उदा ॥ सफदहा मनाख्याना ॥ हव निवर्त्त धिया इका ॥ सर्वावनन रुवय विभुर्द्वि शुद्ध ॥ रव
 ॥ मूलमरुदि शुद्धि च सर्वया नाथ सचक ॥ वरुयमादिज नानूजा अशुक स्य सचक ॥ मधुल शुद्धि सर्व अर्धर्म संप्रह सचक ॥ द्वा दहा ॥
 विभु आत्मा दग ॥ अक प्रवर्त्ति नो ॥ मम ॥ न शुद्धि विरूया धा उदा ॥ ना कला क नो सर्व शुद्धि विजातीयारु रुज नमया रुव ॥ सर्वरुक्क नर्क सर्व
 मा शुद्धि न रिधन क ॥ वसु संगति स्लान च ॥ एथ कृथ क रू नवा दिना ॥ ना मसंगी कि शुद्धि सुया ग या गि निरुक्क ॥ मा या पमं ज ग सर्व मधु
 लचक ॥ यया मया ॥ उकी स्वर् विदं रू नय रुय ग रि धन क ॥ रूयं गु नू मूखा त्सर्व मा या सिद्धा कल रुध ॥ उय दहा गम्य मानं प्रकि संधि महा
 सरवी ॥ कस्मि काल गु या शु या शुद्धि वृद्धा रु म ॥ गव वेश ॥ अर्न वे या गी ती मर्तु च उ रुव कि सुख द्यु या ॥ वसु नू य ॥ स शुद्धि स्या द्य रा व स कल्प

१२०

ना ॥ वा ना काम रु म वा क ॥ सा शुद्धि ॥ सर्व राव क ॥ शुद्धि य विषया ली कं स म न स र्व या गि नी ॥ धर्म का य कं शुद्धि स्या त्सी रा ग का यि कं व च
 चिरु नि र्मा ण का य स्य का य स रु ज का यि क ॥ वे म त्या दि पु न रु च रु रू शुद्धि लि य रा ॥ क व र्व म रु र्म शुद्धि शुद्धि या स र्व या गि नी ॥ व लि म रु
 य शुद्धि स्या रू रू रू रू क माल न ॥ शु रु म रु य या शुद्धि सर्व कर्म क की ल क ॥ ना ना था ॥ ग य या शुद्धि या शुद्धि य व मा र्थ का ना ॥ च र्म मा न्ना लि स द्धि
 स्या धि गु स र्व च द व रा ॥ किं व रु ना रु मू क न वि शुद्धि सर्व सो र्वा द ॥ यं य मि द्रि य मा र्ज य या यी रु ग स्व रा व रु ॥ प न मा हि त या ॥ ग न स र्व वृ
 म यं रु व रु ॥ शुद्धि गु य न मा रू या रु श्व ना दि प्र दर्शन ॥ क ल्प वा ना हि रु रु रि ना न्य था सि द्धा रु रु स ॥ वा धि मा र्ज स्ति ता थ च ग्रा षा ग्रा ह क
 रा व का ॥ रु या रि या रि दा ष य रु श्व ना दि गु दर्शन ॥ रु स्मा या गि स र्व य म यं या गी या ग क थ रु य न ॥ रु ह्य रु रु ग वा न्वा मी व रु वा ना हि
 क ल्प का ॥ स र्व या गि नी स मा या ग व रु स त्व ॥ स र्वा ल यी ॥ ॥ रु नि धी व रु वा ना हि क ल्प म हा रु रु वा रु हा म वि शुद्धि प नि ष्ठा ल रु द ॥

१२१

[illegible]

दक्षुकायपाधीमध्वचलीनकी॥ जिह्वासंदर्भयथाशुक्लं संदर्भयत्वा॥ वधुलीसर्वनाडीधूमिलित्वाशुव्यवस्थिता॥ अष्टदंष्ट्रयथाशुवि
 वर्कं रस्यदंष्ट्रयत्॥ अवाच्यसर्वधर्मस्त्वैविस्मृतिर्न सर्वमिच्छियं॥ अङ्गुल्याग्रं दंष्ट्रयथाशुनखकस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ कुटिलं सर्ववर्गं च ३३
 क्लृप्तनूपकं॥ शिखंदंष्ट्रयथाशुयादीगुष्ठं प्रदंष्ट्रयत्॥ मधिसूत्रस्यवत्पादादृश्यं मध्वमाखिलं॥ कर्णदंष्ट्रयथाशुग्रीवाकस्यप्रदंष्ट्र
 यत्॥ यज्ञं सर्वं यथ्यकुमधुलामृतं यथा॥ सूर्यदंष्ट्रयथाशुआकाशं रस्यदंष्ट्रयत्॥ हृदयाहर्षं सर्वलाकं सूर्यरूपनमाक्रान्तं॥ मदि
 नीदंष्ट्रयथाशुपादकलेप्रदंष्ट्रयत्॥ पवस्यमिताकूलं यस्यापपुमिदाम्ना॥ गर्भदंष्ट्रयथाशुकपालं रस्यदंष्ट्रयत्॥ सर्वसन्धिषु यागी
 नीप्रलावाकाशयागिनी॥ लिङ्गदंष्ट्रयथाशुगुक्कं रस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ अक्रान्ताक्रान्त्यमायातज्जगत्समुद्रज्जाकमधुलीदंष्ट्रयथाशुपर्वत
 कस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ अवाच्यमृकधनाशुपर्वताखीनदीयथा॥ कर्णस्युक्तानि यागानीयुष्टवेष्टाप्रदंष्ट्रयत्॥ सहजसंयागिनीयाशुप्राप्य

१२२

कर्णस्युक्तानि यागानीयुष्टवेष्टाप्रदंष्ट्रयत्॥ वसुदंष्ट्रयथाशुनागं रस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ सर्वधर्मास्वरावयुनेनास्यं यथ्यरुक्तात्॥ दक्षनासुसंगुक्कं कयादककिटादंष्ट्रय
 त्॥ सर्वरुक्तेनविन्दकवासनाविनविज्ञवा॥ जिह्वालालयथाशुरुक्कं रस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ रुफिसर्वमूखानाकुप्राय रसाद्यदंष्ट्रनात्॥ कमर्दिद
 र्भयथाशुक्कं रस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ नाउर्नपादावायुनीकुक्ककार्यस्यकिर्कं॥ निरुन्वेदंष्ट्रयथाशुकर्कं रस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ अक्रान्तालयस्यसर्व
 कयुष्टकाकनूकयत्॥ मध्वरुक्केस्युष्टायाशुयुष्टरुक्केचदंष्ट्रयत्॥ नजानामिवनाशहं अहं यनस्वकायनात्॥ हास्यं च दंष्ट्रयथाशुकदनी
 कस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ नागधेनागधनैवयनावृत्तमवदना॥ नाद्यं दंष्ट्रयथाशुग्रीकं रस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ शिशुवर्नं सर्वमायापथ्यं रुक्कं रस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ कीका
 लदंष्ट्रयथाशुसूत्रकस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ मृत्पर्वचनमायाकिनाडीयथ्यकालनात्॥ उर्वयद्विष्टं मृदाशुयागिनीमृदास्यथ्यना॥ अतिरुगवगीवा
 नीविरुयाचवज्रवक्का॥ पवधुकूलयत्वाचरुक्कं रस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ पकर्षयर्थनूपसंरुक्कं रस्यप्रदंष्ट्रयत्॥ वनधर्मचविरुयाथावददय

यशवाश्ववाश॥ माहृषना गवांवेवागमानउत्थकं॥ रुद्रकावृद्धिका यशमायावी दूनदृष्टीचागमनायानमर्द्धपिंहिसर्वपिंहिवहर्षदी
 खदेवागैर्मैशमंत्रमन्त्रमन्त्रमापनी॥ रुद्रययागिनीदशानर्घाषड्विंशदृष्टिका॥ रुद्रैवप्रतिमूडाकुर्यागिनिहृदीयकसदा॥ दपेनऊल
 यूजपृष्टीवपदीपञ्जगुष्टक॥ आकाशपञ्जकमूददवानीवसूर्यक॥ महिमूक्तिप्रवालनफकांचनजालकी॥ कालाशुघाकुर्यासगु
 नुःस्यगऊमवश॥ रुद्रयजमकैपनवमेथूनवादसन्निधौ॥ वलिलखामसुलपृष्ठकियष्टिगुवधक॥ मावदश्याटनायोचरुद्रकामद
 छिमयन॥ यथाक्रमयदाकुर्यासंकटयष्टिगुकाश॥ रुद्रकाश्यापवक्षामिसैर्वचनयागिनी॥ वदुवात्रगर्ग्यादीवामवाहनकीप
 नी॥ स्वतावर्गयविह्वयाषड्विंशविरुवाहकी॥ चक्रपायादृष्टीमूडातादृष्टीयानमावयन॥ नादीपृष्ठानमासायशिवाशासर्वसंधिकी
 ॥ रुद्रकुर्यासहादृष्टिनरुद्रयायास्वरुद्रकाश॥ अर्चदामफकिरुद्रयायायनसर्वसंपदी॥ वानाहीयागिनीपश्चाद्विगुहकालकी॥ वाधि

१२४

पात्रिकधर्मकुर्यायनसर्वयागिनी॥ वीर्यमद्विपादाश्चैववावाकायागिनीसदा॥ यागिनीसर्वविकल्पपूरुक्षक्रीवदृष्टिया॥
 चलपृष्टीनिविरुस्यवधनाचेकविरुका॥ उवसायाविविलाकनासनामूडजकिनी॥ सैवृष्टिपवमार्थवज्रक्रिधामिका॥ चक्रनद्वयमवा
 हि सर्वयागपृष्ठस्यन॥ आनाकेरुद्रनरुद्रयागीपकादीसर्वनाठिकी॥ यागिनीचक्रमध्वपूरावययदिमोनर्यायागिनीमूपाययुकी
 सफेर्निधिरुयासकै॥ रुद्राशुमारिधननसर्ववाधिसूत्रपकै॥ मरुद्रनपूवात्पत्रासैवाययागयागिकी॥ वर्धनूपयथाकस्यवावा
 कायागिनीपूचउंसदंरुद्रसत्करुद्रसतीनपरायरेहवायदहंरुद्रस्वाटहाहस्वाहा॥ उंवधुमक्रीयरुद्रस्वाहा॥ पूर्वगिनीच
 पी॥ ०५५५सर्वयागिनी॥ पूर्वमासीललाटवचदोदयमहागिनी॥ अर्चमकैकयागिन्यास्वरुद्रनामविरुनी॥ अर्चकस्यचक्रुर्वि
 हापी॥ ०५५५०कंपूनधामानजोपमरुद्राशुक्रनारुववर्जिकाशकालाकालसन्पासाहंरुद्रकालनलखका॥ अक्रनारुवपिहृम्य

१२५१

[illegible]

याश्च यवर्जिताः॥ यकानाकावर्कवृषापादाकषमस्तकाः॥ नादमात्राधिरसर्वस्वयं शुधर्मसमिति की॥ चर्वचतुनाकनाधिकायधर्मो
धिका निचानीचमस्तकास्तकास्तनर्वास्तुमीमान्मच॥ अष्टिपादाविहर्नर्वालाकमश्चरुवचसर्वगुणचक्रवदीयकमाकुरुना
॥ नाभ्यापायास्तिर्मात्रसर्वगुणमधुन्यगाः॥ मृदाकत्वमहं वक्ष्यथ चरुत्वतावनी॥ तावनारुवपुत्रः अरुवर्गवपुर्पिर्ध॥ स्वर्ग
वयमयैकर्मतावनायनृगावना॥ मृदाकत्ववियागानेकध्वजप्रजायत॥ मृदाकत्वमिदं स्तनं वाक्कथमी॥ नगचवीजायतज्जु
ताकालं सर्वस्तुतनरुमयी॥ सर्वरुत्वस्य तावैव समलघुइरंगमः॥ रुडुवर्जितामृदाकत्वनिजः पतितावनाः॥ पुष्टिपुष्टाध्वनमृदा
रुत्वविचानगचवक्षनिर्विवादः॥ रुनिश्चिपुष्टिः अर्सेवादिस्तुत्वकः॥ अवाचालकः॥ सर्वातावस्यतावसंस्तुतः॥ गुन्याकानमृदा
कत्वदीयाय गुणवर्जिताः॥ रुदं मृदास्तुत्वादयं यषुजगद्यवस्तिर्न॥ नाद्यटिर्नमयाकश्चिद्वक्षस्तनसमूहस्तुतः॥ पतिस्तमास्तुत्व

दशिरुजिनेः॥ रुत्वमृदायकानागपकटययदुसंवृत्तिस्तगाग॥ घनान्धाः कीर्तुप्रवचमासंपूर्णमृदाकत्वस्ववत्तल॥ स्तुल्लनानाकी
नेष्टुपविरुस्तमानिवा॥ समस्तानवगतवितयः॥ गुलाकालयमृदया॥ स्वतावंसंजुमित्युक्तं सर्वकावेकसम्बन्ध॥ मधुलं सर्वसंवृ
त्तिः॥ मृदाकालविवक्षः॥ यागिन्यायागिनीसर्वाः॥ मृदायाः॥ नत्वमधुलं॥ सर्वाश्चकनेसापक्षस्तुलितं हनूकाकृतिं॥ निवाताः॥ मः
नाकाः॥ मः॥ यमननायकैः॥ सर्वतावस्यतावत्तास्तुतावसदास्तुतः॥ स्वपुंयगुतावानीस्वपुंयनेवतावना॥ निपुंयकृतमानन्दः॥ स्व
येगुन्दयस्यो॥ तथाविरुक्तयाविरुक्तकविश्चववाधकः॥ तावातावविवक्तताविरुक्तस्वयनाङ्गः॥ मानन्दानन्दमयः॥ पवाधमहि
माश्चमाकर्व्यापवः॥ नानाकावविशालिनीमंदगयादर्शकलेमधुलं॥ पायसर्वस्वालयः॥ मरुजानन्दवदुर्धरायया॥ नागपस्तुतः
वापायसंम्यक्ताववाधकः॥ यागिन्यकल्यानासर्वाः॥ मधुलं हवनगुयी॥ धर्मसंतागनिर्मानं महासुखमिति कुमः॥ महासुखस्वताव

नमः सर्वकृत्तुष्टयं निःसंगविचनयागीस सर्वरावयुसर्वदा। निलयः पंचमः ध्वपिसेसाननिवृत्तलयः॥ शुभगुणसमसमाकूलनवीवीर्य
 मुकुटगुणनमथरकावीर्यरवद्वुल्यमधिगतजिनधर्मसमासनयुप्रसन्नसंरुहवनिपातसमकृत्यासुसादी॥ ततो नृपादिति
 नैऋतधुकेसंविदीसयागीनामविष्टिन्नमानदापिमहावलिशयावकावाधिसंरात्रतावकाशेवनिर्मलाश॥ प्रह्लापायामकोयागी
 अनुरनरुलंयनशासाधनाप्राययागमाआलिकालियनारुवाश॥ धर्मकर्मसमायातमहामूडास्वरावकीचतुर्महातिधनवाचा
 पुनाकनकल्पना॥ पी० सर्वद्विविष्टयामूडामहिपादसुथा॥ आकाशचक्रमाख्यातविद्ययानिनिमीलकी॥ आधिपतिमहामूडानामास
 फकासव॥ अथाकनामयास्वासेवर्षादिमथानकीमध्वलकविलकुरुनमस्तुसर्वयागिनी॥ वर्यसनस्वरीयानिमध्वगंगगुवाहि
 सी॥ धनः दकयागनपासापादकधनयन॥ यानंविष्टनकंलालकृष्टंजयसच॥ विरुचनीयनयगुरुगुनिध्ववगमरुया

१२०

न॥ ह्यनगर्ककंमागुसर्वगवसवानयन॥ मधुलचक्रमध्वयुतावयदिमांपून॥ प्रह्लापायामरावतुमूडाकुरुनयुडरुवा॥ वरुसंस्तु
 नेपूर्वचरेनवकालनातिक॥ वीनवीनमरुदयायकदिवकायजा॥ भिनसिखाललाटंनवानदक्रिडाकर्कयाश॥ एषुवसेवाक
 र्वचनोभाकुरुनगमास्यकौकशुदयवाकुरुचकुरुस्तनंरुपाध्वकं॥ नातिमगुगुलिं(गउनूजानूजंघपादकी॥ अमुलिबंगुगुगधुपाद
 कनरुसर्वथा॥ मूडुपाधिरुस्तचर्मकर्मधिललानुपाध्वकं॥ सीमाउदनेकंल्लयंयागिन्यादीयकंसदा॥ अतिमूडायागिनश्चगुदीय
 कुरुयथाक्रमं॥ वंशवीर्यकंसागीनामूकदामनूजादिका॥ मालालाभनृत्तकलाधूपागन्धनेविद्यकाश॥ कलाकुरापापायाअंग
 दीपाकलषका॥ वस्तुदर्यदाकुरुचवितानंवासानकथा॥ पताकागनदामंघ्रजाश्वगन्धकूटकी॥ गकिहानाईहानंचकिंकिरीजाल
 कंयून॥ सिंहासनमकूटंननानाविधकथा॥ गभजवर्षापपी० सुगुणद्वियस्वरावकाश॥ वीनवीनध्वनीयागनसर्वमूडापकथा

नहुलिवकूकेश॥ चतुनहुलकिन्नस्यरस्यपसासिनायदि। श्रीवामध्वजिमध्वस्यकाकदमूलरागर्क॥ हस्तिस्वर्नपिनाहस्यकाका
 दवहिसर्वक॥ सुतमकचकंगस्यरनालीमूत्रकाकग॥ हस्तिकाकद्विगीयाकुया॥ धोस्यकिवाकने॥ चतुनहुलयूकस्यउनूज्यास
 मचिनी॥ चतुनहुलसंयूकायापादाकाकगथेवच॥ द्वादश॥ कालकाकस्यदवगानूपविजिनी॥ निर्मलाधादिरागस्यमूप॥ रुकि
 विजिनी॥ सापिकाकाकालस्यवाकूदोसंयमनगुवर्जुहिरिमजुल्यासोसदवकुशुमनी॥ सापिनालसुखकृत्वाउदवापीधयसदा॥
 वर्जुयहिरिन्नहुल्यासधिसधिरुसर्व॥ काधकाधधनीदवीचटिलुकिंकनीचटिगु॥ घानवीरुसपुपुनवगानविविजिनी॥ क
 मकुमधयाकव्यमधुलाचकदवगामध्ववजवानाहिजर्जलकृधविजिनी॥ जिहीदीर्घमहादवीविवर्जुयस्यदवकी॥ उच्चावस्यनयस्य
 स्यागिनानियमात्मन॥ जीमिहस्वमहादवीनासाकर्तुदिमंगली॥ दकनासासंगुक्रवृषयदानकीसखात्पञ्चात्यकाधयद्विजिनिः

५२८

यानाकुगथेवच॥ नियमसिद्धिहानिकुमिदं वचनमववीत॥ गिरिस्कूलमहायागर्जंघापादादिगधुया॥ मानविप्राधयादूनसाधकान्नि
 यमात्मना॥ जीमिविष्वमहादार्पकपालउनूपजं॥ रुवरुअर्थहानिकुशीघ्रंनान्यसंहाय॥ गिरिवक्रामहायागीसुतवर्द्धललाटर्क॥
 कलहाधुपीउकुअविननेवसाधक॥ जीमिहीनमहादाषडुनूकायउनद्वय॥ रुव॥ अपवोनानोमृधायतुनसंहाय॥ कवलंरिन्नना
 धस्यकर्तुंशुललाटर्क॥ नानाविधैवमनर्धयागीनानियमात्मन॥ उर्द्धदृष्टिस्वासेवचनमासवर्जितकेश॥ रुवरुअर्थहानिकुस्वासेन
 लरुगसदा॥ उनदीवादिजुंगस्यअसंखादाषकीर्तिर्न॥ चकुरिन्नादिमाणस्यविपर्याविक्तमूडया॥ १८॥ कर्मणापदुखस्यविष्वदापादिल
 कर्तुं॥ गिरि॥ संकटकायस्यआयाग्रमकुशमानसं॥ मृत्पूर्यागिरिप्रियाशुश्राअप्रियाप्रिययाचकेश॥ उर्वयागीमहादाषनिनीकामविचा
 नधी॥ विनीकसर्वधित्यप्रविजिनीसमाहिर्न॥ सर्वलकृधसंपूर्णसूयाविधिदर्शनं॥ सोम्यासोम्यकुनूपस्यविजिनीविधिर्नमर्क॥ सोम्या

930

[illegible]

कृत्वा मूलं पानमार्थं कथा गजां कृत्वा पृष्ठं च मूर्ध्नि कृत्वा ॥ लावकानां मूलं कृत्वा ॥ दृष्टं रगवान् नृणां ॥ शृङ्गं च कनकाहत्वा लकृष्टं कथं कर्म
 या ॥ सहजं सखं शुभं च स्वर्गं वश्यं महासुखं धर्मकायं संता गन्तुं निर्मोहाकायं महाशुभं ॥ पुनस्तु च वेचिरे ॥ अन्तिर्वाद्या गजां ॥ पान
 यिनां मूलं कृत्वा मूर्ध्नि च पानमार्थं कृत्वा ॥ न विज्ञानं वाधिं च धर्मधारायुषं नृणां ॥ यथा धर्मा दयानां च नेनात्मा वर्जकं पुनश्च विवर्तनादं गु
 रं विद्यं मूलं कल्पवर्जितं ॥ न सायं सो न कंच पया पाशुमं विज्ञिका ॥ आद्या कर्म यथा लब्धं सर्वं च पश्चिमायुषं कर्म ॥ यथा कर्म नृणां ॥
 चार्थं विज्ञानं न कविषी ॥ यागिनी प्रयागं न कर्तव्यं यागिना त्वयि ॥ त्वं वमानस्य बीजस्य नृणां मूलं सर्वदा ॥ यागिनी कृत्वा धर्मा
 स्वस्वरावेषु लब्धं ॥ स्वसक्तिरसमं यागी गार्क पश्य वस्ति ॥ नीतिनिवा रिसमनं न मनश्च सर्वं धर्मा ॥ यागी लंकात्मानं जानयात् ॥
 वस्त्रानां मिश्रितं ॥ श्रीश्वरी सर्वं रत्नानां नृणां सर्वं रावकं ॥ दवीकाटचपी ॥ यस्मिन् विदियवाधिपुनश्च ॥ दक्षिणाद्युक्तं नृणां यज्ञं

१३१

नमस्विनकां वीथिं सर्वं जं कृत्वा नृणां गच्छा गता ॥ काटनानां कुवायूनां ॥ विद्यानां सुखं ॥ विवज्जपुता वाख्यां विंशतिं यागिनी पना ॥
 स्मृतिं च सहजं कृत्वा नृणां मनश्च गीयम् ॥ नृणां विदियवाधिं च कृत्वा वज्ज नयात्मकं ॥ नृणां कृत्वा सुखं सर्वं विह्वलं स्वस्वरावकां ॥ यथा धर्म
 सलाकं च ग्राह्यं नाम न किंच न ॥ अथ वा सर्वं रावात्मा अथ वा सर्वं विवर्जितं ॥ न रावानं च रावकां विज्ज नृणां वद ॥ यथा ॥ स्मृती रावा अ
 लावं च विमर्कं सर्वं यागिनी ॥ पानं पथं गच्छा सुगुणं च धनं सुखं ॥ अग्निमंजुलं कदवीनं च स्वरापि लंका ॥ सफ्रं विंशतिं
 कम ॥ यथा वयस्यं नृणां ॥ उपाया विना सर्वं धाम सुखा कर्म नृणां ॥ इलं कश्चिन्मयी यत् ॥ सुखा ॥ नृणां कृत्वा सुखं च लब्धं
 सिद्धिस्तु कानर्था ॥ सर्वं कर्म स्वरावकुना नृणां अपि कदाचन ॥ सिद्धिस्तु पश्यं कामं अस्या विंशतिं विषयं ॥ इति का नृणां हि सीत्या सुम
 गमिनां नृणां ॥ यथा वच ॥ पुनश्च सपुत्रकाव अस्या मया वापना ॥ पूर्वं कालं गुणी उरुवा च हस्तचिह्नं च स्वात्मिका ॥ विष्णो अन्नादा

वक्ष्यामूलापूर्वाष्टका॥ इत्युवाच भूमीवीर्यवधनिश्चयतथा॥ इति हिंसापूर्वकद्वयं उवाच उवाच उवाच उवाच॥ अग्निगीतथा रघुवी
 चन्द्रसूर्याशुनाशका॥ वृद्धावहस्यतिरोमा रघु (येवधनिश्चय) स्वस्वकालचक्रकथाग्रहयादविर्भीकित॥ सर्वशुच्युवावात्मावर्तक
 पुनरुसमा॥ वक्ष्यामनपथा (गनरु कर्म) मरुनां विधिः॥ सर्वलक्षणलक्षणस्य मरुणां वटविजितं॥ आदिकर्मिकमरुणां प्रविष्टिस्वादि
 कानथरु॥ सिद्धिमापूर्यरुभीर्षु मूर्धा विस्तार्य साधयत्॥ ॥ ॐ किं श्रीवज्रवा नाहिकल्पमहा मरुनां प्रविष्टिस्वमृदाश्च मस्वराव
 विधिलक्षणैर्नामर्षिर्वा किरुमः पटलः॥ ॥ अथ रगवास्वामी वज्रजा कीमहापरा॥ दशययुयथा न्यायं यागिनीनां लक्षणैर्गुरुं॥ च
 दुर्यागिनीपथा (गननवनवेकस्य) कर्मधर्मसमयस्तु महा मृदावदुर्थकी॥ मृनाल (गोनयाना नीपप्रगन्ध) कर्मवर्णिप्रात्यनगन्ध
 लुवर्णवंपकयस्तु॥ जाकिनीपमिनी च वला मातवति हस्तिनी॥ सखिनी खड्गुला हाश्च विजिगी रवकिनूपिनी॥ चतुर्जा किस्ववृषा

१३२

धलकथस्तु विचक्रुः॥ पमिनीलक्षणैर्वक्ष्यामूखं च मधुला कृतिः॥ कथातीलपूया कृतिनामिका नाप्रमुखी कर्मपृष्ठा च॥ जाती चं
 पकगन्धैर्गुरुवर्णवृषा नदी॥ कर्णुचचदनगन्धयुगुली कदलद्वि॥ मृगनालिसमंगन्धनी लात्यनस्तुवर्णिकी॥ रुद्धीवनदलस्य
 मंगन्धैर्गुरुवर्णवृषा॥ मल्लिकात्यनगन्धवनाकावर्णिकसन्निहा॥ कर्तकी गन्धकं रूयं नकावंधूकसंनिहा॥ पाटली मल्लिकागन्धैर्ग
 गदीवर्णयुपूनशपादी समूहोक्तोक्तनोक्तलरुलाका नी॥ नामावली सुथशिवली रगरुताया॥ उवाच सूर्या॥ इति मातृमातृ
 गामिनी॥ पप्रगन्धैर्गुरुवर्णवृषा नदी॥ पप्रस्य (गं) कदा हस्तनसंगुल्यगसुदकपीठयत्॥ रगर्जुगुलिप्रक्रिया कामयत्यपि
 नीकथा॥ अथानकनं वक्ष्यामिनीलक्षणैर्कथा॥ मदगन्धैर्गुरुवर्णवृषा नदी॥ नामावली मदनाके दासूलकाया च पलाचपीठा क
 स्यकानथत्॥ उवाच उवाच (धनगुफा कास्यर्ग) हस्तिनी॥ शिवसिपूलकंदला गाढमालिजनस्तनः॥ मदनासुरवर्णानखदकदापयत्॥

नखनाकार्ययद्धृष्टावमस्य नाहस्तिनी ॥ गी क नावादिहिनगा ॥ उतालकृष्टसम्यन्नाहस्तिनी चविधीयक ॥ श्रीखिनीलकृष्टवर्द्धदीर्घकथादी
 र्घनाहिका ॥ नागिकृष्टानागिस्तूलास्तनो वा नाजीरूलाकृष्टि ॥ दधिदृग्धराजनप्रियनगिकृष्टावामहस्तनगृष्टाशुदकनपीठयक ॥ अति
 गठासूनरुष्टवृत्तिल्लाहदयनखपुहवेर्घपयक ॥ विगन्धनसाजिकाका नाकाकस्वना श्रीखिनी ॥ उगलकृष्टसंयुक्तं श्रीखिनीकथन
 सदा ॥ विविधीवरुथाव्यक्तस्वल्पकंया डनरस्याखे ॥ हनोथीरूलाकानस्तनो ॥ लफलजाअनिकाधनित्यकलहप्रिया ॥ काकजंघाडक
 नहायनीलंवाष्टीपा नावस्वना ॥ आमिषगन्धवाकृष्टिस्त्रीरुविचित्रीनगिकीजचवशुभ ॥ पथमंरुगहस्तनपीठयवृत्तनस्तनमर्दनंभि
 नशियूलकंदत्वासेजननगिगाटमालिंगनंशुस्वादयक ॥ गठाकाव्यशुभोउतालकृष्टसम्यन्नाविधिधीनूपिधीरुवक ॥ अथान्यरुमंसी
 वक्षसंकाकिरुदलकृष्टीवाकृष्टंकाकिस्तूलस्यंशुअशुभमकास्तगा ॥ गिनसिमहासूखचकचुर्दलपप्रकीशुभंचमदस्यरुसर्व

१३३

स्याधननूपयत् ॥ वाधिमधुस्वरावंबीजरुक्तवाक्काष्टिंशदलयप्रकमध्वहंकारंमूर्धमूर्धवति ॥ वाधिविहसिकावर्द्धकालापंच
 दशमिका ॥ महासूखंवरुनित्यथागिनीषाउशीकला ॥ ललनानमनाइया ॥ अलिकालिस्वनूपिनीकर्मकानधनूपयचत्तानान
 यनूपिणीसहजानदस्वरोवजुदययनमधुनी ॥ संवृक्तदसंकाशंविहंसूखनूपिणी ॥ वृष्टानांवाधिसत्त्वानीमाधनंवरुधनिदी ॥ क
 संरागवक्काउशदलनकंरुमध्वहंकारंरुमार्द्धमशुका नंशुमा ॥ गर्जामूर्धवतिनिनकनीहदयधर्मचक्रमसुदलीविश्वदलयप्र
 मध्वहंकाराधमूर्धस्तिरु ॥ रुस्यडर्द्धशुभप्रयुक्तप्राशुगदगा ॥ कारंरुस्यमध्वविह्वननिहादिकंयापकंरुथा ॥ स्वयंरुह्वनमाधनंवि
 ह्वनंपनमधुनं ॥ नाहोचकुश्टिदलयप्रनीलवर्द्धरुमध्वहंकारंदीयरुचमर्धियथा ॥ रुस्याधशुभप्रयुक्तदस्तनपुष्पययक ॥
 वासफनिसहस्रयुक्तदआधानमूयक ॥ ललनापुष्पस्वनूपयनमनापायनसंस्तिगा ॥ रुथामध्वगर्दवीजुकावविश्वनूपिणी ॥ चकु

कायात्मका दवी चतुर्मुखा पदायनी। महासुखप्रदा सिद्धिप्रदा सम्प्रदायनी॥ यनयनहि तावनमनसं पश्यन्तु नृणां॥ ननरुमयतां दवी वि
 श्वरूपा मधिर्यथा। तव ग्रामविद्यानदा॥ बहलितपुष्पाननपुनरु॥ चक्षुःश्रुती कलितपुष्पाविलसत्सर्वरुद्रवामना॥ दग्धस्कन्दविकल्प
 रंशवतिना तालम्बसं वदनं॥ यामयापसमवस्तुसमरुतं वादकं चामरु॥ एवं कर्ममूढाश्चाशुद्वयामूढाश्च कथ्यन्ते॥ सौगता गमयिष्य
 नताश्च मूढा जायागिनी पना॥ ध्यानजापनानिर्णयान्मधीशुपकथ्यन्ते॥ सविस्त्राननानिर्णयवद्वयकूलसमारुकां॥ निर्विकल्पात्म
 कानानीश्वरवीनपूजकृति॥ नाजाकूस्वरावस्य कथामननरुतवनी॥ पत्रिकर्मषूलाश्च रुद्रुडीका कलयागिनी॥ कथागतनूनागमासा
 यागिनीवनवल्गुला॥ विदुषां परूपाणां शुद्धर्मस्तु ननकृप्यति॥ वीनकूलषु समस्तैः सामिष्यं शुभं सदा॥ नरुधी सौगतामा र्जवधि
 खरुतायया॥ कोस्तुनेन कृप्यकञ्जनाध्वरुः पनापना॥ एवं धर्ममूढाश्च समयमूढा विधीयन्ते॥ वलिपूजास्तु नश्च समयी सा विधीयन्ते॥

१३४

पतिस्वामिभुलवकुसैराषं यनमार्थरु॥ समयीयागिनीख्याता मूर्तिवकपूरीरुनी॥ धर्मवकुषवर्तुनित्यै समयपालकं॥ एवं दद्यात्स्वरा
 वाशुषमिदवीनयात्मकी॥ यागिनीयूथमरुद्रुकी उक्तिपवमाशु रं॥ सानदासर्वकालशुभखलिता नकाविनी॥ यागिनीपूजवक्रावीमरु
 यावज्जनायकी॥ सर्वकालनस्वदस्यापहृनपाशुनामिनी॥ यायरुशुसदानानी समयसंकरपालकी॥ एवं समयमूढाश्च महाद्वयापकथ
 र्ते॥ सहजाकृशुजा दवीमरुजालाकनायकी॥ जागजापी० जावेवसासयादिवयागिनी॥ पद्मिनीसर्वकालशुभमहामूढाप्रदास्यन्ते॥ एवं मूढा
 शुभसर्वसत्पापकालय॥ एका नरुनवायूनां प्रविष्टं चतुर्मुला नागानलस्वरावासायागिनी चक्रविरुका॥ वज्रगुह्यस्तिता नानी अच्युतं सर्वध
 रुकी॥ मूर्तीकानागरुद्वानां सो कलासेखरागिकी॥ एकेकस्य शुचिरुस्य षड्विंशत्याशुकात्मकी॥ कायिकं नृपकं नैव कुरुकादिशुभपेकी॥ स

मालिखत॥ नारिम॥ ध्वजवर्धनवसप्रकाशं विकल्पययत्॥ पंचाकारिकासुतं च समनसं सर्वकानयन॥ स्वधर्मकूदहनादि सर्व
 मासायनो निव॥ कालनसखविरुननापनं नागवर्जिनो॥ साधनं पनमात्मानं समुकीकृतं धीयुन॥ ध्वजमूढासदारं वृद्धि
 स्वनेव कानयन॥ आमरुथयुग किन्या वलिमूढावयागिन॥ दृष्ट्या प्रमृजुलीगुन्दी खलु मध्वसूची गुष्टवर्ज॥ दृष्टं संपर्षी असी
 द्युयतां चललाटद॥ आवर्णवर्णशमयनि आकाशपादाद्यं दृष्टि मरुना॥ कुरु कुरु नमो भूतानां नृकानां दक्षदक्षदक्षदि
 ग्लोकसु विनेयागिन्या कर्षितदयमूढावलिं दानया वासदक्षिणया गुरु॥ वासदक्षिणया पादित्यी शुभकं जाकिनी सखी॥ वलिक
 र्मपुव आसि वलिकुत्तयथा विधिं मधुली हास जापच प्रणिष्टा धर्मिक प्रष्टिका॥ व॥ ध्वजानमानवर्धन वरुणय क्रिषि साधयत्॥ पी०
 साधनकालं सुसर्वकर्म प्रचारुमी॥ जूलिवलि विना कर्म भिद्यं सिद्धिं न जायते॥ वली कनन जायते पूर्ववृद्धनराधिनी पथमंदव

१३३

काकारं द्विजुं संव नयागवाना॥ वक्राद्यनसं वक्रकं काननादनादिर्न॥ वक्रुर्ध्विंशतिस्तु न नमनी प्रनाशु वध॥ मठिका कालय
 गनमठिका कानमूढवरु॥ मठिका कानसर्वधमठिका मरु मूढवरु॥ पथमं तावदुक्तु राश्यादिकं पुनरुसंस्तुया वि॥ धयत्
 । कुरु पुनरुसंस्तुया काननावाये मधुली कुरुपनिर्लका प्रभमि मधुली॥ कुरु मुरु आकाशजं मधुगिरि कुरु वलि कं नृप पन्नराजनी
 कुरु ध्वजकादिकं॥ उं आं गुं खं हं॥ लो मां पां गो॥ वं कानना कदि गिष्टं पञ्चमरुपदी पनृपदी निष्ठा यवायु प्रविता गिता पविती नवी
 जाकनादिक मरु निन वरु नरु न स नृयं प॥ ध्वज॥ कस्यापि विवादादृष्टा वरु हं कानना ध्वजमरु मरु यं ध्वजवर्धन गविली नम वला कुरु
 समनसीरु र्प॥ ध्वज॥ जूलिका लिपि विना को॥ उं आं हं कानना नृप निरुता न॥ कुरु मधुल वक्रु दवता सुल्लिता रि॥ जगदर्थं कृत्या समा
 पन्नं पूर्वकं दवीरु यथा प० कुरु वीरु प्रणिष्टा मरु कन वयावदि कुरु न धिष्टिका कृत्या गुन्दी खलु वध्वसूची॥ जूलि वजा दृष्टं

प्रयागसंस्तुत्य मन्त्राललाटदह। आवर्त्तवर्त्तनं जामयत। आकाशपादाद्देष्टुं कुम्भोक्तुं काननादिगु। दहादिगंस्त्रिंशतीनवीनायागि
 न्याकर्षिनी। यदाकृत्य नश्वामदक्रिषया धिखीं शुभकं जकिनी जालसत्सर्वं समयस्त्वसमयः। ३ वामदक्रिषा वर्त्तनं जामयत। पूज
 पूजक पूजा वामरुदादिमाकृपूनकौ कुरुयद्वरायूर्ध्वं ॐ द्यादिसपनिवानानाकर्षयजुः। ३ उरु नक्षत्र सपनिवानानाकर्षयजुः।
 पश्चिमवन्धसपनिवानानाकर्षयजुः। दक्रिषयमेसपनिवानानाकर्षयजुः। ॐ ह्रीं नमहा रुरु सपनिवानानाकर्षयजुः। अग्न
 यजुग्निसपनिवानानाकर्षयजुः। नेमस्य नाकृ सपनिवानानाकर्षयजुः। वायव्य वायुद्वरा सपनिवानानाकर्षयजुः। उर्ध्ववन्द्य
 सूर्यवक्त्रायाद्वरा सपनिवानानाकर्षयजुः। रुमथमविशी अर्धः पृथिविद्वरा सपनिवानानाकर्षयजुः। ह्रैवैहाः। सूर्यफासर्वद्व
 नासाधकस्य ॥ किंयुष्टिं कृन्सर्वकार्यं सुसिद्धिं रुवकुयथासुखी ॥ आनकिहाः ३ उरु ह्रैवैहाः ३ वज्रजकिन्या समयस्त्वह्रैवैहाः ३ वज्रजकि

१३१

न्यसमयस्त्वह्रैवैहाः ३ वज्रजल्ला उर्ध्वविकवावलिंदयात्रिः ॥ ३ क ॥ ॐ खखखाहि २ सर्वयक्रु नाकृ सत्सर्वपिठ ॥ १ ॥ मादानपस्मानजः
 कजकिन्यादय ॐ मन्त्रलिङ्गकृत्सर्वसिद्धिं मप्रयद्वय ॥ थसुं हं जतपिवथमातिकमथममसर्वाकालकया सत्सर्वविशुद्धयममम
 हायकारुवरुहं २ रुद्रस्वाहा ॥ मरुपवराहायावरु नवकुम्भकश्चिद्वरा ॥ प्रातिवज्रविष्टिन्नकिमयाननूजं सुखी ॥ वलिहाजुर्वीनाधी
 यागिनीनां रुथेववागुन्मुखानिकार्यादिमहावक्त्रे प्रयागरुशयं यं यागिनिनामवीनाधी चरुथेवव ॥ रुकुंटी कयत्ता संचमदनं म
 हासोख्यदीयगावजं कुकुर्याहिनथवामकिनयूगा ॥ आसनं वाघुवर्मन् नववर्मन् वृहाजनं ॥ महापाशं गुपानधूमकिनलो विहंकनशया
 गिनीपावसीरुयंकुमानिकारुथापिवा ॥ यागिनीचक्रुर्वीनाधी पाशं कुमानकं रुवि ॥ पञ्चमाला मकुटं वगन्धनामोहिधं तथा ॥ गायनं नृपनं
 वार्शवाउवादिस्तुकाकिला ॥ वलिहाधुनिसर्वादिमक्रिषापूर्वकादिहाः ॥ स्तुपयच्चमनं सर्वानूजां राधुनिरुगु ॥ पूजपूजनपूजावपू

१३८

[illegible]

१३५

सर्वं॥ प्रह्लादात्मकायागीसर्वकर्मादिमिच्छाति॥ सेवाधिविरुद्धं कुर्यात्तथापि विनामयत्॥ दिवसदिवसगुप्तं प्राप्य मासिकं वत्सकं तथा
॥ संपूज्य सर्वजगतां मनान् तथा पर्वसर्वशदानादिना॥ पिष्ट्वा सर्वविकल्पमाह कनधी जाकिनीरुन्कादिना॥ यच्च कं पवित्रं रुंजिनगुणोमा
नादयं माकूटं॥ कस्यायस्य कृपा तु न हस्य महानित्यं रुंजीयसे॥ ॐ ह्यारुगवान्स्वामी वज्रजाकी तथा गरुडसर्ववीरश्च वीर्यागाद्वज्र
सत्त्वसत्त्वाकर्त॥ ॥ ॐ मिश्रीवज्रवाहाहिकल्पमहा गरुडाजं वल्गुपहानवक्रयूजाविधिनिर्द्दंष्ट्राणिं गरुडमष्टपटल॥ ॥ ० ॥
अथाननकनैव श्रामि बज्रवाहाहि साधनैः पूजां कृत्वा महादेवीं गृध्रयक्रन्दगुम्फका॥ प्राकृत्यययागीमुखसोवादि कं कृत्वा समयगुणिकैः
स्वैः प्रक्रियगिनिगक्रनादिमनानमस्तु न विश्ववज्रसनासी नक्षत्रालिकालिं वानजयमृशार्थं अहं वज्रवाहाही ह्यारुगदाका वज्रगत्सः
र्वकविष्यामि निवृत्तनिश्चयः॥ सहस्रं कुर्यात्तु न कर्तव्यं कर्तव्यं पश्यत्॥ गदीयवक्रवर्गमिति ४ पलया न लब्धं सहस्रकनिष्ठं पुनः न वलिः

नी। वरुवा नाही वरुमा धनु जायधी॥ गुन वरुवा धिसवा अनीयका (ध) युन नमस्ते यद्दुग्धिमि विनिर्जन पूजा लिसे युक्तव॥ नदग्रु
 १ पायदहा नीयुष्मन्मादनायुष्मन्निधामनालिगेवधगमनवाधिविहायादादिकंकृत्वा॥ वरुवृक्ष विहानी विहाय॥ ननरुगु
 यगाहून वरुस्वरावात्मकाही सर्वधर्मा ४ ओं हुनगाहून वरुस्वरावात्मकाहूँ॥ हुंति मरुती मरुतार्थमा मूर्खी कर्त्तुं न॥ मरुतु मप्रमि
 स्तिरु नृपधमिष्ठु॥ पूर्वपक्षिधनवगात्ममाधयुत्तय॥ आकाशयैवं वलंपविनगानिधनूत्तिका (ध) वरुवचवुनप्रातिहनिर्तनी
 लनक (ध) गानिवरुमहाहमधुलानिउयर्थपविपस्थरु॥ नदपनिर्माका र्त्तैर्ये मभवं वरुमर्त्तवदुनत्वमयं मृदुर्ग (ध) प (ध) लि
 र्गविविक्ता नदुगवि। ओं मदिनी वरुव वरुव वरुव॥ ओं वरुवा को वरुव वरुव॥ ओं वरुपेजलरुपेहूँ॥ ओं वरुवितानरुव वरुव॥ ओं वरुव नजालगो
 र्गो॥ ओं वरुव जालानला कोरु॥ ३॥ चरुमर्त्तु वरुवमादि पद्वि विधाय नदय नन वरुव नप्रादि सर्वलक्षणसंयुक्तं कृत्वा गवै विविक्त्य। नमः

१४०

(ध) नकं येका वरुमसूदल पत्रं वरुवठ आलिकालि पविधन वरुवसूर्यसंयुटम (ध) नक वरुवा कर्त्तुं नन कर्त्तुं वरुवा नपकृति पहास्वर्नप (ध) धरु॥ १॥
 सर्वपनिधमममात्मानं रगवती वरुवा नाही जतिमी कूम मप्रव्या र्त्त॥ विरुजां दकि (ध) वरुव र्त्तुनी का कनी। वामधक नाटक खरुंग धनी। १॥ का
 ननीति नगी मूक कक्षां घघ्नी दिगी वनी। पत्ररुनात्मिको सहजानन्दस्वरायी। पणाली टपदाका करे वव काल नातिकी माद मृदुमाला लंकु
 गगनी सुव नृधिनी पिवनी रावयक॥ तथा पूर्वदि वरुव लपयया कर्म वामा वरुव नजकिनी ला माखधु नाह नृपिणी। कृष्णधाम नका (ध) गगनी १॥
 कवकु ४ वरुवुजा १ वामखर्ग केपाल हस्का १ दकि (ध) उम नृ कर्त्तुं का १ जिनगामूक कक्षा १ नगा १ आली रासनसंस्ति १ पत्र १ मडा विरुपिनी
 रावयक॥ विदिग्यलप॥ वरा विवाधिविहादियुष्मन्नि कपालानि विरुयक॥ नदनरुगवती हृदी जविनिर्जन वरिमहि १ ज १ कावध हान वरु
 मानिया ओं कावध स्वसमय वरुजलजलमिव प्रवध वर्तकाल नवधनी। हा १ कावध राखरी कूर्याक॥ नन १ र्त्तु वरुव १ हां ह कासे नायक नानि (ध)

धयन् ॥ पदवने सुधर्मपदे रुगवती कवचयन् ॥ ओं वं ना हो ॥ हो यां हृदि ॥ जी मां वक्तु ॥ ॐ जी मूर्ति ॥ हं हं सिखायां ॥ रुद्र २ सर्वा ॥ अथ सु ॥ रुद्र २ रुगवती
कायवाक्त्रिपथ ॥ ॐ आ १ हं ॥ ॐ पयन् ॥ अना नखिनाम कुंज पन् ॥ रुद्र मकु १ ॐ वं वज्र वे वा चनीय हं हं रुद्र स्वाहा ॥ त्रिसेध्वं वलि पूर्वकं रुगवती
कावयन् ॥ विन हं रुगवती नृपय सर्वदा विह नदिनि ॥ कृमनि दहन दक्षी च सुदा वी अथ क्री विप्र रुद्र जन ना ॥ हो हं लथा या रुमा की ॥ पुस मसख म
मृदा वज्र वा ना हि दवी लिखय निचय चय मस्या का कद ला हि नत्वा ॥ रुद्रा र्द्ध या मा व ॥ ॐ प्रा यां न रुद्रा विधि ना हि रुद्र १ क विप्र रुद्र मना दो मना नृक
लसु न स चन्द नाय पलिफ ॥ ना ना पृथ प क ना प ॥ ॐ रुद्रा सा रुद्रा वा स न वा यथा सख मस्य वध मे न्या दिता व ना पूर्वकी ॥ स्व हृदि प्र का न रुद्र मय
मसु ल सि रुद्रा १ रुद्रा न रुद्रा मि जाले १ पका शी ॥ रुद्रा वज्र वा ना ही पु मख गु न्या गिनी वा धि स च न था गनी ॥ यथा स्यु न पु न रुद्र सी नी नी रुद्रा र्द्धी रु निग्न
रुप च १ व १ रुद्रा पना वती महाना सा वी न मनी खर्व नी लं क श्व नी रुद्र मयु या विरु च का र्द्धा लि १ रुद्रा वती महाने न वा वा य व गा स ना रुद्रा र्द्ध माय

वीमरुडाहयकक्षरगननावाककाष्टारि॥ चक्रवर्गावधुनाहालोडिनीचक्रवर्म्मिणीसूत्रीनामहाबलावक्रवर्हिनीमहावीर्याकायचक्र
ष्टारि॥ नीलवक्राशिरवर्म्मिणी॥ अक्रास्यामिनाहिरवेनाचनसिनाधनाहिर॥ चक्रासननिनययचक्रमृदाधनाहिर॥ वरुपप्रचक्रकपालवद्धिः
शिखालंकृकशिनाहिर॥ कर्त्तृकपालरवर्द्धीगान्वितं॥ पूजाव्ययकनपञ्चवर्त्ति॥ अर्वादिपुनश्मनंयूजयिखावन्दनापापदहना॥ अकनधर्मव
नयूष्मानुमादनाहिर॥ वरागमनवाधिविहाराद्यादनमार्गाभयदाआत्मरावनिर्वातनाअर्धवर्मायाचनाविधिवद्धिधाय॥ पूर्य्यपनिधाम्यशु
न्यतासूपनिपरुथमिनसिसंपूर्णजलिंदृक्तागथापाथपूर्य्यकंनथागतानर्धवर्मा॥ नय्यंगथा॥ ओंसर्वसत्त्वानांसर्वसिद्धयश्मंपश्य
तांसर्वनथागतान्धधिमिष्ट॥ ओंस्वरावधुद्याश्मर्वधर्माश्मस्वरावधुद्याहमिमि॥ तदनेकनय्यपूजापूजकासर्वधर्माश्मशुन्यानिमिष्टा
पुसिहिरा॥ कालनखपुत्रयस्वत्वात्मवशमधिमृत्ना॥ रुन्मकुकिनराजालननाहामीकृत्य॥ ओंशुन्यतासूनवजस्वरावात्मकाहमित्यहं॥

कानां कुर्यात्। ननु स्वचिह्ननकं यं काननूपयपविनिश्चयैरुत्तयविहस्यनकपप्रापविर्जकानां भवदिदधवलौ। नकवर्कुनरि नगीं
 यदृक्क कनालवदनाना कसमविनाजि नमककभा र्धचनुविनाजिनी। ककवजावलिहयमध्या कक कया लमाला वद्य शिषि रवी
 ॥ वकी ककुल कथी नूचकमखलालं कुर्यां विलसकुरिय ताका कलसव्यकनपन्नवस्तिता ४ पूर्वा कवर्जभा काननयनूपयस्य रुयास
 विधायिनी ॥ अथ सद्य नाधन ककुका र्धचनुविनाजिनी नदृष्टा नूगनगुक्कसा दशिना विधवक कनककलशमूल विनिर्जननवधस
 अघधिकानि विधयताका विनाजि नवा दृष्टा नूगनगुक्कसा दशिना विधवक कनककलशमूल विनिर्जननवधस
 गुरुनयं वासगिना मालापलचिनी। नकयप्रापविनिश्चयैरुत्तयविहस्यनकपप्रापविर्जकानां भवदिदधवलौ। नकवर्कुनरि नगीं
 नी। पतिविस्वसमीं गलादिनशापनी। नाना निचोलेदेहादि कुरुगदर्थयनी। सूर्यस्वकीं कानास्ति सूर्यस्ववज्रहृदयी वज्रवा

१४२

बाही मास्मानेभ्याम् ॥ ननु स्वचिह्ननकं यं काननूपयपविनिश्चयैरुत्तयविहस्यनकपप्रापविर्जकानां भवदिदधवलौ। नकवर्कुनरि नगीं
 नदनस्वनालो विधयताका विनाजिनी नदृष्टा नूगनगुक्कसा दशिना विधवक कनककलशमूल विनिर्जननवधस
 अथ वद्वगधगुधमकु यधिवन्दनालिपिधाम कलादिपुत्रा विमाद्यापना रि विवन्नपविस किस्ववयी सर्वा काननदहनामिकां ध्याय
 क॥ नका डडी कनमिसंवादि रगगधस्य काननदवीयूनका दृष्टा पूर्वा कदवी मधेनर्घादियून ४ सनैयूज यिवा र्धं काननमकुपा ० पूर्वकं कान
 लोमदाम्बुलला टवामा वरुनगमथक। ननु कलाली रावा नमकु हं काननकुर्यात् ॥ ननु यमकु ४। अंथा गगुद्या ४ सर्वधर्मा ४ याग
 गुह्यं ॥ ननु स्वचिह्ननकं यं काननूपयपविनिश्चयैरुत्तयविहस्यनकपप्रापविर्जकानां भवदिदधवलौ। नकवर्कुनरि नगीं
 र्धदीखमृदंगपधववीधवधुगी कधनिरि ४। दवास्वने चजा जालकानपनाय ४। कुरुमं कुरुनक सुनी सगाधिकसमपवर्धिरि ४। यथा

723

[illegible]

۱۸۸

[illegible]

१८५

॥ दक्षिण राजपुत्रविजयजगन्निष्कृतिमहानिवज्जवाहमहायागिनी कामध्वनिखले गयथा ॥ पाक ॥ १ रुन २ पादा किंकिदिखिनिधन
 २ वज्रहस्त ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

वापवानधदाक्या॥यस्यकस्यचिन्नकथनीयवज्रयागिन्याधिनिकृतिर्नानावर्णायशापीवज्रवावाहीकल्पसर्वार्थसाधक॥पंकानपनिधर्न
 नर्कपपंकस्यापनिर्यकानपनिधर्नवायुमधुर्न॥कृष्णधन्वाज्जनध्वजाकनरूपविधर्ननर्कशिकोर्ध्वमृगिमधुर्नकालाकै॥वैरुवज्रपम
 धुर्नध्वनवर्णवर्णुर्नयध्वकै॥लंकानर्जपृथिवीमधुर्नचक्रनर्जहनिर्न॥सैकानर्जवर्णसमर्नचक्रनर्जवर्णुर्नमृष्टगोपध्वनिर्न॥नम
 ध्वपंकानपनिधर्नपपंकस्यापनिधर्नसैरुर्वविश्ववर्जकचक्रकमालिकानिधार्गकमध्वकर्वकानपनिधर्नवर्णुर्नन्यविधर्नवज्रवावाही
 नर्काशिनर्जमृकाकक्षनर्जखद्युमधुर्नमखलीधर्मासादननर्जिनमालाप्रलम्बिनी॥वामकुञ्जकपावर्ण्डसुमालायसुध्वरी॥दक्षिणकर्ज
 यकीदिक्षसर्वइष्टकर्जनीवज्रकीकन्यवीक्षिसहकर्जावकिन्ध्विनप्रियाउर्ध्वपादस्थिनीरावयन्॥पद्मस्यपूर्वादिपञ्चजकिनीकुम्भामा
 खद्युनाहकुम्भपिनी॥विदिग्यकुम्भामावाकशादयश्चान॥रुना॥मर्तुवाग॥ओमसर्ववृद्धजकिनीयवज्रवर्णनीयहंरुद्रमाहा॥ओं

१४१

ध्यानवज्रपी०विनिर्जगदुर्ध्वपादवज्रवावाहीसाधनमिति॥ॐसाहस्रगवावागीवज्रजकीकथागन॥सर्वयागिनीवीनध॥वज्रसत्त्वपर्वतूर्व
 ॥ॐतिथीवज्रवावाहिकल्पमहागुरुनाहमरुसाधनध्याननिर्दधविधिचक्रुर्ध्वपादलश॥॥अथन्यनर्मसैवज्रवज्रवावाहिसा
 धनीप्रथमंतावद्यागीधमभातादोमनात्रम॥सुनस्वहृदिनिरोअंकावकिनलोत्सह॥गुर्वृद्धवाधिसत्त्वाननीययूनकाकथा॥मूर्तलंयपूजाकृत्वापाप
 दशनमादिक॥कृत्वापापदशनमादिकीकृत्वाखसममरुमुग्धेधुर्कविविक्तगहंरुवर्जीकुरुमोश्चक्ष्मनाष्टकमध्वम॥उदयाकर्गरूपन
 वनचक्रवैदष्टनविशामर्मसूर्यसैयुटैवैकानवज्रनसम॥वीर्जंनसमूहवाद्यवीरुगवत्यावज्रवावाहीप्रलयानलमर्निनी॥उकवकुक्षिकु
 र्जदक्षिणकर्जयकीदिक्षी॥सर्वइष्टकर्जनीवज्रकी॥वामकपालखद्युध्वरीरेवनकालनाष्टाकार्कपद्यालीठनगाधुवादिग्वसीमृकाकक्ष
 खद्युमधुर्नमखलीध्वकलालवदनीशिनर्जविकृतानर्न॥विश्ववज्रधनीमूर्ध्ववज्रमालाकपालध्वनिना॥मधुसुग्दामदहारुयध्वनीका

नरुषिका॥ सर्वांगी सर्ववृद्धा विषवर्जो वेवावनकृपाकृपा॥ सर्वसिद्धिप्रदायिकं सूत्रं सैवा न विग्रही॥ पूजास्तु त्वमृदात्वा दं कृत्वा यागी समाहितः॥ साद
नं रावयन्निर्त्यलघुवृद्धत्वमाप्नुयान्॥ रावनां कृत्वा न्यासं कुर्याद्वर्लिंदयागवित्॥ ओं वैकुण्ठावाही नमो॥ हां यां यामिनी हृदि॥ ह्रीं मां माहनी वक्त्रे॥ ह्रीं
सैवान्दीमिव सि॥ इहं सकृद्विनीसिखायी॥ रुद्रं वशुका सर्वां (न च्छेदं)॥ नमो हृदि तथा वक्त्रे शिखिना सुमवचा कृत्वा गगनात् खलूमध्वसूची
मृगुष्टवज्रो दृष्टं प्रपीय॥ सैव यममध्वललाटदं (हं) आवर्ण्य वर्कनविग्रामयन्॥ आकाशादाद्यं दृष्टिस्तु मूर्ध्ना हं काननादकं॥ दशदिशो कंधागु
हो वीनया गिन्या कर्षयन्॥ ओं या गधुष्टाश्च सर्वधर्मा या गधुष्टा हं॥ ओं मूलशिखां रुद्रं वं हं॥ वज्रजकिंच समयस्वी दृष्ट्वा हा वज्रां जलपादुविक्रवां वर्लिंद
यान्ति॥ हं का॥ ओं स्वस्वस्वो हि २ सर्वयक्रनाशकं प्रणमि॥ (अ) मादापमानजकिन्नादय ३० देवलिङ्गं कुरु समयं न कुरु मम सिद्धिं प्रयच्छ कुरु यत्ने
वयं (थ) र्दुर्जयपिवथ मातृकमथ मम सर्वाकां न सत्सर्वविशुद्धय सहायकारव कुरु हं हं हं हं हं हं हं॥ वलिमकुरु॥ ओं वज्रवेवावनीय स्वाहा॥ हृदय

[illegible]

विनयी विष्टवर्धनी॥ वज्रमालाकयानमूर्धनी॥ मधुसूदनामदह॥ मर्वालीकान॥ रिती॥ सर्वद्वारादिधकी देशवनकुलारुवा॥ सर्वमिष्टिप्र
 यकीरुनसं हानविग्रही॥ पूजासुनि॥ मृमृरुखादनंरुखायागीयागपनायदाशासादरंकावयत्रित्यंनयवदुखमात्रयाग॥ कावनयाखिनाम
 नृजयत॥ अंवरुवेनाचनीयसाहा॥ मृगपदश॥ स्वनातिकमलापविनामसंपूटाकर्जकमृमृलनर्वाकावननर्मिंधायाकुरुधैकीप्रकास्व
 नरुयानविलसखभाकयनयनीपस्थदिहि॥ वानाकुरुकपादेद्वीचक्रस्यरावनाकथिता॥ सपिशुसकलंरुखरुवजायागिनीनकुल॥ नरु
 मिरुहानकीदृष्टगुनकुलिगधनंपुर्तु॥ पूजयद्वयदीमानक्रास्यपुकिनुषक॥ स्ववीर्जहदयध्वात्राएजीमघप्रकल्पयतु॥ मृष्टारिमाहकिर्नृत्पी
 वामरुथागनश॥ गोर्थाशा॥ पंचयागिन्य॥ पंचामरुधनामृता॥ रावनीचकुलिआचीनमउमविलिंगनेरुका॥ मृष्टदर्वयत्रित्यंनयवदुखमात्रयाग
 न॥ विनयवानदीयायाका॥ विरुविरुलिंवा॥ पथर्मंधायामेगीरुदनुकनृधौविरावयतु॥ पुनत्रपिमृदिनींधायाइयक्रीमर्ध॥ मधक॥ नदनृजि

१४२

नमरुपयतु॥ शुभनालूनवज्रखाकावासकाहंसपरिविरावाधुन्यप्रिधनमनूस्मयथागी॥ प्ररुधसूर्यपुनकाविरावयकस्मिन्नवीहंरुवविष्ट
 वज्र॥ कनेववर्धविवावयकृपाकानकंपंजलंवधनंवरुधभाविद्वयदीमायुल्लमकाननृपिधी॥ कस्मिन्विवावययथीचकुनमूर्तिहनीक
 की॥ पृथ्वीमधुलमध्वसंनोमधुलीविवावयतु॥ मृष्टरुजयनर्ध्यायादलोचमनूमधुली॥ मनूमधुलमध्वसंनोमधुलीविवावयतु॥ मिथी
 रूयलवचकंपवकावधवात्मना॥ चकुकादीचकुदीनंमृष्टरुजयनर्ध्यायादलोचमनूमधुली॥ मनूमधुलमध्वसंनोमधुलीविवावयतु॥ मिथी
 दहाविवावयतु॥ यागिनीनांककृतादं॥ दासनं पंचदहोमरुधनामृता॥ रावनीचकुलिआचीनमउमविलिंगनेरुका॥ मृष्टदर्वयत्रित्यंनयवदुखमात्रयाग
 न॥ मृष्टारिमाहकिर्नृत्पी॥ मृष्टदर्वयत्रित्यंनयवदुखमात्रयाग
 दहंयागिनीनंपकीर्तिगा॥ चकुकादीचकुदीनंमृष्टरुजयनर्ध्यायादलोचमनूमधुली॥ मनूमधुलमध्वसंनोमधुलीविवावयतु॥ मिथी
 दहंयागिनीनंपकीर्तिगा॥ चकुकादीचकुदीनंमृष्टरुजयनर्ध्यायादलोचमनूमधुली॥ मनूमधुलमध्वसंनोमधुलीविवावयतु॥ मिथी

१३०

सुमारुहिशयश्चदनूनाथानाम्बिम्बधीकरुगवत्सुमदात्मन्॥ रुगवत्कामर्ष्यैरेगतारिषकपदमाददत्तु॥ रुगपश्चादमृतहृक्कृत्कृद्वेनर्लिषि
 व्यागसर्वयसर्वसर्वद्वेशविरुसंमूकदारुवत्॥ पथमंरावयत्कृष्णद्विद्विरीयनकीविरावयत्॥ रुगीयरावयत्सीतावत्तुर्थहनिर्नरथा॥ पंचम
 नीलवर्षरावयत्तुःकदहिकी॥ षष्ठंरावयत्तुःगीपश्चाद्वर्षविवर्जितं॥ नृपस्कंधरुवद्वज्रागोत्रीवदनायांस्मृता॥ सैक्ययात्रात्रियागिनीसैक्का
 मवजयागिनी॥ विह्वानस्कंधनृपधर्मिकावात्राहियागिनी॥ मधुलगासिताकीमारुहयस्यापिहयंकनी॥ पृथ्वावपूकसीत्वाताम्रघ्रातुःशवनीः
 मकाशरुजश्चुलिनीरूयावायुशम्बिषकीर्लित्ता॥ नृपगोत्रीसमाख्याता॥ दशवीपकीर्लित्ता॥ शवर्हलीगंधविषयनसचयस्मनीरथा॥ अर्धहृवः
 नीत्वातावदनीधर्मधोतुचासदाकामांविशुद्धावेसिद्धकरुचयागिनशवदूषामाहवर्जी॥ क१४याद्वषवजिका॥ प्रा१धमासूर्यकी॥ रवातावकु
 यनागवजिका॥ शस्य१००ी॥ र्यावजीवमनावात्राहियागिनी॥ कवमरिमहागुच्छा॥ रुद्रियानीविशुद्धयाननमासंधर्नमूर्धुकर्लिका॥ मानदुदनी॥

कयालक्ष्म मरुधुन कृधस्थाय निवासनी ॥ गुर्वार्थार्थदवमन मनार्थचक्रिकाधृता ॥ इरुयस्याववधाय मुवावधवस्यवा कृधुर्लववधयाः
 धार्थमरुधुन कृधस्थाय निवासनी ॥ गुर्वार्थार्थदवमन मनार्थचक्रिकाधृता ॥ इरुयस्याववधाय मुवावधवस्यवा कृधुर्लववधयाः
 धार्थमरुधुन कृधस्थाय निवासनी ॥ गुर्वार्थार्थदवमन मनार्थचक्रिकाधृता ॥ इरुयस्याववधाय मुवावधवस्यवा कृधुर्लववधयाः
 धार्थमरुधुन कृधस्थाय निवासनी ॥ गुर्वार्थार्थदवमन मनार्थचक्रिकाधृता ॥ इरुयस्याववधाय मुवावधवस्यवा कृधुर्लववधयाः
 धार्थमरुधुन कृधस्थाय निवासनी ॥ गुर्वार्थार्थदवमन मनार्थचक्रिकाधृता ॥ इरुयस्याववधाय मुवावधवस्यवा कृधुर्लववधयाः
 धार्थमरुधुन कृधस्थाय निवासनी ॥ गुर्वार्थार्थदवमन मनार्थचक्रिकाधृता ॥ इरुयस्याववधाय मुवावधवस्यवा कृधुर्लववधयाः
 धार्थमरुधुन कृधस्थाय निवासनी ॥ गुर्वार्थार्थदवमन मनार्थचक्रिकाधृता ॥ इरुयस्याववधाय मुवावधवस्यवा कृधुर्लववधयाः
 धार्थमरुधुन कृधस्थाय निवासनी ॥ गुर्वार्थार्थदवमन मनार्थचक्रिकाधृता ॥ इरुयस्याववधाय मुवावधवस्यवा कृधुर्लववधयाः
 धार्थमरुधुन कृधस्थाय निवासनी ॥ गुर्वार्थार्थदवमन मनार्थचक्रिकाधृता ॥ इरुयस्याववधाय मुवावधवस्यवा कृधुर्लववधयाः
 धार्थमरुधुन कृधस्थाय निवासनी ॥ गुर्वार्थार्थदवमन मनार्थचक्रिकाधृता ॥ इरुयस्याववधाय मुवावधवस्यवा कृधुर्लववधयाः

१५१

धवस्थनिवर्तया गनवाधिविहंसहेवडु ॥ कस्मात्काययुया नायाललनानमना वधूरुया ॥ कायवाक्रिरु नृपधम्वनी ॥ कर्त्तुमूडका ॥ ललनापह
 स्वमवननसनापयसीसुता ॥ अवधूनीमध्वदरायुमहासुखधननृपिदी ॥ अकृतावहाललनानमना नकपवाहिनी ॥ अवधूतिमृमिकना
 थस्याधवराविनीसदा ॥ कर्ममूडामरवावर्त्तया ॥ यशस्वरावकशसवक्रिकायवाक्रिरु ॥ वज्रनत्ताज्जुमिनं ॥ मूडकानसुवजस्यवमन
 नत्तधाविदा ॥ अरिसर्वद्वनृपधमिकनाथस्यकथन ॥ सदेवात्ययगुह्यनमर्कवावासनपिवा ॥ सहजं पवनमोखीपिशवपिसुखावहं ॥ यथा
 निशायोहिनकि कश्चिद्वस्योमित्रदपिरदिपकर्मसापयष्टिकर्तुमनूमवत्ताहाधकात्रधसुखं तथास्यान ॥ ह्लातेवैरुवसागवीविषजुर्लमा
 गादिनका कूर्लगीनीनावहनीलनाविघटिर्गहायेकनीर्नमहन् ॥ कस्माद्वाविथाऊनाकृधमपिस्वायेकनिशुशना ॥ पावैयाकिनमाहयासव
 सनेस्यक्रामनास्यसुहृ ॥ उयलिकमहावनापथमनशकृथोत्तधीसास्वतामूडामरुविशुद्धिमारुकववसर्धवैविस्मन ॥ पथाइकर्वावि

१५७

[illegible]

१५३

[illegible]

सम्बन्ध ११ निमित्तेशु कर्पवमीषून् सिद्धयकाशना॥

यथादृष्टं तथा लिखितं लखकानां लिख्यार्थं यदि शुद्धमगुह्यं वा रक्षणीयं मरुद्वेषः॥

॥ गुरु ॥ ह्यासुसर्वजगती ॥ ० ॥

१५४

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

DH
396

